जर्मनी की लोक कथाऐं

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Germany Ki Lok Kathayen (Folktales of Germany)
Cover Page picture: Berlin Wall
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Germany

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

जर्मनी की लोक कथाऐं 7

1 बूढ़ी माँ 9

2 भालू की खाल 11

3 डाक्टर नोऔल 23

4 मौत के दूत 28

5 शैतान और उसकी दादी 32

6 राक्षस और दर्जी 40

7 बूढ़ा सुलतान 44

8 स्वर्ग में किसान 49

9 जंगल में झोंपड़ी 51

10 रैपन्ज़िल 62

11 राजा का बेटा जो किसी से नहीं डरता था 70

12 अक्लमन्द नौकर 81

13 आलसी हैरी 83

14 ग्रिफ़िन 89

15 आलसी कातने वाली 104

16 राजा थ्रशबीयर्ड 109

17 सुनहरी बतख 119

18 किसान की होशियार बेटी 129

19 तीन सुनहरे बाल वाला शैतान 137

20 मेंढक राजकुमार 152

21 मेंढक और राजकुमारी 161

22 बीन्स एक तरफ से फटी हुई क्यों 167

23 दलिये का बर्तन 172

24 इच्छाऐं पूरी करने वाली खाल 178

25 बतख लड़की 188

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

जर्मनी की लोक कथाऐं

एक समय था जब इंगलैंड के राज्य में सूरज नहीं डूबता था। इतना बड़ा था उसका राज्य। सारी दुनियॉ में उसकी कोलोनीज़ फैली पड़ी थीं। अब क्योंकि बहुत सारे देश उसकी कोलोनीज़ थीं तो उन सब देशों में अंग्रेज़ी पढ़ायी जाती थी और उनका साहित्य पढ़ाया जाता था। कहानियों में उनकी लोक कथाऐं और साहित्य में उनकी कविताऐं पढ़ायी जाती थीं।

शुरू शुरू में यूरोप की लोक कथाओं का एक संग्रह ग्रिम ब्रदर्स ने प्रकाशित किया था। इस संग्रह में अधिकतर इंगलैंड जर्मनी फ्रांस आदि देशों की लोक कथाऐं थीं। सो उस समय अंग्रेज़ों की कोलोनीज़ के बच्चों को यही कथाऐं पढ़ायी जाती थीं हालॉकि बाद में फिर और भी संग्रह प्रकाशित हुए। पर फिर तब तक क्योंकि उनकी वे कोलोनीज़ आज़ाद होने लगी थीं उस साहित्य का असर उन देशों से हटता चला गया और उनकी जगह उनके अपने साहित्य ने ले ली। पर फिर भी अभी भी जहॉ उनकी तरह के स्कूल चल रहे हैं वहॉ अभी भी उन्हीं की लोक कथाऐं और कविताऐं पढ़ायी और सिखायी जाती हैं।

हालॉकि अब इस प्रकार के स्कूल बहुत कम हो गये हैं और उनका स्थान स्थानीय स्कूलों ने ले लिया है फिर भी अंग्रेजी एक ऐसी भाषा है जो इंगलैंड की कोलोनीज़ वाले और अमेरिका आने वाले बच्चे जरूर ही सीखते हैं। इसके लिये उनको उन अंग्रेजी स्कूलों में जाना पड़ता है और वहॉ की इन लोक कथाओं और कविताओं को भी पढ़ना होता है। अब हर बच्चा तो देश से बाहर जाता नहीं तो वह स्थानीय स्कूलों में पढ़ता है इसलिये वह इन लोक कथाओं और कविताओं को पढ़ने से वंचित रह जाता है।

इस तरह से बच्चों के दो समूह बन जाते हैं। एक तो ऐसे बच्चों का समूह जो अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ता है और यूरोप का साहित्य पढ़ता है। दूसरा उन बच्चों का समूह जो स्थानीय स्कूलों में पढ़ता है और वहॉ के साहित्य से वंचित रह जाता है। ऐसे ही बच्चों और लोगों के लिये हम यूरोप के देशों की कुछ लोक कथाऐं हिन्दी में प्रकाशित कर रहे हैं।

"ब्रिटेन की लोक कथाऐं-1", "यूरोप की लोक कथाऐं-1", "जियोर्जिया की लोक कथाऐं", "इटली की लोक कथाऐं" आदि आदि। इस पुस्तक में हम जर्मनी की कुछ लोक कथाऐं दे रहे हैं। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम सबको और लोक कथाओं की तरह से बहुत पसन्द आयेंगी और जर्मनी के बारे में कुछ जानकारी देंगी।

जर्मनी की लोक कथाऐं अंग्रेज़ों रोमन लोगों और नौर्स या स्कैन्डिनैवियन लोगों की लोक कथाओं से बहुत मिलती जुलती हैं क्योंकि तीनों प्रकार की लोक कथाओं का मूल स्थान एक ही है।

जर्मनी की लोक कथाओं के एक बहुत बड़े लेखक हो गये हैं – ग्रिम भाई। ये दो भाई थे और जर्मनी की लोक कथाओं के लिये बहुत प्रसिद्ध हैं इनकी कथाओं का सन्दर्भ दिये बिना जर्मनी की लोक कथाऐं नहीं पढ़ी सुनी जा सकतीं। उनकी बहुत सारी कहानियॉ हमने दूसरी पुस्तकों में भी दी हैं। उनकी कुछ कहानियॉ तो ऐसी हैं जिन्हें पढ़ सुन कर बच्चे बड़े होते हैं जैसे – "सोती हुई सुन्दरी" "सिन्ड्रैला" "रम्पिलस्टिल्टस्किन" "स्नो व्हाइट" "छोटी लाल टोपी वाली" "हैन्सैल और ग्रैटैल" "मेंढक और राजकुमारी" आदि। इस पुस्तक में वहॉ उनकी कुछ और कहानियॉ दी गयी हैं।[1]

---

[1] His most stories may be found on the Web Sites :
http://www.pitt.edu/~dash/grimm089.html ,
https://www.gutenberg.org/files/2591/old/grimm10.pdf

1 बूढ़ी माँ[2]

एक बार की बात है कि एक बुढ़िया एक बहुत बड़े शहर में रहती थी। एक दिन शाम को वह अपने कमरे में अकेली बैठी सोच रही थी कि किस तरह से उसने पहले अपने पति को खोया और फिर अपने दो बच्चे खोये। और उसके बाद अपने सब सम्बन्धियों को खोया।

यही सोच सोच कर वह बहुत दुखी हो रही थी। पर इस दुख में भी उसका सबसे भारी दुख था उसके बच्चों का। इस भारी दुख में वह भगवान को ही दोषी ठहरा रही थी।

वह इस दुख में ही बैठी थी कि उसने सुबह सवेरे की प्रार्थना की घंटियों की आवाज सुनी। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह इसी तरह से अपने दुख का शोक मनाती हुई लालटैन की रोशनी में सारी रात बैठी रही। वह उठी और चर्च चली गयी।

जब वह चर्च पहुँची तो दिन का उजाला फैल चुका था पर वहाँ रोज की तरह से बहुत सारी मोमबत्तियाँ नहीं जल रही थीं इसलिये वहाँ बहुत ही मद्धम रोशनी थी। चर्च में बहुत सारे लोग थे और सब सीटें भरी हुई थीं।

जब वह बुढ़िया अपनी रोज की जगह पर बैठने के लिये गयी तो वह जगह भी खाली नहीं थी। वहाँ कोई पहले से ही आ कर

[2] The Aged Mother. By Brothers Grimm. Taken from : https://fairytalez.com/the-aged-mother/

बैठ गया था। फिर उसने इधर उधर देखा तो देखा कि केवल उसकी जगह ही भरी हुई नहीं थी बल्कि पूरी की पूरी वह बैन्च ही भरी हुई थी और उस पर उसके सब मरे हुए सम्बन्धी अपने पुराने फैशन के कपड़े पहने बैठे हुए थे।

उनके चेहरे पीले थे। वे न बोल रहे थे न गा रहे थे पर पूरे चर्च में फुसफुसाने और हल्के गुनगुनाने की आवाज सुनायी पड़ रही थी। उसकी एक चाची उठ कर खड़ी हुई उसकी तरफ बढ़ी और उस बेचारी बुढ़िया से कहा — "देख। उधर देख। वहॉ पूजा करने की जगह। वहॉ तुझे अपने खोये हुए बेटे दिखायी देंगे।"

यह सुन कर बुढ़िया ने उधर देखा तो देखा कि वहॉ तो उसके दोनों बच्चे थे – एक फॉसी पर चढ़ा हुआ और दूसरा एक पहिये से बॅधा हुआ।

उसकी चाची ने कहा — "वे यहॉ भी ऐसे ही होते अगर आज ज़िन्दा होते अगर भगवान ने उन्हें बचपन में ही अपनी शरण में न ले लिया होता तो।"

बुढ़िया कॉपती हुई घर चली गयी और भगवान के सामने घुटनों के बल बैठती हुई बोली — "हे भगवान आपका बहुत बहुत धन्यवाद कि आपने मेरे ऊपर इतनी दया की जो मेरी समझ से बाहर थी।" इसके तीसरे दिन वह मर गयी।

2 भालू की खाल[3]

एक बार एक नौजवान सिपाही था जिसने बहादुरी के बहुत सारे काम किये थे और जो जब गोलियों की बरसात होती थी तो सबसे आगे रहता था। जब तक लड़ाई चलती रही तब तक सब कुछ ठीक था पर जब शान्ति हो गयी तो अब उसका कोई काम नहीं रहा सो उसे निकाल दिया गया।

कप्तान ने उससे कहा कि वह अब आजाद था और कहीं भी आ जा सकता था तो वह अपने भाइयों के पास चला गया और उनसे कहा कि जब तक दोबारा कोई लड़ाई नहीं छिड़ती है तब तक वे उसे अपने पास रख लें।

उसके भाई लोग दिल के बहुत अच्छे नहीं थे। वे बोले — "अब हम तुम्हारा क्या करें तुम तो हमारे किसी काम के नहीं हो सो अब तुम अपनी जीविका खुद ही कमाओ।"

सिपाही के पास अपनी बन्दूक के अलावा और कुछ भी नहीं था। उसने अपनी बन्दूक अपने कन्धे पर रखी और दुनियॉ में निकल पड़ा।

चलते चलते वह एक बहुत बड़े घास के मैदान में आ निकला जहॉ केवल छोटी छोटी झाड़ियॉ उगी हुई थीं पर वहॉ कुछ पेड़ एक गोले में उगे हुए थे।

[3] Bearskin. By Grimm Brothers. Taken from : https://fairytalez.com/bearskin/

वह उन पेड़ों में से एक पेड़ के नीचे बैठ गया और अपनी किस्मत के बारे मे सोचने लगा। उसने सोचा "मेरे पास कोई पैसा नहीं है। मुझे सिवाय लड़ने के और कोई काम भी नहीं आता। अब क्योंकि शान्ति का समय है तो सरकार को मेरी सेवाओं की भी जरूरत नहीं है। मुझे साफ दिखायी दे रहा है कि मैं तो भूख से मर ही जाऊँगा।"

तभी उसने कुछ सरसराहट की सी आवाज सुनी। उसने अपने चारों तरफ देखा तो अपने सामने एक अजीब से आदमी को खड़े पाया। उसने हरा कोट पहना हुआ था लेकिन उसके पैरों के हिस्से हो रखे थे।

वह बोला — "मुझे मालूम है कि तुम्हें क्या चाहिये। तुम्हारे पास सोना और बहुत सारी चीज़ें होंगी जिनसे तुम और बहुत सारे काम कर सकते हो। पर पहले मुझे मालूम होना चाहिये कि तुम निडर हो ताकि मैं अपना पैसा बेकार के आदमी पर खर्च न करूँ।"

सिपाही हॅस कर बोला — "सिपाही और डर? तुम दोनों में कोई सम्बन्ध कैसे जोड़ सकते हो?"

आदमी बोला — "क्या तुम इसका कोई सबूत दे सकते हो?"

"हॉ हॉ।"

"तो पीछे मुड़ कर देखो।"

सिपाही ने पीछे मुड़ कर देखा तो वहॉ तो एक भालू उसकी तरफ बढ़ा चला आ रहा था।

उसे देख कर वह बोला — "ओहो। मैं तेरी नाक पर गुदगुदी कर दूँगा ताकि तू फिर अपना गुर्राना भूल जाये।" कह कर उसने उसकी नाक पर मारा। इससे वह नीचे गिर पड़ा और फिर कभी नहीं हिला।

अजनबी बोला — "अब मैंने देख लिया है कि तुम्हारे अन्दर साहस की कोई कमी नहीं है पर एक शर्त और है जो तुम्हें पूरी करनी है।"

सिपाही यह जानता था कि उसके सामने कौन खड़ा है इसलिये वह बोला — "अगर वह मेरी मुक्ति में कोई दखल न देती हो तो। पर अगर वह ऐसा करती है तो मेरा उससे कोई मतलब नहीं है।"

हरे कोट पहनने वाला बोला — "यह तुम अपने आप ही देख लेना। अगले सात साल तक न तो तुम नहाओगे। न तुम अपने बालों में और न अपनी दाढ़ी में कंघी करोगे। न तुम अपने नाखून काटोगे। न तुम अपनी प्रार्थना की एक भी लाइन पढ़ोगे। मैं तुम्हें एक कोट और एक शाल दूँगा इन सात सालों में तुम वही पहनोगे।

इन सात सालों में अगर तुम मर गये तो तुम मेरे हो और अगर ज़िन्दा रहे तो फिर तुम आजाद हो और हमेशा अमीर रहोगे।"

सिपाही ने इस स्थिति जिसमें वह पड़ गया था के बारे में सब कुछ सोच कर यह खतरा मोल लेने का विचार किया क्योंकि वह तो अक्सर ही मौत का सामना करता रहता था साप वह उसकी रखी गयी शर्तों को मान गया।

शैतान ने अपना हरा कोट उतारा और सिपाही को दे दिया। फिर वह बोला — "जब भी यह कोट पहन कर तुम इसकी जेब में हाथ डालोगे तब तब तुमको यह पैसों से भरी पूरी मिलेगी।"

फिर उसने भालू की खाल उतारी और सिपाही को देते हुए कहा –"यह तुम्हारा शाल है। आज से तुम इस शाल पर ही सोओगे किसी और बिस्तर पर नहीं। और इस पहनावे के कारण तुम "भालू की खाल वाले"[4] कहलाओगे।"

यह कह कर भालू की खाल वाला वहॉ से गायब हो गया।

सिपाही ने पहले कोट पहना और तुरन्त ही उस कोट की सच्चाई जॉचने के लिये उसने उस कोट की जेब में अपने हाथ डाल दिये। उसने देखा कि जो कुछ शैतान ने कहा था वह तो सच ही था।

उसके बाद उसने भालू की खाल ओढ़ी और मस्ती से दुनियॉ में घूमने चल दिया। अब उसे किसी बात की चिन्ता नहीं थी। पहले साल में उसे यह सब कुछ ठीक सा लगा पर दूसरे साल में वह एक राक्षस सा लगने लगा।

उसका करीब करीब सारा चेहरा बालों से ढक गया था। उसकी दाढ़ी बहुत बढ़ गयी थी। उसे हाथ किसी जानवर के पंजों जैसे लगने लगे थे। उसका चेहरा धूल मिट्टी से इतना भर गया था कि अगर उस धूल में कोई घास भी बोयी जाती तो वह उग आती।

[4] Bearskin

जो भी उसे देखता वह उसे देखते ही भाग जाता पर जहॉ भी वह जाता वह गरीबों को दान देता और उनसे अपने लिये यह प्रार्थना करने के लिये कहता कि वह इन सात सालों में कभी मरे नहीं।

क्योंकि उसके पास बहुत पैसा था और वह सबको अच्छी तरह से देता था तो उसे किसी चीज़ की कोई कमी नहीं थी।

चौथे साल में वह एक सराय में घुसा पर वहॉ सराय के मालिक ने उसे अन्दर आने से मना कर दिया। यहॉ तक कि वह उसे अपनी घुड़साल में भी ठहरने की जगह न दे क्योंकि उसे डर था कि उसे देख कर उसके घोड़े उससे डर जायेंगे।

लेकिन भालू की खाल वाले ने जब अपनी जेब में हाथ डाल कर मुट्ठी भर कर डकैट[5] निकाले तब तो वह खुद ही उससे अपनी सराय में ठहरने की जिद करने लगा और उसे बाहर के घर में एक कमरा दे दिया।

भालू की खाल वाले ने भी उससे वायदा किया कि वह वहॉ से बाहर नहीं निकलेगा ताकि सराय का नाम बदनाम न हो।

एक दिन वह शाम को अकेला बैठा हुआ था और दिल से इच्छा कर रहा था कि उसके वह सात साल जल्दी से खत्म हो जायें कि उसने बराबर वाले कमरे से ज़ोर ज़ोर से रोने की आवाज सुनी।

[5] Ducat was the currency of Europe at that time

वह बहुत दयालु था सो उसने बराबर वाले कमरे का दरवाजा खोला। उसने देखा कि एक बूढ़ा हाथ मल कर बहुत ज़ोर ज़ोर से रो रो रहा था। भालू की खाल वाला उसके पास गया पर उसे देख कर वह बूढ़ा डर कर उछल पड़ा और उससे बच कर भागने की कोशिश करने लगा।

पर जब उसने देखा कि भालू की खाल वाले को आदमी की आवाज में बोलते सुना तो वह रुक गया और भालू की खाल वाला अपने कोमल शब्दों से बूढ़े का दुख जानने में सफल हो गया।

उसकी जायदाद सब इधर उधर हो गयी थी और अब उसकी बेटियॉ खाने को तरस रही थीं। वह इतना गरीब था कि सराय के मालिक को भी पैसे देने लायक नहीं था सो उसे जेल जाना पड़ रहा था।

भालू की खाल वाले ने पूछा — "क्या केवल तुम्हारी यही समस्या है तो मेरे पास काफी पैसा है।" कह कर उसने सराय के मालिक को बुलाया और उस बूढ़े पर चढ़ा पैसा उसे दिया। इसके अलावा सोने का भरा हुआ बटुआ उसने बूढ़े की जेब में रख दिया।

जब गरीब बूढ़े ने देखा कि उसकी सारी समस्याऐं समाप्त हो गयीं है तो वह यही नहीं जानता था कि वह उस भालू की खाल वाले का किस प्रकार धन्यवाद करे ।

उसने भालू की खाल वाले से कहा — "आओ मेरे साथ। मेरी बेटियॉ बहुत सुन्दर हैं तुम उनमें से एक से शादी कर लो। जब वह

यह सुनेगी कि तुमने मेरे लिये क्या किया है तो वह ना नहीं कर पायेंगी। चिन्ता मत करो वे तुम्हें जल्दी ही ठीक कर लेंगी।"

यह सुन कर भालू की खाल वाला बहुत खुश हो गया और उसके साथ चल दिया। जब वह उसके घर पहुँचा तो उसकी सबसे बड़ी बेटी ने उसे पहले देखा तो वह तो उसे देख कर डर ही गयी। वह डर के मारे चिल्लायी और अन्दर भाग गयी।

दूसरी ने उसे देखा तो वह उसे देखती ही रह गयी। उसने उसे सिर से पैर तक देखा और फिर बोली — "मैं किसी ऐसे से शादी कैसे कर सकती हूँ जो आदमी की शक्ल का ही नहीं है।

वह भालू जो दाढ़ी बना कर आया था वह मुझे इससे कहीं ज़्यादा पसन्द था। कम से कम उसने ठीक से कपड़े पहन रखे थे। दस्ताने पहन रखे थे। अगर वह बदसूरत न होता तो मैं उससे शादी कर लेती फिर मैं उसे देख लेती।"

उसकी सबसे छोटी बेटी बोली — "पिता जी वह आदमी तो बहुत अच्छा होगा जिसने आपकी इस मुश्किल में सहायता की। इसलिये अगर आपने उससे वायदा किया है कि आप अपनी एक बेटी की शादी इससे करेंगे तो आपका वायदा तो निभाना ही पड़ेगा।"

यह बड़े दुख की बात थी कि भालू की खाल वाले का चेहरा धूल और बालों से ढका हुआ था वरना वे देख लेते कि वह ये शब्द सुन कर कितना खुश था।

उसने तुरन्त ही एक अँगूठी अपनी उंगली से निकाली उसे दो हिस्सों में तोड़ा और उसका एक हिस्सा बूढ़े की बेटी को दे दिया। अँगूठी का दूसरा हिस्सा उसने अपने पास रख लिया। उसने उसके हिस्से पर अपना नाम लिख दिया और अपने हिस्से पर उसका नाम लिख लिया।

उसने उससे कहा कि वह उसकी अँगूठी का आधा हिस्सा सँभाल कर रखे। फिर वह वहाँ से उससे यह कह कर चल दिया — "मुझे अभी तीन साल तक और घूमना है तब तक तुम मेरा इन्तजार करना। अगर मैं तब न आऊँ तो तुम इस बन्धन से आजाद हो क्योंकि तब मैं मर जाऊँगा। इतने समय तुम भगवान से मेरी लम्बी ज़िन्दगी के लिये प्रार्थना करती रहना।"

बेचारी दुलहिन ने काले कपड़े पहन लिये और जब भी वह अपने होने वाले पति के बारे में सोचती तो उसकी आँखों में आँसू आ जाते। उसकी बहिनें उसका मजाक उड़ातीं।

सबसे बड़ी बहिन कहती — "ख्याल रखना। अगर तूने उसे अपना हाथ दिया तो वह तेरे हाथों में अपने पंजे घुसा देगा।"

दूसरी बहिन बोली — "बच कर रहना। भालुओं को मीठी चीज़ें बहुत अच्छी लगती हैं। अगर उसे तू ही अच्छी लग गयी तो वह तुझे ही खा जायेगा।"

बड़ी बहिन फिर बोली — "तुझे हमेशा वही करना चाहिये जो वह चाहे नहीं तो वह गुर्रायेगा। पर हॉ शादी में बड़ा मजा आयेगा क्योंकि भालुओं को नाचना बहुत अच्छा आता है।"

इतना सब सुनने के बाद भी वह अपनी बहिनों को अपने ऊपर हावी नहीं होने देती थी।

इस बीच भालू की खाल वाला इधर उधर घूमता रहा। जिस जिसके लिये जो जो सम्भव था उसका वह उसी तरीके से भला करता रहा। वह लोगों को खुले दिल से दान देता रहा ताकि वह उसकी लम्बी उम्रके लिये प्रार्थना करते रहें।

आखिर सात साल का आखिरी दिन आ पहुॅचा। वह एक बार फिर उसी मैदान में जा पहुॅचा जहॉ उसे वह शैतान मिला था और जा कर पेड़ों के घेरे में एक पेड़ के नीचे बैठ गया।

कुछ ही देर में बहुत ज़ोर से हवा की आवाज आयी और शैतान वहॉ हाजिर था। उसने भालू की खाल वाले की तरफ गुस्से से देखा और उसका अपना कोट उसकी तरफ फेंक कर उससे अपना हरा कोट मॉगा।

भालू की खाल वाले ने कहा — "हम अभी वहॉ तक नहीं पहुॅचे हैं। तुम पहले मुझे साफ करो।"

अब यह शैतान को यह अच्छा लगा या नहीं पर उसको वहॉ पानी लाना पड़ा। उसे नहलाना पड़ा। उसके बालों में कंघी करनी पड़ी। उसके नाखून काटने पड़े।इसके बाद तो वह नौजवान वीर

सिपाही दिखायी देने लगा। इसके अलावा वह पहले से भी अधिक सुन्दर हो गया था।

जब शैतान चला गया तो वह बहुत ही हल्का महसूस करने लगा। वह शहर गया और एक बढ़िया सा मखमल का कोट खरीद कर पहना। चार घोड़ों से खींची जाने वाले एक गाड़ी में बैठा और अपनी दुलहिन के घर चला।

किसी ने उसे पहचाना नहीं। बूढ़ा यह सोच कर उसे घर के अन्दर ले गया कि वह एक इज़्ज़तदार जनरल है। वहाँ उसकी बेटियाँ बैठी हुई थीं। बूढ़े ने उसे अपनी दोनों बड़ी बेटियों के बीच में बिठा दिया।

उन्होंने उसे वाइन पिलायी। उसे सबसे अच्छे माँस के टुकड़े खिलाये। उनको लगा कि दुनियाँ में उससे सुन्दर आदमी उन्होंने कभी देखा ही नहीं है। दुलहिन अपने काले कपड़े पहने हुए उन तीनों के सामने बैठी हुई थी। उसने अभी तक आँख उठा कर नहीं देखा था और न वह एक शब्द बोली थी।

जब काफी देर बात हो गयी तो सिपाही ने बूढ़े से पूछा कि क्या वह अपनी एक बेटी की शादी उससे करेगा तो उसकी दो बड़ी बेटियाँ तुरन्त ही उठ कर अपने कमरे में अपनी सबसे अच्छी पोशाक पहनने चली गयीं। क्योंकि उन दोनों को लगा कि उन्हीं को दुलहिन के लिये चुना गया है।

अजनबी जैसे ही अपनी होने वाली दुलहिन के साथ अकेला रह गया तो उसने अपनी टूटी हुई अँगूठी का आधा हिस्सा निकाला और उसे वाइन के गिलास में डाल दिया और उस गिलास को उसे दे दिया। उसने वह गिलास उठाया पर जब उसने वह वाइन पी तो उसको उस गिलास में अँगूठी का आधा हिस्सा मिला।

यह देख कर उसका दिल धड़कने लगा। उसने अपने गले में से उसकी दी हुई अँगूठी का आधा हिस्सा निकाला और उन दोनों को जोड़ा तो पाया कि दोनों एक दूसरे के अन्दर पूरी तरीके से फ़िट हो रहे हैं।

तब सिपाही बोला — "मैं ही तुम्हारा होने वाला पति हूँ जिसे तुमने भालू की खाल ओढ़े देखा था। भगवान की कृपा से अब मुझे आदमी की शक्ल मिल गयी है और अब मैं साफ हो गया हूँ।" कह कर वह उसके पास गया उसे गले से लगाया और चूम लिया।

इस बीच बूढ़े की दोनों बड़ी बेटियाँ अपने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहन कर सजधज कर बाहर आ गयीं। जब उन्होंने देखा कि उस सुन्दर आदमी ने उनका हिस्सा ले लिया है और सुना कि वही भालू की खाल वाला है तो वे गुस्से से भर कर वहाँ से भाग गयीं।

उनमें से एक ने कुँए में कूद कर जान दे दी और दूसरी ने एक पेड़ से लटक कर जान दे दी।

शाम को किसी ने दरवाजा खटखटाया और जब दुलहे ने दरवाजा खोला तो वहाँ तो शैतान खड़ा था अपना हरा कोट पहने

हुए। वह बोला — "देखा तूने। तेरी आत्मा के बदले में मुझे दो आत्माऐं मिल गयीं।"

3 डाक्टर नोऔल[6]

डाक्टर नोऔल जर्मनी की एक बहुत ही मशहूर कहानी है। तो लो पढ़ो यह कहानी अब हिन्दी में।

एक बार की बात है कि एक गॉव में एक बहुत ही गरीब किसान रहता था। उसका नाम था कैब[7]। वह दो बैलों पर लकड़ी लाद कर शहर ले गया और वहॉ उसने उसे एक डाक्टर को दो थेलर में बेच दिया।

जब उसे वे पैसे गिन कर दिये जा रहे थे उस समय डाक्टर खाने की मेज पर बैठा हुआ था। और जब किसान ने देखा कि वह किस नजाकत से खा रहा था और पी रहा था तो किसान के मन में इच्छा हुई कि वह भी डाक्टर बने और उसी तरह से खाये पिये।

वह वहॉ कुछ देर खड़ा रहा फिर आखिर उससे पूछ ही लिया कि क्या वह डाक्टर नहीं बन सकता था। डाक्टर बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। इसका इन्तजाम तो जल्दी ही किया जा सकता है।"

किसान ने पूछा — "मुझे क्या करना होगा?"

डाक्टर बोला — "पहले तो तुम्हें ए बी सी की एक किताब खरीदनी पड़ेगी जिस पर मुर्गे की तस्वीर बनी रहती है। दूसरे तुम्हें अपने बैल और गाड़ी को बेच कर कुछ पैसे बनाने पड़ेंगे जिससे तुम

[6] Doctor Knowall. A folktales from Germany by Grimm Brothers
[7] Crabb

कुछ अच्छे कपड़े खरीद सको। और साथ में वह सब खरीदना पड़ेगा जो दवा से सम्बधित हो।

इसके बाद एक साइनबोर्ड बनवाना पड़ेगा जिस पर लिखा होगा "मैं डाक्टर नोऔल हूँ।" और उसे अपने घर के दरवाजे के ऊपर टॉगना होगा।"

किसान ने वह सब किया जो उससे करने के लिये कहा गया था। कुछ दिनों तक वह लोगों का इलाज करता रहा कि एक दिन ऐसा हुआ कि एक अमीर लौर्ड का कुछ पैसा चोरी हो गया तो उसे डाक्टर नोऔल के बारे में बताया गया कि वह फलॉ फलॉ गॉव में रहता है और वह इस पैसे के बारे में जरूर कुछ जानता होगा।

सो लौर्ड ने अपनी गाड़ी में घोड़े जुतवाये और डाक्टर नोऔल के गॉव की ओर चल दिया। गॉव पहुँच कर उसने कैब से पूछा कि क्या वही डाक्टर नोऔल था। कैब बोला कि हॉ वही डाक्टर नोऔल था।

तो लौर्ड ने उससे कहा कि वह उसके साथ चले और उसका खोया हुआ पैसा उसे वापस ला कर दे। कैब बोला — "हॉ हॉ। पर मेरी पत्नी ग्रेथै भी मेरे साथ चलेगी।" लौर्ड राजी हो गया और दोनों लौर्ड की गाड़ी में बैठ कर चल दिये।

जब वे लौर्ड के किले पर आये तो किसान को खाने की मेज पर ले जाया गया और उसे खाना खाने के लिये वहॉ बिठाया गया तो किसान बोला "मेरी पत्नी ग्रेथै भी मेरे साथ ही बैठेगी।"

लौर्ड ने किसान की पत्नी ग्रेथे को भी किसान के पास ही बिठा लिया। जब पहला नौकर पहला खाना ले कर आया और उसे खाना देने लगा तो उसने कहा "ग्रेथे यह पहला है।" यह कहने का उसका मतलब यह था कि "यह नौकर है जो पहला खाना ले कर आया है।"

पर नौकर ने समझा कि किसान यह कह रहा था कि "यह पहला चोर है।" और क्योंकि वह सचमुच में चोर था सो वह तो कॉप गया।

उसने बाहर जा कर अपने साथी से कहा — "यह डाक्टर तो सब जानता है। मैं तो परेशान ही हो गया क्योंकि वह कह रहा था कि मैं पहला था।" यह सुन कर दूसरा तो अन्दर बिल्कुल भी नहीं जाना चाहता था पर उसे जबरदस्ती अन्दर भेजा गया।

जब वह दूसरा खाना ले कर अन्दर पहुँचा तो किसान ने अपनी पत्नी से कहा — "यह दूसरा है।" यह सुन कर यह नौकर भी डर गया और कमरे से बाहर निकल आया।

तीसरे नौकर के साथ भी कुछ खास अच्छा नहीं हुआ। वह जब अन्दर पहुँचा तो किसान ने अपनी पत्नी से कहा "यह तीसरा है।"

चौथा नौकर अपना खाना ढक कर लाया था और किसान को यह बताना था कि उसके अन्दर क्या है। पर डाक्टर को तो कुछ पता ही नहीं था कि उसके अन्दर क्या है सो वह चिल्ला पड़ा "ओह बेचारा कैब।"

जैसे ही लौर्ड ने यह सुना तो वह समझ गया कि यह डाक्टर बता देगा कि मेरा पैसा कहॉ है। वह बोला — "ओह यह तो जानता है कि मेरा पैसा कहॉ है।"

यह सुनते ही चारों नौकरों की सिट्टी पिट्टी गुम हो गयी। उन्होंने डाक्टर को बाहर आने का इशारा किया सो जब डाक्टर बाहर गया तो उन्होंने मान लिया कि लौर्ड के पैसे उन्होंने ही चुराये थे।

इसके लिये उन्होंने कहा वे अपने आप ही उसे सारा पैसा दे देंगे और वह उन्हें बदनाम न करे इसके लिये उन्होंने उसे और काफी पैसे देने का वायदा भी किया क्योंकि अगर उसने उन्हें बदनाम किया तो लौर्ड उन्हें फॉसी पर चढ़ा देगा।

वे उसे फिर उस जगह ले गये जहॉ उन्होंने पैसा छिपाया था। पैसा देख कर डाक्टर सन्तुष्ट हो गया और अपने कमरे में लौट कर मेज पर बैठ गया।

वह लौर्ड से बोला — "अब मैं आपको अपनी किताब देख कर बताऊॅगा कि आपका पैसा कहॉ है।"

यह सुन कर यह जानने के लिये कि डाक्टर को कुछ और भी मालूम है या नहीं पॉचवा नौकर स्टोव के पीछे जा कर छिप गया। डाक्टर कुछ देर बिना हिले डुले बैठा रहा फिर उसने अपनी ए बी सी की किताब खोली और उसमें मुर्गे को ढूढने के लिये उसके पन्ने कभी आगे कभी पीछे पलटने लगा।

क्योंकि वह तुरन्त ही पता नहीं लगा सका वह बोला "मुझे मालूम है कि तुम यहीं हो तो अच्छा हो कि तुम मेरे सामने खुद ही आ जाओ।"

पॉचवें नौकर ने जब यह सुना तो उसने समझा कि डाक्टर उसे खोज रहा है तो वह डर गया और तुरन्त ही वहॉ से कूद कर डाक्टर के सामने आ गया और बोला "उफ़ यह तो सब कुछ जानता है।"

उसके बाद डाक्टर नोऔल ने लौर्ड को बताया कि उसका पैसा कहॉ छिपा हुआ था। पर उसने उसे यह नहीं बताया कि उसे किसने चुराया था। इस तरह से दोनों तरफ से उसको बहुत सारा पैसा इनाम में मिला और वह एक बहुत मशहूर आदमी बन गया।

4 मौत के दूत[8]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार एक राक्षस एक बहुत बड़ी सड़क पर यात्रा कर रहा था कि अचानक से एक अजनबी उसके सामने आ खड़ा हुआ और बोला — "वहीं रुक जाओ एक कदम भी आगे मत बढ़ना।"

राक्षस बोला — "क्या? एक ऐसा आदमी जिसे मैं अपनी उंगलियों में ही मसल सकता हूँ मेरा रास्ता रोकना चाहता है। तू कौन है जो मुझसे इतनी हिम्मत से बात करने की हिम्मत कर रहा है?"

वह आदमी बोला — "मैं मौत हूँ। मुझे कोई नहीं रोक सकता। तुझे भी भी मेरी आज्ञा का पालन करना चाहिये।"

पर राक्षस ने उसका कहा मानने से इनकार कर दिया और उससे लड़ने लगा। यह एक लम्बी भयानक लड़ाई थी। आखिर राक्षस जीत गया और उसने मौत को घूँसे मार मार कर नीचे गिरा दिया। वह एक पत्थर के पास जा कर गिर गयी।

राक्षस अपने रास्ते चला गया और मौत वहीं हारी हुई पड़ी रही। वह इतनी कमजोर थी कि वहाँ से उठ ही नहीं सकी। उसने सोचा "अब मैं क्या करूँ। अगर मैं यहाँ से नहीं उठी और यही पड़ी

[8] Death's Messengers. A folktale from Germany by Grimm Brothers.

रही तो फिर दुनियॉ में कोई नहीं मरेगा और यह दुनियॉ आदमियों और प्राणियों से इतनी भर जायेगी कि वे आपस में एक दूसरे के पास भी नहीं खड़े हो पायेंगे।"

इस बीच उसे एक नौजवान आता दिखायी दिया जो बहुत ताकतवर और मजबूत था। वह नौजवान कोई गीत गाता चारों तरफ देखता हुआ चला आ रहा था।

जब उसने देखा कि रास्ते में कोई आधा बेहोश सा पड़ा हुआ है तो उसको उस पर दया आ गयी। उसने मौत को उठाया और अपनी शीशी से एक बड़ा सा घूँट पानी का पिलाया और तब तक इन्तजार किया जब तक वह ठीक से होश में नहीं आया।

अजनबी ने उठते हुए कहा — "क्या तू जानता है कि मैं कौन हूँ और तूने किसको अपनी टॉगों पर खड़े होने में सहायता की है?"

नौजवान बोला — "नहीं मैं तुझे नहीं जानता।"

अजनबी बोला — "मैं मौत हूँ। मैं किसी को नहीं छोड़ती और तू कोई इसका अपवाद नहीं है। मैं तुझे भी नहीं छोड़ूँगी। पर तू यह देख सकता है कि मैं तेरी ऋणी हूँ। मैं तुझसे वायदा करती हूँ कि मैं तेरे ऊपर अकस्मात ही नहीं आऊँगी। पहले मैं तेरे पास अपने दूत भेजूँगी और उसके बाद ही तुझे ले कर जाऊँगी।"

नौजवान बोला — "ठीक है। यह तो बड़ी अच्छी बात है कि तेरे आने का मुझे पहले ही पता चल जायेगा और किसी तरह से मैं तुझसे तब तक सुरक्षित रहूँगा।"

इतना कह कर नौजवान भी अपने रास्ते चला गया। वह बहुत हल्का महसूस कर रहा था और अपने आस पास के दृश्यों का आनन्द लेता चला जा रहा था। फिर वह मौत की बात भूल गया।

पर जवानी और तन्दुरुस्ती दोनों बहुत दिनों तक नहीं रहते। जल्दी ही उसे बीमारियों और दुखों ने घेर लिया। इनसे वह दिनों दिन परेशान रहने लगा। उसकी रातों की नींद उड़ गयी।

उसने सोचा "मैं अभी नहीं मरूँगा। मौत ने कहा था कि वह मुझे ले जाने से पहले मेरे पास अपने दूत भेजेगी। पर मेरी यह बहुत बड़ी इच्छा है कि मेरे ये दुख के दिन दूर हो जायें।" जैसे ही वह कुछ अच्छा हो गया उसने फिर से खुशी रहना शुरू कर दिया।

एक दिन किसी ने पीछे से उसका कन्धा थपथपाया। उसने मुड़ कर देखा तो मौत उसके पीछे खड़ी थी। वह बोली — "आओ मेरे पीछे आओ। इस दुनियॉ से तुम्हारे जाने का समय आ गया है।"

आदमी बोला — "क्या तू अपना वायदा तोड़ रही है? क्या तूने यह नहीं कहा था कि मुझे ले जाने से पहले तू मेरे पास अपने दूत भेजेगी? मैंने तो ऐसा कोई तेरा दूत देखा नहीं।"

"चुप। क्या मैंने तेरे पास आने से पहले एक के बाद दूसरा अपना दूत नहीं भेजा? क्या मैंने तेरे पास बुखार नहीं भेजा जिसने तुझे हिला कर रख दिया और बिस्तर में लिटा दिया?

क्या उसने तेरा सिर हिला कर नहीं रख दिया? क्या गठिया ने तेरे जोड़ जोड़ में दर्द नहीं कर दिया? क्या तेरे कान नहीं बजे? क्या दॉतों के दर्द ने तेरे गालों को नहीं सुजा दिया? क्या तेरी ऑखों के सामने अँधेरा नहीं छा गया? इसके अलावा मेरी बहिन नींद ने क्या तुझे रात रात भर तंग नहीं किया?"

वह आदमी इसके जवाब में कुछ नहीं कह सका और मौत को अपनी नियति मान कर उसके पीछे पीछे चल दिया।

5 शैतान और उसकी दादी[9]

एक बार बहुत ज़ोर की लड़ाई हुई तो राजा के पास बहुत सिपाही थे पर वह उनको तनख्वाह बहुत थोड़ी देता था। इतनी थोड़ी देता था कि वह उसमें रह नहीं सकते थे। तो एक दिन उनमें से तीन लोगों ने यह निश्चय किया कि वे यह नौकरी छोड़ देंगे।

उनमें से एक ने दूसरे दोनों से कहा — "लेकिन हम अगर पकड़े गये तो हमें फॉसी पर लटका दिया जायेगा। हमको क्या करना चाहिये।"

दूसरा बोला — "वह मक्का का खेत देख रहे हो न। अगर हम उस खेत में छिप जाने में सफल हो जायें तो फिर हमें कोई नहीं ढूँढ पायेगा। क्योंकि फौज को इस खेत में जाने की इजाज़त नहीं है और कल तो वे सब चले ही जायेंगे।"

सो वे लोग मक्का के खेत में जा छिपे पर सिपाही लोग वहॉ से नहीं गये बल्कि उसके चारों ओर वहीं छिपे रहे। वे लोग मक्का के खेत में पूरे दो दिन और दो रात छिपे रहे। भूख की वजह से वे बेचारे मरने मरने को हो रहे थे पर अगर वे खेत से बाहर निकल आते तो तो निश्चित रूप से ही मर जाते।

वे आपस में बात करने लगे — "हमारे यहॉ छिपने का क्या फायदा जो हम इस तरह से मर रहे हैं।"

[9] The Devil and His Grandmother. A folktale from Germany bt Grimm Brothers.

तभी एक भयानक ड्रैगन उड़ता हुआ वहॉ आया और उनके पास नीचे उतर गया और उनसे पूछा कि वे वहॉ क्यों छिपे हुए थे। वे बोले — "हम तीन सिपाही हैं। हम राजा की सेना छोड़ कर इसलिये चले आये हैं क्योंकि वह हमें बहुत कम तनख्वाह देता है और अगर अब हम यहॉ रहे तो हम यहॉ मर जायेंगे और अगर बाहर गये तो वहॉ हमें फॉसी पर चढ़ा दिया जायेगा।"

ड्रैगन बोला — "तुम लोग मेरे लिये सात साल तक काम करोगे और बदले में मैं तुम्हें सेना में से निकाल कर ले जाऊॅगा ताकि कोई तुम्हें पहचान न सके।"

तीनों बोले — "हमारे पास और कोई रास्ता ही नहीं है सो हमें मंजूर है।"

ड्रैगन ने उन तीनों को अपने पंजों में पकड़ा और उन्हें सेना के ऊपर से हवा में उड़ा कर बाहर ले गया। वहॉ से काफी दूर बाहर ले जा कर उसने उन्हें जमीन पर उतार दिया।

पर यह ड्रैगन और कोई नहीं शैतान था। उसने उन्हें एक कोड़ा दिया और कहा — "इस कोड़े से मारो तो तुम्हारे आस पास इतना सारा सोना निकल आयेगा जितना तुम चाहोगे। उस सोने से फिर तुम लौर्ड की तरह से रह सकते हो। घोड़े रख सकते हो। अपनी अपनी गाड़ियॉ रख सकते हो। पर सात साल के बाद तुम लोगों के ऊपर मेरा अधिकार होगा।"

उसके बाद उसने उनके सामने एक किताब रखी जिसमें उन तीनों को जबरदस्ती दस्तखत करने पड़े। उसके बाद उसने उनसे कहा कि "सात साल बाद मैं तुम्हें एक पहेली दूँगा। अगर तुमने मुझे उसका जवाब बता दिया तो तुम मेरी पकड़ से आजाद हो जाओगे।"

इतना कह कर ड्रैगन वहाँ से उड़ गया और वे अपने हाथ में उसका कोड़ा और सोना ले कर चले गये। अपने लिये कीमती कपड़े खरीदे और दुनियाँ घूमी। वे जहाँ भी गये वहीं बड़े आनन्द में रहे। घोड़े पर सवारी की। गाड़ियों में घूमे। खूब खाया पिया पर कोई बुरा काम नहीं किया।

समय उड़ता रहा और जब सात साल खत्म होने को आये तो उनमें से दो लोग कुछ चिन्तित होने लगे। तीसरे ने उन्हें विश्वास दिलाया कि उन्हें इतनी अधिक चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। वह खुद चतुर है सो ड्रैगन की पहेली का कोई न कोई जवाब ढूँढ ही लेगा।

सात साल पूरे हो जाने पर वे तीनों एक खुली जगह में जा कर बैठ गये। उनमें से दो लोग बहुत दुखी थे। तभी वहाँ एक काफी उम्र वाली स्त्री आयी और उसने उनसे पूछा कि वे दुखी क्यों थे।

वे दोनों बोले — "पर इससे तुम्हारा क्या मतलब है। तुम हमारी कोई सहायता नहीं कर सकती।"

स्त्री बोली — "कौन जाने। पर तुम अपनी परेशानी तो मुझे बताओ।"

तो उन्होंने उसे बताया कि वे शैतान के चंगुल में सात साल से हैं उसने उन्हें इतना सारा सोना ऐसे दिया है जैसे कोई ब्लैकबैरीज़ देता है पर उन्होंने अपने आपको उसे बेच दिया है।

लेकिन सात साल खत्म होने के बाद वह हमसे एक पहेली पूछेगा जिसका जवाब हमने अगर सही सही दे दिया तो वह हमें छोड़ भी देगा। पर अगर हम नहीं बता सके तो हम उसके हो जायेंगे।

स्त्री बोली — "अगर तुम अपने आपको बचाना चाहते हो तो तुममें से एक को जंगल में जाना चाहिये। वहॉ वह एक टूटी हुई चट्टान के पास आयेगा जो घर जैसी दिखायी दे रही होगी। उसे उस घर में अन्दर घुस जाना चाहिये वहॉ जा कर उससे सहायता मॉगनी चाहिये।"

उनमें से जो दो उदास बैठे थे उन्होंने सोचा यह भी हमको बचा नहीं पायेगा सो वे वहीं बैठे रहे पर तीसरा जो खुश खुश बैठा था जंगल की तरफ चल दिया। वह चलता रहा जब तक कि वह उस चट्टान वाले घर के पास तक आ गया।

वह उस घर में घुसा तो उसने देखा कि वहॉ एक बुढ़िया बैठी हुई है। यह उस शैतान की दादी थी। उसने सिपाही से पूछा कि वह कहॉ से आया था और वहॉ वह उससे क्या चाहता था। उसने उसे अब तक जो कुछ हुआ था वह सब बता दिया।

यह सब सुन कर बुढ़िया बहुत खुश हुई और उसे सिपाही पर दया आ गयी। उसने उसे धीरज दिया कि वह उसकी सहायता अवश्य करेगी। उसने एक पत्थर उठाया जिसके नीचे एक कमरा था।

उसने उसे उसमें छिपने के लिये कहा और कहा — "तुम यहॉ छिप जाओ ताकि तुम यहॉ छिपे रह कर सब कुछ सुन सको। बस यहॉ चुपचाप बैठे रहना हिलना नहीं। जब ड्रैगन यहॉ आयेगा तब मैं उससे पहेली के बारे में पूछूँगी और वह मुझे सब कुछ बता देगा। यहॉ बैठे बैठे तुम उसका जवाब सुन लेना और फिर उसे बता देना।"

रात को बारह बजे ड्रैगन वहॉ उड़ता हुआ आया और उसने अपना खाना मॉगा। दादी ने उसके लिये खाना और शराब मेज पर लगा दी। खाना देख कर वह बहुत खुश हुआ। दोनों ने मिल कर खाना खूब प्रेम से खाया।

बात करते समय दादी ने ड्रैगन से पूछा कि उसका दिन कैसा और रहा उसने कितनी आत्माऐं अपने कब्जे में कीं।

ड्रैगन बोला — "आज का दिन कुछ खास अच्छा नहीं गुजरा पर आज मैंने तीन आत्माओं को पकड़ा हुआ है। वे मेरे पास सुरक्षित हैं।"

"क्या सचमुच। अगर तीन आदमी हैं तब तो बहुत अच्छा है पर वे तुमसे बच कर भाग भी तो सकते हैं।"

शैतान हॅस कर बोला — "वे मेरे हैं। मुझे उनसे एक पहेली पूछनी है जिसका हल वे कभी भी नहीं बूझ सकेंगे।"

दादी ने पूछा — "और वह पहेली क्या है।"

"मैं तुम्हें बताता हूॅ। उत्तरी समुद्र में नीचे तली में एक मरी हुई मछली पड़ी हुई है उसका भुना हुआ मॉस तुम्हारा खाना बनेगी और व्हेल की हड्डी की तुम्हारी चॉदी की चम्मच होगी। एक बूढ़े घोड़े का खुर तुम्हारी शराब का प्याला होगा।"

जब शैतान सोने चला गया तो उसकी दादी ने नीचे वाले कमरे के ऊपर रखा पत्थर उठाया और सिपाही को वहॉ से बाहर निकाला। उसने सिपाही से पूछा कि क्या उसने उसके पोते की हर बात पर ध्यान दिया या नहीं।"

सिपाही बोला — "हॉ मैंने उसकी सब बातें ध्यान से सुनी और अब मैं उससे बचने की पूरी पूरी कोशिश करूॅगा।"

उसके बाद उसे दूसरे रास्ते से यानी खिड़की के रास्ते से उस घर से बाहर निकलना पड़ा। बाहर निकल कर वह तुरन्त ही अपने साथियों के पास पहुॅच गया। वहॉ जा कर उसने अपने साथियों को बताया कि किस तरह से वह शैतान की दादी से मिल कर उसके बारे में जान सका। और फिर किस तरह से उसकी पहेली का जवाब जान सका।

यह सुन कर वहॉ बैठे दोनों सिपाही बहुत खुश हुए। उन्होंने अपना कोड़ा उठाया और उससे इतना सारा सोना निकाल लिया कि वह उनके आस पास चारों तरफ बिखर गया।

जब सात साल पूरे हो गये तो शैतान अपनी किताब ले कर उनके पास आया उन्हें उनके दस्तखत दिखाये और बोला "अब मैं तुम लोगों को अपने साथ नरक ले जाऊॅगा। अब तुम अपना खाना वहीं खाना।

अगर तुम सोच सको कि वहॉ तुम्हें किस तरह का भुना हुआ मॉस मिलेगा और वह मुझे बता दो तो मैं तुम्हें छोड़ दूॅगा और यह कोड़ा भी मैं तुम्हें ही दे दूॅगा।

पहला सिपाही बोला — "उत्तरी समुद्र में नीचे एक मरी हुई मछली पड़ी हुई है। हमें इस बात में कोई सन्देह नहीं है कि हमें उसी का भुना हुआ मॉस खाने को मिलेगा।"

यह सुन कर शैतान बहुत गुस्सा हुआ पर फिर दूसरे सिपाही से पूछा — "और फिर चम्मच किस चीज़ की बनी होगी?"

दूसरा सिपाही बोला — "व्हेल की हड्डी की। वही हमारी चॉदी की चम्मच होगी।"

शैतान ने बुरा सा मुॅह बनाया और तीसरे सिपाही पर चिल्लाया — "और क्या तुम्हें पता है कि तुम्हारी वाइन का गिलास कौन सा होगा?"

तीसरे सिपाही ने जवाब दिया — "बूढ़े घोड़े के खुर का गिलास ही हमारा वाइन का गिलास होगा।"

यह सुन कर शैतान एक बहुत ही ज़ोर की आवाज के साथ भाग गया। उसके बाद उसका उन तीनों सिपाहियों के ऊपर कोई अधिकार नहीं रहा। उसका कोड़ा भी उनके पास ही रह गया। अब वह कभी भी कितना भी सोना निकाल सकते थे।

जब तक वे ज़िन्दा रहे तब तक खूब खुशी खुशी रहे।

6 राक्षस और दर्जी[10]

एक बार की बात है कि एक दर्जी था जो अपनी डींग तो बहुत हॉकता था पर काम कुछ नहीं करता था। एक बार उसने सोचा कि उसे कहीं बाहर घूम कर आना चाहिये और दुनियॉ देखनी चाहिये।

जितनी जल्दी हो सका उसने अपनी दूकान छोड़ी और बाहर घूमने चल दिया। वह पहाड़ियों के ऊपर गया घाटियों से गुजरा। वह कभी इधर गया कभी उधर गया पर आगे ही आगे बढ़ता गया।

एक दिन जब वह घर से बाहर था तो उसने दूर कहीं एक बहुत ही खड़ी पहाड़ी देखी जो एक बहुत ही अॅधेरे घने जंगल में ऊपर उठी हुई थी।

दर्जी बोला — "बिजली और गरज। यह क्या है।"

उसकी उत्सुकता इतनी बढ़ गयी कि वह उस पहाड़ी की तरफ बहादुरी से चल दिया। पर उसकी ऑखें और मुॅह तो खुला का खुला ही रह गया जब उसने देखा कि उस मीनार के तो पॉव हैं। और एक ही छलॉग में ऊपर से नीचे कूद कर एक राक्षस उसके सामने खड़ा था।

वह बोला — "ओ छोटी सी मक्खी की टॉग बोल तुझे यहॉ से क्या चाहिये?"

[10] The Giant and the Tailor. A folktale from Germany by Grimm Brothers.

उसकी आवाज इतनी कड़क थी कि वह बिजली की कड़क की तरह चारों तरफ गूँज रही थी। दर्जी काँपते हुए बोला — "मैं तो बस ज़रा यह देख रहा था कि क्या मैं यहाँ इस जंगल में अपनी रोटी कमा सकता हूँ?"

राक्षस बोला — "अगर तुम केवल यही चाहते हो तो तुम मेरे साथ ठहर सकते हो।"

"अगर ऐसा है तो यही सही। मुझे बताओ कि तुम मुझे क्या दोगे?"

"तुम्हें पता चल जायेगा कि तुम्हें कितनी तनख्वाह मिलेगी। हर साल तीन सौ पैंसठ दिन और हर चौथे साल लौंद के साल का एक दिन और। क्या तुम्हें यह ठीक लग रहा है?"

दर्जी बोला — "हाँ ठीक है।"

उसने अपने मन में सोचा "सबको अपना कोट अपने पास जितना कपड़ा हो उतना ही बड़ा काटना चाहिये।[11] मैं यहाँ से जितनी जल्दी मुझसे हो सकेगा उतनी जल्दी भागने की कोशिश करूँगा।"

राक्षस बोला — "ओ मफ़िन जाओ और मेरे लिये एक जग पानी ले कर आओ।"

अब दर्जी तो डींग मारने वाला था। चह बोला — "क्या यह अच्छा नहीं होगा कि मैं कुँआ और पानी का सोता दोनों ही यहाँ ले

[11] There is a saying in English – "One must cut his coat according to his cloth."

आऊँ।" कह कर वह घड़ा ले कर पानी लाने चला गया। राक्षस अपनी दाढ़ी में हँसा कि कुँआ और सोता दोनों। क्योंकि वह उसे कुछ जोकर और बेवकूफ दोनों लगा। वह उससे कुछ डर सा गया।

फिर उसने सोचा "नहीं वह बेवकूफ नहीं है। वह कोई जादूगर लगता है। ओ हैन्स उससे बच कर रहना। यह नौकर तेरे लिये नहीं है।"

जब दर्जी पानी का घड़ा ले कर आ गया तो राक्षस ने उससे जंगल जाने के लिये और वहाँ से कुछ लकड़ी के टुकड़े लाने के लिये कहा।

तो छोटा दर्जी बोला — "एक बार में सारा जंगल ही क्यों नहीं। पूरा जंगल।"

राक्षस चिल्लाया — "क्या? नये पुराने सब पेड़ जो कुछ भी वहाँ है और खुरदरे और चिकने भी। और कुँआ और सोता भी।" यह सुन कर वह और भी अधिक डर गया। "लगता है कि यह तो सेब पकाने के अलावा और भी बहुत कुछ कर सकता है। इसके शरीर में जरूर ही कोई जादूगर है। अपना ध्यान रख ओ हैन्स यह नौकर तेरे लिये नहीं है।"

दर्जी जब लकड़ी ले आया तो राक्षस ने उसे अपने शाम के खाने के लिये दो तीन जंगली सूअर मार कर लाने के लिये कहा।

अपनी शान बघारने वाले दर्जी ने कहा — "केवल दो तीन ही क्यों एक ही बार में हजार क्यों नहीं।"

यह सुन कर राक्षस तो बहुत ही डर गया। आज की रात मैं अकेला ही लेटूँगा और सोऊँगा। राक्षस इन सब बातों को सोच कर इतना परेशान हुआ कि रात भर पलक नहीं झपका सका और यही सोचता रहा कि किस तरह से इस जादू टोना करने वाले नौकर से छूट्टी पायी जाये।

समय सबसे बड़ा सलाहकार होता है। अगले दिन राक्षस और दर्जी दोनों दलदल की तरफ गये जिसके चारों तरफ बहुत सारे विलो के पेड़ खड़े हुए थे।

राक्षस दर्जी से बोला — "मैं तुझे आज्ञा देता हूँ कि तू विलो के पेड़ की एक शाख पर बैठ जा। अगर तू उसे नीचे झुका दे तो मैं उस पर बैठ कर सारी चीज़ें देखना चाहता हूँ।"

तुरन्त ही दर्जी विलो के पेड़ की एक शाख पर बैठ गया और उसने अपनी साँस रोक ली और अपने आपको इतना भारी बना लिया कि वह शाख नीचे झुक गयी।

जब उसे अपनी साँस खींचनी पड़ गयी तब वह अपना दर्जी वाला छल्ला नहीं पहने था सो वह उसे इतना ऊपर ले गयी कि वह फिर कभी नहीं देखा गया। यह देख कर तो राक्षस की खुशी का पारावार नहीं रहा।

अगर दर्जी अभी तक नीचे नहीं गिरा है तो वह अभी भी हवा में ही कहीं तैर रहा होगा।

7 बूढ़ा सुलतान[12]

एक बार एक किसान के पास एक कुत्ता था। उसका नाम था सुलतान। वह अब बूढ़ा हो गया था। उसके सारे दॉत टूट गये थे। अब वह किसी भी चीज़ को जल्दी से और ठीक से नहीं पकड़ सकता था।

एक दिन किसान अपनी पत्नी के साथ घर के बाहर के दरवाजे पर खड़ा हुआ था। उसने अपनी पत्नी से कहा — "कल मैं अपने इस बूढ़े सुलतान कुत्ते को मार दूँगा। अब यह मेरे किसी काम का नहीं।"

उसकी पत्नी को उस वफादार जानवर से बहुत सहानुभूति थी। वह बोली — "इस बेचारे ने हमारी कितने दिनों तक वफादारी से सेवा की है हमें इसे अपने पास ही रखना चाहिये।"

आदमी बोला — "क्या? तुमको तो अक्ल ही नहीं है। उसके एक भी तो दॉत नहीं है। कोई चोर भी उससे डरता नहीं है। अब तो उसे मरना ही है। अगर उसने हमारी सेवा की है तो उसे इस बात का अहसास भी होगा।"

बेचारा कुत्ता जो वहॉ से कुछ दूरी पर ही लेटा हुआ धूप सेक रहा था सब कुछ सुन रहा था। एक भेड़िया उसका बहुत अच्छा दोस्त था। शाम को वह उसके पास जंगल चला गया।

[12] Old Sultan. A folktale from Germany by Grimm Brothers

वहाँ पहुँच कर उसने अपना दुखड़ा रोया जो उसके साथ होने वाला था। भेड़िया बोला — "शान्त हो जाओ और खुश रहो। मैं तुमको तुम्हारी मुसीबत से निकालने की कोशिश करता हूँ। मैंने तुम्हारे लिये कुछ सोच लिया है।

कल सुबह तुम्हारा मालिक अपनी पत्नी के साथ खेत पर भूसा निकालने के लिये जाने वाला है। साथ में वे अपने छोटे बच्चे को भी ले कर जायेंगे क्योंकि फिर घर में कोई उसकी देखभाल करने वाला नहीं रह जायेगा।

काम करने की वजह से उनको अपने बच्चे को किसी हैज की छाया में बच्चे को लिटा देना पड़ेगा। तुम भी वहीं उसके पास ही लेट जाना ताकि ऐसा लगे जैसे कि तुम उसकी रक्षा कर रहे हो। तब मैं जंगल से आऊँगा और बच्चे को ले जाऊँगा।

तुम जल्दी से मेरा पीछा करना जैसे कि तुम उसे मुझसे छुड़ाने के लिये मेरे पीछे भाग रहे हो। कुछ पल बाद ही मैं उसे नीचे गिरा दूँगा और तुम उसे उठा कर उसके माता पिता को दे आना। वे समझेंगे कि तुम ही उसे मुझसे बचा कर लाये हो।

वे तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद करेंगे और तुम्हारी प्रशंसा करेंगे और तुम्हें किसी चीज़ की कमी नहीं होने देंगे।"

यह सुन कर कुत्ता बहुत खुश हुआ। उसको यह प्लान बहुत पसन्द आया। जैसे यह प्लान सोचा गया था वैसे ही इसे काम में लाया गया।

जैसे ही भेड़िया बच्चे को ले कर भागा पिता ने चिन्तित हो कर शोर मचाया पर जब उसका कुत्ता उसके बच्चे को वापस ले कर उसके पास ले आया तो उसने अपने कुत्ते को बहुत प्यार किया बहुत सहलाया और बोला — "तुम्हारा कोई बाल भी बॉका नहीं कर सकेगा। तुम्हें मैं जब तक तुम ज़िन्दा रहोगे मुफ्त में ही खाना खिलाऊँगा।"

अपनी पत्नी से उसने कहा — "तुम जल्दी से घर जाओ और सुलतान के लिये दूध में भीगी रोटी बनाओ ताकि सुलतान को उसे चबाना न पड़े। और देखो मेरे बिस्तर से मेरा तकिया भी ले लेना मैं उसे सुलतान को लेटने के लिये दे दूँगा।"

उसके बाद सुलतान वहॉ बहुत अच्छे से रहने लगा।

इस घटना के कुछ समय बाद भेड़िया कुत्ते से मिलने के लिये आया और यह देख कर बहुत खुश हुआ कि उसका प्लान सफल रहा और अब सब कुछ ठीक चल रहा था।

फिर वह कुत्ते से बोला — "मैं तुम्हारे मालिक की एक मोटी सी भेड़ खाना चाहता हूँ तो ज़रा तुम ख्याल रखना।"

कुत्ता बोला — "तुम ऐसी बात की आशा भी मत करना। मैं अपने मालिक का वफादार हूँ और रहूँगा। मैं तुम्हारी इस बात पर राजी नहीं हो सकता।"

भेड़िये ने सोचा कि यह बात वह शायद उसके साथ मजाक कर रहा था सो एक रात वह कुत्ते के मालिक के घर आया और एक

भेड़ उठा कर ले जाने लगा। पर कुत्ते ने भेड़िये का प्लान मालिक को पहले ही बता दिया था तो मालिक ने उसे पकड़ लिया और अर्प नी कॉटे वाली गदा से उसके बालों को अच्छी तरह से कंघी की।

पर भेड़िया वहॉ से जाते जाते कुत्ते से कहता गया — "रुक जाओ बदमाश। मैं इसका बदला अवश्य लूँगा।"

अगली सुबह भेड़िये ने सूअर को कुत्ते को जंगल में आने के लिये चुनौती देने के लिये भेजा ताकि वे अपना मामला तय कर सकें। अब सुलतान का साथ देने के लिये और कोई नहीं था केवल तीन टॉग की एक बिल्ली थी।

जब वह जंगल में गया तो वह बिल्ली भी लॅगड़ाती हुई उसके साथ चल दी। साथ में उसने दर्द के मारे अपनी पूँछ भी खड़ी कर रखी थी।

भेड़िया और उसका दोस्त उस जगह पर पहले से तैयार खड़े थे। जब उन्होंने अपने दुश्मन को आते हुए देखा तो उन्हें लगा कि वह अपने साथ कोई तलवार ले कर आ रहा था क्योंकि बिल्ली की उठी हुई पूँछ उनको ऐसी ही लग रही थी।

और जब बिल्ली अपनी तीन टॉगों पर कूदती थी तो उनको लगता था कि हर बार वह उनको मारने के लिये नीचे से पत्थर उठा रहा है। यह देख कर दोनों डर गये। जंगली सूअर तो झाड़ियों में छिप गया और भेड़िया एक पेड़ के ऊपर कूद कर बैठ गया।

कुत्ता और बिल्ली जब उस जगह तक आये जहॉ कुत्ते को बुलाया गया था तो उन्हें यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वहॉ तो कोई नहीं था। जंगली सूअर अपने आपको पूरी तरह से नहीं छिपा पाया था। उसका एक कान अभी भी बाहर दिखायी दे रहा था।

जबकि बिल्ली बड़े ध्यान से इधर उधर देख रही थी। जैसे ही सूअर का कान इधर उधर हिला तो बिल्ली को लगा जैसे कोई चूहा हिला सो वह उसके ऊपर कूद पड़ी और उसके कान को बहुत ज़ोर से काट लिया।

सूअर बहुत ज़ोर से चिल्ला कर भागा — "दोषी तो पेड़ के ऊपर बैठा है।"

यह सुन कर कुत्ते और बिल्ली दोनों ने पेड़ के ऊपर देखा तो भेड़िये को बहुत अफसोस हुआ कि वह वहॉ बैठा हुआ बड़ा लाचार सा दिखायी दे रहा था। बाद में उसने कुत्ते से दोस्ती कर ली।

8 स्वर्ग में किसान[13]

एक बार की बात है कि एक गरीब किसान मर गया। मर कर वह स्वर्ग के दरवाजे पर पहुँचा। उसी समय एक अमीर आदमी भी मरा और वह भी स्वर्ग जाना चाहता था।

सेंट पीटर आये और उन्होंने स्वर्ग का दरवाजा खोल कर अमीर आदमी को अन्दर ले लिया पर वह किसी वजह से किसान को नहीं देख पाये सो उस आदमी को अन्दर लेने के बाद उन्होंने दरवाजा बन्द कर दिया।

बाहर से किसान ने सुना कि अमीर आदमी का स्वर्ग में कितनी ज़ोर शोर से स्वागत किया जा रहा है। कितना संगीत बजाया जा रहा है। कितने गीत गाये जा रहे हैं।

कुछ समय बाद सब कुछ शान्त हो गया। सेंट पीटर फिर आये और फिर से स्वर्ग का दरवाजा खोला। और अबकी बार किसान को अन्दर ले लिया। किसान को आशा थी उसके अन्दर पहुँचने पर भी उसके लिये संगीत बजाया जायेगा और गीत गाये जायेंगे पर वहाँ तो सब शान्त पड़ा था।

उसे वहाँ बड़े प्यार के साथ ले जाया गया। देवदूत उसे लेने के लिये तो आये मगर किसी ने कोई गीत नहीं गाया।

[13] The Peasant in Heaven. A folktale from Germany by Grimm Brothers

किसान ने सेंट पीटर से पूछा "ऐसा कैसे हुआ कि उसके लिये कोई गीत नहीं गाया गया जैसा कि उस अमीर आदमी के लिये किया गया था जब वह अन्दर गया था।"

वह फिर बोला — "मुझे ऐसा लगता है कि स्वर्ग में भी धरती की तरह से ही होता है। यहॉ भी लोगों के साथ भेदभाव किया जाता है।"

सेंट पीटर बोले — "हर तरह से तुम भी हमें उतने ही प्रिय हो जितने और लोग हैं। और स्वर्ग की हर खुशी का आनन्द भोगोगे जितना कि वह अमीर आदमी भोगता है। पर क्योंकि तुम्हारे जैसे गरीब आदमी तो यहॉ रोज आते हैं उसके जैसा अमीर आदमी तो यहॉ सौ साल में कभी एक बार आता है।"

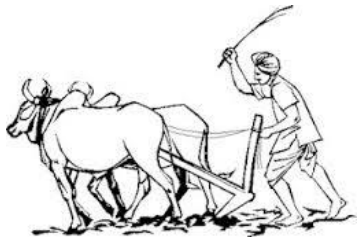

9 जंगल में झोंपड़ी[14]

एक बार की बात है कि एक लकड़हारा अपनी पत्नी और तीन बेटियों के साथ एक सुनसान जंगल के किनारे पर एक झोंपड़ी में रहता था।

एक सुबह जब वह अपने काम पर जाने के लिये निकल रहा था तो उसने अपनी पत्नी से कहा — "मेरी सबसे बड़ी बेटी को मेरा खाना ले कर भेज देना नहीं तो मेरा काम नहीं हो पायेगा। वह रास्ता न भूले इसलिये मैं एक थैला बाजरे का लेता जाऊँगा और उसे रास्ते पर डालता जाऊँगा।"

जब सूरज जंगल के ऊपर बीच में पहुँचा तो उसकी सबसे बड़ी बेटी उसका खाना ले कर अपने पिता की तरफ रवाना हुई पर किसान का फैलाया हुआ बाजरा जंगल की बहुत सारी चिड़ियें खा गयी थीं सो वह रास्ता नहीं पा सकी।

पर यह सोच कर कि शायद वह अपने पिता के पास पहुँच जाये चलती रही चलती रही। चलते चलते शाम हो गयी सूरज डूब गया। रात में पेड़ के पत्तों की सरसराहट सुनायी देने लगी। उल्लुओं की आवाज सुनायी देने लगी तो वह डरने लगी। तभी उसे पेड़ों के बीच से एक चमकती रोशनी दिखायी दी।

[14] The Hut in the Forest. A folktale from Germany. By Grimm Brothers.

उसने सोचा कि शायद वहॉ पर कुछ लोग रहते होंगे वे मुझे रात के लिये शरण दे देंगे। सो वह उस रोशनी की तरफ चल दी। जल्दी ही वह उस मकान तक आ पहुँची। उस मकान की सारी खिड़कियों से रोशनी निकल रही थी।

उसने दरवाजा खटखटाया तो एक फटी हुई आवाज ने कहा "अन्दर आ जाओ।"

लड़की अँधेरे दरवाजे में से हो कर अन्दर घुसी और फिर कमरे का दरवाजा खटखटाया तो फिर उसी आवाज ने कहा "आ जाओ।"

जब वह अन्दर गयी तो उसने देखा कि वहॉ एक सफेद बालों वाला आदमी खाने की मेज पर बैठा हुआ था। उसका सिर उसके दोनों हाथों में रखा हुआ था। उसकी सफेद दाढ़ी मेज से नीचे तक जमीन पर लटक रही थी। उसकी अँगीठी के पास तीन जानवर बैठे हुए थे – एक मुर्गी एक मुर्गा और एक चितकबरी गाय।

लड़की ने उसे अपनी कहानी सुनायी और उससे प्रार्थना की कि वह उसे रात भर के लिये शरण दे दे। आदमी बोला —

ओ सुन्दर मुर्गी ओ सुन्दर मुर्गे
और सुन्दर चितकबरी गाय तुम इसे क्या कहते हो

जानवर बोले "डक्स"। जिसका मतलब होता है कि "हॉ आप इसे रख लीजिये।"

बूढ़ा बोला — "तुमको यहाँ शरण और खाना मिल जायेगा। जाओ आग के पास जाओ और हमारे लिये खाना बनाओ।"

लड़की रसोईघर में गयी तो वहाँ हर चीज़ बहुतायत में थी। उसने वहाँ बहुत अच्छा खाना बनाया और सारा खाना मेज पर लगा दिया। फिर वह सफेद बालों वाले के पास जा कर बैठ गयी। उसने पेट भर कर खाना खाया।

खाने के बाद उसने कहा — "मैं अब थक गयी हूँ। मेरा पलंग कहाँ है जहाँ मैं लेट सकूँ और सो सकूँ।" जानवर बोले —

तुमने उसके साथ खाया है तुमने उसके साथ पिया है
पर तुमने हमारे बारे में तो सोचा ही नहीं
इसलिये तुम अपने सोने की जगह अपने आप ही ढूँढो

तब बूढ़े ने कहा — "तुम ऊपर जाओ तो तुमको एक कमरा मिलेगा जिसमें दो पलंग बिछे होंगे। उनको झाड़ लेना और उन पर सफेद चादरें बिछा लेना। मैं भी अभी ऊपर सोने के लिये आता हूँ।"

लड़की ऊपर चली गयी जब उसने पलंग झाड़ लिये और उन पर सफेद चादरें बिछा लीं तो वह बूढ़े का इन्तजार किये बिना ही उनमें से एक पलंग पर लेट गयी।

कुछ देर बाद बूढ़ा आया उसने अपनी मोमबत्ती ली लड़की की तरफ देखा और अपना सिर हिलाया। जब उसने देखा कि लड़की

गहरी नींद सो गयी तो उसने फर्श में बना हुआ एक छिपा हुआ दरवाजा खोला और उसमें उसे नीचे वाले कमरे में उतार दिया।

रात गये लकड़हारा घर वापस आया और अपनी पत्नी को डॉटा कि उसकी वजह से वह सारा दिन भूखा रहा। पत्नी बोली — "यह मेरी गलती नहीं है। बेटी सुबह तुम्हारा खाना ले कर गयी थी पर लगता है कि कहीं खो गयी है पर यकीनन वह कल सुबह तक आ जायेगी।"

अगले दिन लकड़हारा फिर से जंगल जाने के लिये जल्दी उठा और अपनी पत्नी से बोला कि उस दिन वह उसकी दूसरी बेटी को उसका खाना ले कर भेज दे। उस दिन वह एक दाल का थैला ले जायेगा और पूरे रास्ते दाल गिराता जायेगा। क्योंकि दाल बाजरे के दाने से बड़ी होती है तो वह लड़की को आसानी से दिखायी दे जायेगी ताकि वह रास्ता न खोये।

सो दोपहर को वह लड़की अपने पिता के लिये खाना ले कर जंगल की तरफ चल दी। वह दाल भी बाजरे की तरह ही गायब हो गयी थी। जंगल की चिड़ियें उन दानों को खा गयी थीं।

वह लड़की भी भटक गयी और रात को जब उसे एक मकान की रोशनी दिखायी पड़ी तो वह भी उसी मकान की तरफ चल दी। वहॉ उसे भी अन्दर आने को कहा गया। उसने भी वहॉ खाना और शरण की प्रार्थना की तो बूढ़े ने अपने जानवरों से पूछा —

ओ सुन्दर मुर्गी ओ सुन्दर मुर्गे
और सुन्दर चितकबरी गाय तुम इसे क्या कहते हो

जानवर बोले "डक्स"। जिसका मतलब होता है कि "हॉ आप इसे रख लीजिये।"

बूढ़ा उससे भी बोला — "तुमको यहॉ शरण और खाना मिल जायेगा। जाओ आग के पास जाओ और हमारे लिये खाना बनाओ।"

यह लड़की भी रसोईघर में गयी तो वहॉ हर चीज़ बहुतायत में थी। उसने वहॉ बहुत अच्छा खाना बनाया और सारा खाना मेज पर लगा दिया। फिर वह सफेद बालों वाले के पास जा कर बैठ गयी। उसने पेट भर कर खाना खाया।

खाने के बाद उसने भी कहा — "मैं अब थक गयी हूॅ। मेरा पलंग कहॉ है जहॉ मैं लेट सकूॅ और सो सकूॅ।" जानवर बोले —

तुमने उसके साथ खाया है तुमने उसके साथ पिया है
पर तुमने हमारे बारे में तो सोचा ही नहीं
इसलिये तुम अपने सोने की जगह अपने आप ही ढूॅढो

तब बूढ़े ने कहा — "तुम ऊपर जाओ तो तुमको एक कमरा मिलेगा जिसमें दो पलंग बिछे होंगे। उनको झाड़ लेना और उन पर सफेद चादरें बिछा लेना। मैं भी अभी ऊपर सोने के लिये आता हूॅ।"

यह लड़की भी ऊपर चली गयी और जब उसने पलंग झाड़ लिये और उन पर सफेद चादरें बिछा लीं तो वह बूढ़े का इन्तजार किये बिना ही उनमें से एक पलंग पर लेट गयी।

कुछ देर बाद बूढ़ा आया उसने अपनी मोमबत्ती ली लड़की की तरफ देखा और अपना सिर हिलाया। जब उसने देखा कि लड़की गहरी नींद सो गयी तो उसने फर्श में बना हुआ एक छिपा हुआ दरवाजा खोला और उसमें उसे भी नीचे वाले कमरे में उतार दिया।

तीसरे दिन लकड़हारे ने अपनी पत्नी से कहा कि वह उस दिन उसकी सबसे छोटी बेटी को उसका खाना ले कर भेज दे। वह हमेशा से ही बहुत अच्छी और कहना मानने वाली रही है। वह अपने रास्ते पर अडिग रहेगी और किसी भी शहद की मक्खी के पीछे नहीं भागेगी जैसे उसकी बहिनें भागी थीं।

पत्नी अपनी छोटी बेटी को भेजने के पक्ष में नहीं थी। वह बोली — "क्या मुझे अपनी यह बेटी भी खोनी पड़ेगी?"

पिता बोला — "तुम चिन्ता न करो। वह नहीं खोयेगी। वह बहुत समझदार है। मैं कुछ मटर ले जाऊँगा ये दाल से भी बड़ी होती है और उसे रास्ता भटकने से रोकेगी।"

पर जब वह लड़की अपनी टोकरी ले कर जंगल की तरफ गयी तब तक लकड़हारे की डाली हुई मटर कबूतर खा गये थे सो वहाँ अब एक भी दाना दिखायी नहीं दे रहा था। लड़की को रास्ते का ही पता नहीं चल रहा था।

वह बहुत दुखी थी और यही सोचे जा रही थी कि उसके पिता कितने भूखे होंगे। और अगर वह घर नहीं पहुँची तो उसकी माँ भी कितनी दुखी होगी। आखिर अँधेरा होने लगा तो उसने भी उसी मकान की रोशनी देखी और वह भी उसी मकान की तरफ चल दी।

वहाँ पहुँच कर उसने वहाँ बड़ी नम्रता से रहने की जगह माँगी और बूढ़े ने एक बार फिर अपने जानवरों से पूछा —

ओ सुन्दर मुर्गी ओ सुन्दर मुर्गे
और सुन्दर चितकबरी गाय तुम इसे क्या कहते हो

जानवर बोले "डक्स"।

यह लड़की स्टोव की तरफ गयी जहाँ जानवर थे तो उसने जानवरों को थपथपाया। उसने मुर्गे और मुर्गी को सहलाया और चितकबरी गाय के सींगों के बीच हाथ फेरा।

बूढ़े के कहे अनुसार उसने वहाँ बहुत अच्छा सूप बनाया और कटोरे लगा कर मेज पर लगा दिया। फिर उसने पूछा — "क्या मैं पेट भर कर खाऊँ जबकि जानवरों के पास खाने के लिये कुछ नहीं है। बाहर बहुत खाना है मैं पहले उनके लिये खाने का इन्तजाम करती हूँ।"

सो वह बाहर चली गयी और बाहर पड़े जौ को उबाल कर मुर्गे और मुर्गी को दिया। मुर्गा और मुर्गी दोनों ही उस खाने पर टूट पड़े। चितकबरी गाय को उसने मीठा भूसा दिया सो उसने भी पेट

भर कर खाना खाया। वह बोली — "आशा है तुमको यह खाना पसन्द आया होगा। अगर जरूरत होगी तो तुमको पानी भी मिलेगा।"

कह कर उसने मुर्गे और मुर्गी के लिये एक बालटी में पानी ला कर रखा। वे दोनों तुरन्त ही उसके किनारे पर बैठ कर पानी पीने लगे। गाय ने भी खूब पानी पिया।

जब जानवरों ने खाना खा लिया पानी पी लिया तो वह भी सफेद बालों वाले के पास जा कर बैठ गयी और उसने वही खाया जो बूढ़े ने छोड़ दिया था। जल्दी ही मुर्गा और मुर्गी अपने परों में अपना अपना सिर छिपाने लगे। गाय भी अपनी ऑखें झपकाने लगी।

लड़की ने बूढ़े से कहा — "अब हम लोगों को भी सोने जाना चाहिये।

ओ सुन्दर मुर्गी ओ सुन्दर मुर्गे
और सुन्दर चितकबरी गाय तुम क्या कहते हो

जानवर बोले — "डक्स।"

तुमने हमारे साथ खाया है तुमने हमारे साथ पिया है
तुमने हमारे बारे में विचार किया इसलिये हम तुमको गुड नाइट कहते हैं

तब लड़की ऊपर गयी पंखों के बिस्तरों को झाड़ा उन पर साफ चादरें बिछायीं। जब उसने यह कर लिया तो बूढ़ा भी ऊपर आ

गया और एक पलंग पर लेट गया। उसकी दाढ़ी उसके पैरों तक आ रही थी। लड़की दूसरे पलंग पर लेट गयी अपनी प्रार्थना की और सो गयी।

वह आधी रात तक तो शान्ति से सोती रही पर फिर घर में कुछ शोर होने लगा जिससे उसकी ऑख खुल गयी। घर के टूटने की आवाजें चारों तरफ से आ रही थीं। दरवाजा खुलने बन्द होने लगे और दीवार में लगने लगे।

मकान की शहतीरें भी टूटने लगीं जैसे वे सब नीचे गिर जायेंगी। ऐसा लग रहा था जैसे सीढ़ियॉ भी टूट रही हों। तभी एक बहुत ज़ोर की आवाज हुई और ऐसा लगा जैसे पूरा घर ही गिर पड़ा हो। फिर यकायक शान्ति हो गयी। लड़की को कोई नुकसान नहीं हुआ।

सुबह सवेरे जब वह उठी तो धूप चमक रही थी और उसने क्या देखा? वह एक बहुत बड़े कमरे में लेटी हुई थी। उसके चारों तरफ की सब चीज़ें शाही शान से चमक रही थीं।

दीवार पर हरे रंग की सिल्क पर सुनहरे फूल थे। पलंग हाथीदॉत का था और उसकी छतरी लाल मखमल की थी। पास की पड़ी हुई एक कुर्सी पर मोतियों से कढ़े जूते रखे थे।

लड़की को लगा वह एक सपना था।

पर नहीं। तीन नौकर वहॉ आये और उससे पूछने लगे कि उसे क्या चाहिये। उसने जवाब दिया — "अगर तुम यहॉ से जाओ तो

मैं तुरन्त ही उठ कर सबसे पहले बूढ़े के लिये सूप बनाना चाहूँगी। फिर उन सुन्दर मुर्गे मुर्गी और गाय को खाना खिलाना चाहूँगी।"

उसको लगा कि बूढ़ा उससे पहले ही उठ गया है। उसने अपने पलंग के चारों तरफ देखा तो वहाँ तो वह बूढ़ा नहीं था बल्कि कोई अजनबी ही था। उसने जब अजनबी को ध्यान से देखा तो देखा कि वह तो एक सुन्दर नौजवान था।

वह भी जाग गया था और अपने पलंग पर बैठा हुआ था। वह बोला — "मैं एक राजा का बेटा हूँ। एक जादूगर ने मेरे ऊपर जादू डाल कर मुझे बूढ़ा बना दिया था और इस जंगल में रहने के लिये मजबूर कर दिया था।

किसी को भी मेरे साथ रहने की इजाज़त नहीं थी सिवाय मेरे तीन नौकरों के। और ये तीन नौकर भी एक मुर्गी एक मुर्गे और एक गाय के रूप में।

यह जादू तभी टूट सकता था जब मेरे साथ कोई ऐसी लड़की आ कर रहती जो दिल की बहुत अच्छी होती। जिसके दिल में प्यार ही प्यार भरा होता न केवल आदमियों के लिये बल्कि जानवरों के लिये भी। जैसा कि तुम्हारे दिल में है। तुम्हीं ने आधी रात को यह जादू तोड़ दिया। और यह पुरानी झोंपड़ी मेरे महल में बदल गयी।"

उसके बाद राजा के बेटे ने अपने तीनों नौकरों को लड़की के माता पिता को वहाँ लाने का हुक्म दिया ताकि उनकी शादी की दावत में शामिल हो सकें।

लड़की ने तुरन्त ही पूछा — "पर मेरी दोनों बहिनें कहॉ हैं?"

"मैंने उन्हें नीचे वाले कमरे में बन्द कर दिया है। कल उन्हें जंगल ले जाया जायेगा और वे वहॉ तब तक एक कोयला बनाने वाले के पास उनकी नौकरानियॉ बन कर रहेंगी जब तक उनके दिलों में दया पैदा न हो जाये कि वह जानवरों को भूखा छोड़ दें।"

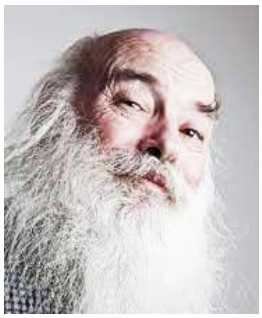

10 रैपन्ज़िल[15]

रैपन्ज़िल कहानी जर्मनी की एक बहुत ही मशहूर और लोकप्रिय कहानी है। लो आज पढ़ो तुम उसे हिन्दी में।

एक बार की बात है कि एक आदमी और उसकी पत्नी थे जो बहुत दिनों से एक बच्चा माँग रहे थे पर उनके मन की मुराद पूरी ही नहीं होती थी। पर आखिर पत्नी को लगा कि उसकी इच्छा पूरी होने जा रही है।

इनके घर के पीछे एक खिड़की थी जिससे एक शानदार बागीचा दिखायी देता था। उसमें बहुत सारे फूल और जड़ी बूटियाँ लगी हुई थीं। बागीचे के चारों तरफ दीवार थी। उस बागीचे में कोई जाने की हिम्मत नहीं कर सकता था क्योंकि वह एक जादूगरनी का बागीचा था। वह जादूगरनी बहुत ताकतवर थी और सारी दुनियाँ उससे डरती थी।

एक दिन यह स्त्री अपनी खिड़की पर बैठी हुई थी और उस बागीचे को देख रही थी कि उसका ध्यान एक क्यारी की तरफ गया जिसमें बहुत सुन्दर "रैम्पियन"[16] लगी हुई थी।

[15] Rapunzel. A folktale from Germany by Grimm Brothers.

[16] A single planting of rampion provides several benefits for the home gardener - tender, flavorful leaves to add to your early spring salads, young shoots to cook like asparagus in the spring, long edible roots in the fall, and flowers the second year to grace the vegetable garden while attracting pollinators.

वह उसे इतनी ताजा और हरी सी लगी कि उसे उसको खाने की इच्छा हो आयी। उसकी यह इच्छा बढ़ती ही गयी। पर उसे यह भी मालूम था कि वह इसे खा नहीं सकती थी सो वह पीली पड़ने लगी।

उसके पति ने उसे बीमार देखा तो उससे पूछा — "प्रिये तुम्हें क्या कष्ट है। क्या बात है तुम इतनी बीमार क्यों लग रही हो?"

पत्नी बोली — "पीछे बागीचे में रैम्पियन लगी हुई है। अगर मुझे वह रैम्पियन खाने के लिये नहीं मिली तो मैं मर जाऊँगी।"

उसका पति उसे बहुत प्यार करता था। उसने सोचा कि इससे पहले कि उसकी पत्नी मरे मैं खुद जा कर उसके लिये रैम्पियन ले आता हूँ। फिर उसके लिये कुछ भी क्यों न देना पड़े।"

शाम के धुँधलके में उसने जादूगरनी के बागीचे की दीवार फाँदी और बहुत जल्दी से मुट्ठी भर रैम्पियन तोड़ कर घर ले आया। उसकी पत्नी ने तुरन्त ही उसका सलाद बनाया और उसे स्वाद ले कर खाया।

अब वह उसे इतना अच्छा लगा कि अगले दिन उसने उससे तीन गुना खाने की इच्छा प्रगट की। इसका मतलब था कि उसके पति को एक बार फिर जादूगरनी के बागीचे की दीवार फाँद कर बागीचे में जाना था।

सो अगली शाम के धुँधलके में वह फिर से दीवार फाँद कर बागीचे में चला गया। पर जब वह बागीचे में गया तो वह तो बहुत

डर गया क्योंकि उसके सामने ही वह जादूगरनी खड़ी हुई थी। वह गुस्से के साथ बोली — "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई कि तुम यहाँ आओ और चोरों की तरह मेरी रैम्पियन ले जाओ। तुमको इसके लिये सजा मिलेगी।"

पति बोला — "मुझ पर दया कीजिये। मेरे साथ न्याय कीजिये। मैंने यह काम अपनी जरूरत की वजह से किया है। मेरी पत्नी ने अपनी खिड़की से आपकी रैम्पियन को देखा तो उसके दिल में उसे खाने की इतनी तेज़ इच्छा हुई कि अगर वह नहीं खाती तो वह मर ही जाती।"

यह सुन कर जादूगरनी का गुस्सा थोड़ा ठंडा हुआ। वह बोली — "अगर जैसा तुम कह रहे हो वैसा ही है तो मैं तुम्हें इजाज़त देती हूँ कि तुम जितना चाहे उतना रैम्पियन मेरे बागीचे से ले सकते हो। पर एक शर्त पर। तुम्हारी पत्नी जब भी जिस भी बच्चे को जन्म देगी तुम उसे मुझे दे दोगे। मैं उसे अपने बच्चे की तरह पालूँगी।"

पति बहुत डरा हुआ था सो उसने उसकी हर बात मान ली। जब उसकी पत्नी को बच्चा हुआ तो वह जादूगरनी वहाँ तुरन्त ही प्रगट हो गयी। उसने उसका नाम रैपन्ज़िल रख दिया और उसे अपने साथ ले गयी। रैपन्ज़िल सूरज के नीचे एक बहुत सुन्दर बच्ची की तरह बढ़ने लगी।

जब वह बारह साल की हो गयी तो जादूगरनी ने उसे एक मीनार में बन्द कर दिया जो एक जंगल में थी और जिसका न तो

कोई दरवाजा ही था और न ही उसमें कोई सीढ़ी। बस उसमें बिल्कुल ऊपर की तरफ एक छोटी सी खिड़की थी। जादूगरनी को जब उसमें जाना होता था वह खिड़की के नीचे खड़ी हो जाती और कहती —

रैपन्ज़िल रैपन्ज़िल अपने बाल नीचे गिराओ

रैपन्ज़िल के बाल बहुत लम्बे और बहुत शानदार थे जैसे किसी ने सोना कात कर बनाये हों। जब वह जादूगरनी की आवाज सुनती तो वह अपनी चोटी के बाल खोलती और खिड़की में लगे हुए एक हुक में अटकाती और नीचे गिरा देती। वे बीस ऐल[17] लम्बे हो जाते और जादूगरनी उन्हें पकड़ कर ऊपर चढ़ जाती।

एक दो साल बाद एक राजकुमार उस जंगल में से मीनार के पास से गुजरा तो उसने एक गीत सुना। यह गीत रैपन्ज़िल गा रही थी। वह अपना खाली समय गा कर ही गुजार रही थी।

राजा का बेटा ऊपर चढ़ना चाहता था सो उसने उस मीनार में अन्दर जाने के लिये कोई दरवाजा ढूँढने लगा। पर उसे कोई दरवाजा दिखायी नहीं दिया सो वह वापस घर चला गया। फिर भी लड़की के गीत ने उसके मन को मोहित कर लिया था। अब वह रोज उस जंगल में आता और लड़की का गाना सुनता।

[17] Ell is a measure of length. 1 Ell = 45 inches. Therefore 20 Ell = 20 x 45 = 900 inches = 75 feet = 25 yards

एक दिन वह ऐसे ही वह एक पेड़ के पीछे खड़ा हुआ लड़की का गाना सुन रहा था कि उसने देखा कि जादूगरनी वहाँ आयी और बोली —

रैपन्ज़िल रैपन्ज़िल अपने बाल नीचे गिराओ

यह सुन कर रैपन्ज़िल ने अपनी चोटी खोल कर अपने बाल नीचे गिरा दिये और वह जादूगरनी उसके बाल पकड़ कर ऊपर चढ़ गयी। यह देख कर राजकुमार ने सोचा कि अगर ऊपर जाने का यही एक रास्ता है तो मैं अपनी किस्मत आजमा कर देखता हूँ।

सो अगले दिन जब कुछ अँधेरा सा हो गया तब वह राजकुमार उस मीनार के पास गया खिड़की के नीचे खड़ा हुआ और बोला —

रैपन्ज़िल रैपन्ज़िल अपने बाल नीचे गिराओ

तुरन्त ही सुनहरी बाल नीचे गिर पड़े और वह उनको पकड़ कर ऊपर चढ़ गया। राजकुमार को वहाँ देख कर पहले तो रैपन्ज़िल बहुत डर गयी क्योंकि ऐसा आदमी जैसा कि वह अपने सामने देख रही थी उसने पहले कभी नहीं देखा था।

राजकुमार उससे एक अच्छे दोस्त की तरह से बात करने लगा था। उसने लड़की से कहा कि वह उसको देख कर उसकी तरफ आकर्षित हो गया है कि वह अब उसे देखे बिना नहीं रह सकता। यह सुन कर रैपन्ज़िल का डर दूर हो गया और वह निडर हो गयी।

और जब राजकुमार ने उससे पूछा कि "क्या तुम मुझसे शादी करोगी?" तब उसने देखा कि वह नौजवान था सुन्दर था सो वह मुझे उस बुढ़िया से ज़्यादा प्यार करेगा। और उसने हॉ कर दी और अपना हाथ उसके हाथ में दे दिया।

रैपन्ज़िल बोली — "मैं तुम्हारे साथ अवश्य चलूँगी पर मुझे यह नहीं मालूम कि मैं नीचे उतरूँ कैसे। जब भी तुम आओ तो अपने साथ रेशम की एक लच्छी साथ ले कर आया करो। मैं उन लच्छियों से एक सीढ़ी बुन लूँगी और जब वह तैयार हो जायेगी तब मैं उस पर से हो कर मैं नीचे उतर जाऊँगी और फिर तुम मुझे अपने घोड़े पर बिठा कर ले जाना।"

दोनों इस बात पर राजी हो गये। अब राजकुमार हर शाम एक रेशम की लच्छी के साथ आने लगा। जादूगरनी लड़की से दिन में मिलने आती थी।

जादूगरनी को राजकुमार के आने का कुछ भी पता नहीं चला जब तक कि राजकुमारी ने जादूगरनी से यह नहीं पूछा — "ओ बूढ़ी गोथैल। ऐसा कैसे है कि तुम मुझे ऊपर खींचने के लिये उस राजकुमार से भारी लगती हो जो अभी यहॉ आने वाला है।"

जादूगरनी बड़ी ज़ोर से चिल्लायी — "ओ नीच लड़की। यह तू क्या कह रही है। मैंने सोचा था कि मैंने तुझे सारी दुनियॉ से अलग कर रखा है और उसके बाद भी तूने मुझे धोखा दिया।"

गुस्से में आ कर उसने रैपन्ज़िल के बाल पकड़े और उन्हें अपने बॉये हाथ के चारों तरफ दो बार लपेट दिये और दॉये हाथ से कैंची ले कर बाकी के बचे बाल काट दिये। उसकी सुन्दर लम्बी चोटी नीचे गिर पड़ी। वह इतनी कठोर थी कि वह रैपन्ज़िल को एक रेगिस्तान में ले गयी जहॉ उसे बड़े दुख और कष्ट में रहना पड़ा।

उसी दिन जिस दिन जादूगरनी उसे रेगिस्तान ले गयी थी उसने रैपन्ज़िल के बाकी के बचे हुए बाल खिड़की के हुक से अटका दिये। राजकुमार जब शाम को रैपन्ज़िल से मिलने के लिये आया और बोला —

रैपन्ज़िल रैपन्ज़िल अपने बाल नीचे गिराओ

तो जादूगरनी ने उसके वे बाल गिरा दिये। राजकुमार उन बालों को पकड़ कर ऊपर चढ़ गया पर जब वह ऊपर पहुँच तो उसे उसकी प्यारी रैपन्ज़िल कहीं दिखायी नहीं दी। वहॉ तो जादूगरनी बैठी हुई थी जो उसे नीच और जहरीली ऑखों से देख रही थी।

वह उसका मजाक बनाते हुए बोली — "तो तुम अपनी प्यारी से मिलने आये हो पर वह सुन्दर चिड़िया अब इस घोंसले में नहीं बैठती। उसे तो बिल्ली पकड़ कर ले गयी। और वह बिल्ली तो तुम्हारी भी ऑख निकाल लेगी।

रैपन्ज़िल को तुमने खो दिया है। अब तुम उसे कभी नहीं देख पाओगे।"

राजकुमार दुख की वजह से अपने आपे में नहीं था। निराश हो कर वह मीनार से कूद पड़ा। वह वहॉ से अपनी ज़िन्दगी बचा कर भाग तो लिया पर जिन कॉटों में वह गिर पड़ा था वे उसकी ऑखों में चुभ गये।

वह काफी कुछ अन्धा सा जंगल में भटकता रहा। बैरीज़ और जड़ें खा कर गुजारा करता रहा और रोने के अलावा कुछ नहीं करता था। इस तरह से कुछ साल गुजर गये।

आखिर वह उसी रेगिस्तान में आ गया जिसमें रैपन्ज़िल रहती थी। वहॉ वह अपने जुड़वॉ बच्चों के साथ रहती थी – एक बेटा एक बेटी। वहॉ उसने एक आवाज सुनी जो उसे कुछ जानी पहचानी सी लगी सो वह उधर की तरफ चल दिया।

जब वह रैपन्ज़िल के पास आया तो रैपन्ज़िल ने उसे पहचान लिया। वह उसके गले लग कर बहुत रोयी। उसकी ऑखों के दो ऑसू राजकुमार की दोनों ऑखों में पड़ गये तो उसकी ऑखें ठीक हो गयीं और वह उनसे पहले की तरह से ही देखने लगा।

फिर वह उसे अपने देश ले गया जहॉ राजा ने खुशी से उनका स्वागत किया। उसके बाद वह बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

11 राजा का बेटा जो किसी से नहीं डरता था[18]

एक बार की बात है कि एक राजा का एक बेटा था। वह घर में बैठ कर सन्तुष्ट नहीं था क्योंकि वह किसी से डरता ही नहीं था। एक दिन उसने सोचा "मैं दुनियॉ देखने चलता हूँ। वहॉ मेरा समय अच्छा गुजर जायेगा और साथ में मैं दुनियॉ की अजीब अजीब चीज़ें भी देख लूँगा।

सो उसने अपने माता पिता से इजाज़त ली और दुनियॉ देखने चल दिया। वह चलता रहा चलता रहा सुबह से ले कर शाम तक जो रास्ता भी उसको मिला क्योंकि सारे रास्ते उसके लिये समान थे।

अब ऐसा हुआ कि वह राक्षस के घर पर आ पहुँचा। क्योंकि वह बहुत थक गया था सो वह उसके दरवाजे पर ही बैठ गया और वहॉ आराम करने लगा।

वहॉ बैठ कर वह इधर उधर देखने लगा तो उसने आस पास में राक्षस के खेलने की चीज़ें पड़ी हुई देखीं। ये बहुत बड़ी बड़ी गेंदें थीं और नौ पिनें थीं जो आदमियों के बराबर लम्बी थीं।

वह कुछ देर तक तो उन्हें देखता रहा फिर उसको शौक लगा तो उसने उन नौ पिनों को सीधा खड़ा कर दिया और गेंदों को उनकी तरफ लुढ़का दिया। वह तो खुशी से चिल्ला पड़ा जब उन्होंने नौओं पिनों को लुढ़का दिया।

[18] The King's Son Who Feared Nothing. A folktale from Germany by Grimm Brothers

राक्षस ने शोर सुना अपना सिर खिड़की से बाहर निकाला और एक आदमी को देखा जो दूसरे आदमियों से ज़्यादा लम्बा नहीं था। उसके बाद भी वह उसकी नौ पिनों के साथ खेल रहा था।

वह चिल्लाया — "ओ छोटे कीड़े। तुम मेरी गेंदों से क्यों खेल रहे हो? किसने तुम्हें यह करने की ताकत दी?"

राजा के बेटे ने ऊपर देखा तो वहाँ राक्षस को देखा तो बोला — "ओ खरदिमाग। तू क्या सोचता है कि तेरी ही बाँहों में बहुत अधिक ताकत है मैं भी सब कुछ कर सकता हूँ जो भी मैं चाहूँ।"

यह सुन कर राक्षस नीचे आ गया और उसके गेंद फेंकने को तारीफ की नजर से देखने लगा फिर बोला — "ओ आदमी के बच्चे। अगर तू उस तरीके का है तो जा मेरे लिये "ज़िन्दगी के पेड़"[19] का एक सेब ला कर दे।"

राजा के बेटे ने उससे पूछा — "पर तू उसका क्या करेगा?"

राक्षस बोला — "मैं वह सेब अपने लिये नहीं चाहता पर मैं अपनी उस होने वाली दुलहिन के लिये चाहता हूँ जिसे यह चाहिये। मैं बहुत दुनियाँ घूमा हूँ पर मुझे वह पेड़ कहीं दिखायी नहीं दिया।"

राजा का बेटा बोला — "मैं उसे जल्दी ही ढूँढ लूँगा। पर मुझे पता नहीं कि उस पर से सेब तोड़ने के लिये मुझे क्या रोकेगा।"

राक्षस बोला — "क्या तुझे विश्वास है कि यह इतना आसान होगा? यह पेड़ जिस बागीचे में लगा हुआ है वह बागीचा लोहे की

[19] Tree of Life.

एक रेलिंग से घिरा हुआ है। रेलिंग के सामने बड़े बड़े जंगली जानवर बराबर बराबर बैठे हुए हैं। वे उसकी रखवाली करते हैं और किसी भी आदमी को अन्दर नहीं जाने देते।"

राजा का बेटा बोला — "पर वे मुझे जरूर जाने देंगे।"

राक्षस आगे बोला — "पर अगर तू किसी तरह से अन्दर चला भी गया और तूने सेब को पेड़ से लटका देख भी लिया फिर भी वह तेरा नहीं है। क्योंकि एक गोला उसके आगे लटकता है। जिसे भी सेब चाहिये उसे उस गोले में से हाथ डाल कर उसे तोड़ना पड़ता है और कोई भी अभी तक उसे तोड़ नहीं पाया है।"

राजा का बेटा बोला — "वह किस्मत वाला मैं हूँ।"

फिर उसने राक्षस से इजाज़त ली और पहाड़ और घाटियॉ मैदान और जंगल पार करता हुआ चल दिया। आखिर वह उस आश्चर्यजनक बागीचे तक आ गया।

वहॉ पहुँच कर उसने देखा कि बहुत सारे जंगली जानवर उस बागीचे के चारों तरफ बैठे हुए हैं पर उन सबके सिर झुके हुए हैं और वे सो रहे हैं। शायद वे उसके आने से जागे नहीं सो वह उनके ऊपर पैर रख कर बागीचे की रेलिंग कूद कर अन्दर चला गया।

उस बागीचे के बीचोबीच वह ज़िन्दगी का पेड़ खड़ा हुआ था और लाल रंग के सेब उसकी शाखाओं पर चमक रहे थे। वह उस पेड़ पर उसके तने से हो कर ऊपर चढ़ने लगा।

जब वह किसी सेब के लिये अपना हाथ बढ़ाता तो उसे उसके सामने एक गोला दिखायी देता। उसने उसके अन्दर बड़ी आसानी से अपना हाथ घुसा दिया और सेब तोड़ लिया।

पर जब वह अपनी बॉह वहॉ से खींचने लगा तो वह गोला उसके हाथ से कस कर लिपट गया और तुरन्त ही उसने अपने हाथ में एक बहुत बड़ी ताकत को महसूस किया।

जब वह सेब लिये हुए पेड़ पर से नीचे उतरा और बागीचे के बाहर आने लगा तो वह उसकी रेलिंग पर नहीं चढ़ा बल्कि बड़े दरवाजे से हो कर बाहर निकला।

उसे भी उसे एक बार से ज़्यादा नहीं हिलाना पड़ा। जैसे ही वह उसे दोबारा हिलाने वाला था कि वह एक बहुत ज़ोर की आवाज के साथ टूट कर गिर पड़ा।

वह बाहर चला गया। इस आवाज से बाहर जो शेर सो रहा था वह जाग गया और उसके पीछे कूद कर भागा – भयंकर गुस्से से नहीं बल्कि नम्रता से जैसे वह अपने मालिक के पीछे जा रहा हो।

राजा का बेटा वह सेब ले कर राक्षस के पास पहुॅचा और उसे दे दिया। वह बोला — "देखा न मैंने तुझे यह सेब कितनी आसानी से ला कर दे दिया।"

राक्षस तो सेब देख कर बहुत खुश हो गया कि उसकी इच्छा कितनी जल्दी और आसानी से पूरी हो गयी। वह तुरन्त ही उसे ले

कर अपनी होने वाली दुलहिन के पास भागा ताकि वह उस सेब को उसे दे सके।

राक्षस की होने वाली दुलहिन सुन्दर भी थी और अक्लमन्द भी। जब राक्षस ने उसे सेब दिया तो उसने देखा कि राक्षस के हाथ पर गोला तो था ही नहीं।

वह बोली — "मैं यह कभी विश्वास नहीं कर सकती कि यह सेब तुम मेरे लिये ले कर आये हो जब तक मैं तुम्हारी बॉह पर गोला न देख लूँ।"

राक्षस बोला — "अब तो मुझे घर जा कर उसे लाना ही पड़ेगा।" उसने सोचा कि "अगर वह गोला उस कमजोर आदमी ने अपनी मरजी से नहीं दिया तो मैं उसे उसकी कलाई से बलपूर्वक आसानी से निकाल लूँगा।"

सो घर जा कर उसने उस लड़के से वह गोला मॉगा पर उसने उसे देने से मना कर दिया। तो राक्षस ने कहा — "जहॉ सेब है वहीं यह गोला भी रहेगा इसलिये तुम यह गोला भी मुझे दो। अगर तुम अपनी इच्छा से इसे नहीं दोगे तो पहले मुझसे लड़ो।"

दोनों बहुत देर तक लड़ते रहे पर राक्षस राजा के बेटे को नहीं हरा सका क्योंकि उसे तो सेब के गोले की ताकत भी मिल चुकी थी। तो राक्षस ने एक तरकीब सोची।

वह बोला — "लड़ते लड़ते मुझे गर्मी लगने लगी है और मुझे लगता है तुम्हें भी। अब हम दोबारा लड़ना शुरू करें उससे पहले चलो नदी में नहा कर आते हैं।"

अब राजा के बेटे को तो झूठ का पता नहीं था सो वह उसके साथ चला गया। नदी में घुसने से पहले उसने अपने कपड़े उतारे तो साथ साथ उसने अपना वह गोला भी निकाल कर रख दिया जो उसे सेब के साथ मिला था। फिर वह नदी में कूद गया।

राक्षस ने तुरन्त ही वह गोला उठाया और उसे ले कर भाग गया। पर शेर जो यह चोरी देख रहा था राक्षस के पीछे पीछे भागा और उसके हाथ से वह गोला छीन लिया और अपने मालिक को ला कर दे दिया।

राक्षस एक ओक के पेड़ के पीछे छिप गया और जब राजा का बेटा अपने कपड़े पहने में लगा हुआ था उसने उसकी ऑखें निकाल कर उसे चौंका दिया। अब वह बेचारा राजा का बेटा अन्धा सा खड़ा हुआ था। वह नहीं जानता था वह क्या करे।

तभी राक्षस वापस आया और उसका हाथ पकड़ कर उसे वहॉ से ले चला जैसे वह उसकी सहायता करने ही आया हो। वह उसे एक पहाड़ी की चोटी पर ले गया और वहॉ छोड़ कर चला आया। उसने सोचा "जैसे ही वह दो कदम आगे बढ़ेगा तो वह चोटी से नीचे गिर जायेगा और मैं उसके हाथ से वह गोला निकाल लूँगा।"

पर राजा के बेटे के वफादार शेर ने अभी भी उसका साथ नहीं छोड़ा था। उसने उसके कपड़े पकड़ लिये और उसे पीछे खींच लिया। जब राक्षस मरे हुए आदमी के पास से चोरी करने आया तो उसने देखा कि उसकी चालाकी तो बेकार ही गयी।

वह गुस्से से बोला कि "क्या इस कमजोर बच्चे को हराने का कोई रास्ता नहीं है?" और उसे पकड़ कर खींच कर फिर से पहाड़ की चोटी पर ले गया पर शेर ने उसकी गन्दी चाल देख ली और अपने मालिक की जान बचा ली।

जब वे लोग किनारे के पास पहुँच गये और राक्षस ने राजा के बेटे का हाथ छोड़ कर वहाँ से जाना चाहा तो उसने राक्षस को पीछे से धक्का दे दिया जिससे वह पहाड़ी से नीचे गिर गया उसके टुकड़े टुकड़े हो गये और वह मर गया।

वफादार जानवर ने अपने मालिक को अन्दर की तरफ खींच लिया और उसे एक पेड़ के पास ले गया जिसके पास एक साफ पानी का नाला बह रहा था।

राजा का बेटा तो वहाँ बैठ गया पर शेर वहाँ लेट गया और अपने पंजों से मालिक के चेहरे पर उस नाले का पानी छिड़कने लगा। जैसे ही पानी ने उसकी आंखों के गड्ढों को छुआ तो उसे कुछ कुछ दिखायी देने लगा।

ऐसा इस बात से पता चला जब उसने एक छोटी सी चिड़िया के बारे में कहा जो पेड़ से टकरा कर जख्मी हो गयी थी। फिर वह

चिड़िया नाले में नहाने चली गयी और दो पेड़ों के बीच में से बिना उनमें से किसी एक से टकराये बिना ही ऊपर उड़ गयी जैसे उसकी दृष्टि वापस आ गयी हो।

उसने इसे भगवान का शुभ संकेत समझा और वह खुद भी उस नाले में चला गया और नहा धो कर बाहर निकला तो वह पूरी तरीके से देखने लगा था। राजा के बेटे ने भगवान को धन्यवाद दिया और फिर अपने शेर के साथ घूमने के लिये निकल पड़ा।

चलते चलते वह एक किले के सामने आ गया। यह किला एक जादुई किला था। उसके दरवाजे पर एक सुन्दर लड़की खड़ी हुई थी। वह बहुत काली थी। उसने राजा के बेटे से कहा — "आह। काश तुम मुझे इस बुरे जादू से छुटकारा दिला सकते।"

राजा के बेटे ने उससे पूछा — "मैं तुम्हारे लिये क्या करूँ?"

लड़की बोली — "अगर तुम तीन रात इस किले के बड़े कमरे में गुजार सको। तुम्हें उस समय में बिल्कुल नहीं डरना है। जब वे तुमको परेशान करेंगे तो उनको तुम्हारे डरने की एक भी आवाज सुनायी नहीं पड़नी चाहिये। तभी मेरे ऊपर से यह जादू हट पायेगा। तुम्हारी जान लेने की तो वे हिम्मत भी नहीं कर सकते।"

राजा का बेटा बोला — "मुझे किसी से डर नहीं लगता। भगवान की कृपा से मैं अपनी पूरी कोशिश करूँगा।"

सो वह खुशी खुशी किले के अबन्दर चला गया। जब अँधेरा हो गया तो वह वहाँ के बड़े कमरे में जा कर बैठ गया और इन्तजार करने लगा।

आधी रात तक तो बिल्कुल शान्ति रही पर उसके बाद तो वहाँ हलचल मच गयी। उस कमरे के हर कोने से छोटे छोटे शैतान निकलने लगे। वे लोग ऐसा दिखा रहे थे जैसे कि उन्होंने उसे देखा ही नहीं था। वे सब कमरे के बीच में आ कर बैठ गये। उन्होंने आग जला ली और जुआ खेलने लगे।

जब एक हार गया तो वह बोला — "यहाँ कुछ ठीक नहीं है। ऐसा लगता है कि यहाँ कोई दूसरा है जो हमारे जैसा नहीं है। यह उसी का कुसूर है कि मैं हार रहा हूँ।"

दूसरा बोला — "रुको। ओ तुम जो चूल्हे के पीछे बैठे हो। मैं अभी आता हूँ।"

चिल्लाहट और बहुत बढ़ गयी जिससे कोई भी बिना डरे हुए कुछ सुन ही नहीं सकता था। राजा का बेटा शान्त बैठा रहा। उसे डर नहीं लग रहा था। पर आखिर शैतान जमीन पर से उछले और उसके ऊपर आ गिरे। और वे क्योंकि बहुत सारे थे सो वह अपने आपको बचा भी नहीं सका।

वे उसे पकड़ कर फर्श पर चारों तरफ घुमाने लगे। उन्होंने उसे कुछ नोचा कुछ कुछ चुभोया मारा और यातना दी परन्तु उसके मुँह से एक आवाज नहीं निकली। सुबह सवेरे वे सब गायब हो गये।

तब तक वह भी इतना थक चुका था कि मुश्किल से ही अपने हाथ पैर हिला पा रहा था।

सुबह हुई तो वह लड़की उसके पास आयी। उसके हाथ में एक छोटी सी शीशी थी जिसमें ज़िन्दगी का पानी था। उसे राजा के बेटे के शरीर पर छिड़का तो उसका सारा दर्द जाता रहा और उसकी नसों में एक बहुत ही तेज़ शक्ति दौड़ गयी।

वह फिर बोली — "तुमने एक रात तो सफलतापूर्वक उस कमरे में गुजार ली। पर अभी तुम्हारे लिये गुजारने के लिये दो रातें और पड़ी हैं।"

फिर वह वहॉ से चली गयी तो जब वह जा रही थी तो उसने देखा कि उसके पैर तो सफेद हो गये थे। अगले दिन शैतान फिर वहॉ आये और अपना जुआ नये सिरे से खेलना शुरू कर दिया।

वे फिर राजा के बेटे के ऊपर गिर पड़े और उसे पहले दिन से भी ज़्यादा तंग किया मारा पीटा पर क्योंकि राजा के बेटे ने वह सब चुपचाप सह लिया सो उनको उसे छोड़ कर जाना पड़ा।

जब सुबह हुई तो वह लड़की फिर उसके पास आयी और उसे ज़िन्दगी के पानी से ठीक किया। पर जब वह जाने लगी तो वह यह देख कर बहुत खुश हुआ कि अब वह अपने हाथ की उॅगलियों तक सफेद हो गयी थी।

अब उसे वहॉ केवल एक रात और गुजारनी थी। पर यह रात तो उसके लिये सबसे ज़्यादा बुरी थी। वे शैतान वहॉ फिर आये

और बोले "क्या तुम अभी भी यहीं हो? अबकी बार हम तुम्हें इतना मारेंगे कि तुम्हारी सॉस ही रुक जायेगी।"

उन्होंने उसे कुछ कुछ चुभोया इधर से उधर फेंका उसकी बॉहें और टॉगें खींचीं। ऐसा लगता था जैसे वे उसके टुकड़े टुकड़े कर देंगे पर उसने अपने मुँह से ज़रा सी भी आवाज नहीं निकाली। आखिर वे सब शैतान वहॉ से चले गये पर वह वहॉ बेहोश ही पड़ा रह गया।

जब वह लड़की उस कमरे में आयी तो न वह वहॉ से हिल सका और न ही उसे देखने के लिये अपनी ऑख ही खोल सका। लड़की ने ज़िन्दगी का पानी उस पर छिड़का तो अचानक ही उसका सारा दर्द चला गया और वह अपने आपको ताजा और स्वस्थ महसूस करने लगा जैसे किसी लम्बी नींद से जागा हो।

जब उसकी ऑख खोली तो अपने सामने उस लड़की को बर्फ की तरह सफेद पाया। वह बोली — "उठो और अपनी तलवार इन सीढ़ियों पर तीन बार घुमाओ फिर सब कुछ ठीक हो जायेगा।" जब उसने ऐसा किया तो सारे किले के ऊपर जो जादू पड़ा हुआ था सब टूट गया।

वह लड़की तो एक बहुत अमीर राजा की बेटी थी। तभी नौकर आये और उन्होंने कहा कि बड़े कमरे में मेज पर खाना तैयार है। सो उन्होंने खाया और पिया। शाम को धूमधाम से उन दोनों की शादी हो गयी।

12 अक्लमन्द नौकर[20]

वह मालिक कितना खुशकिस्मत होगा और उसका घर कितना अच्छा होगा जब उसके घर में एक अक्लमन्द नौकर होगा जो उसकी सुनेगा तो पर उनको मानेगा नहीं क्योंकि उसके अपने पास बुद्धि है।

इसी तरह का एक होशियार जौन[21] था। एक बार उसके मालिक ने उसे एक खोयी हुई गाय को ढूँढने के लिये भेजा। वह बहुत देर तक बाहर रहा तो मालिक ने सोचा "यह वफादार जौन अपने काम के लिये कोई तकलीफ नहीं सोचता।"

पर वह तो बिल्कुल ही नहीं आया तो उसके मालिक को चिन्ता हुई कि वह कहीं किसी मुसीबत में न फॅस गया हो। सो वह खुद ही उसे ढूँढने के लिये चल दिया।

उसे ढूँढने में उसे बहुत देर लग गयी। आखिर उसे एक लड़का मैदान में इधर से उधर भागता नजर आ गया। मालिक उसके पास पहुँचा और उससे पूछा — "प्यारे जौन। क्या तुमको गाय मिली या नहीं जिसे मैंने तुम्हें ढूँढने के लिये भेजा था।"

जौन बोला — "नहीं मालिक। मुझे गाय तो नहीं मिली पर फिर मैंने उसे ढूँढना छोड़ दिया।"

"तब तुम फिर किसे ढूँढ रहे हो जौन?"

---

[20] The Wise Servant. A folktale from Germany by Brothers Grimm.

[21] John

"कुछ और अच्छी चीज़। और वह मुझे मिल गयी है।"

"और जौन वह क्या है?"

लड़का बोला — "तीन ब्लैकबर्ड्स।"

"और वे हैं कहॉ?"

अक्लमन्द लड़का बोला — "एक तो मेरे सामने है। दूसरी को मैं सुन सकता हूॅ और तीसरी के पीछे मैं भाग रहा हूॅ।"

इससे कुछ सीखो — " अपने आपको मालिक की बात मानने की तकलीफ मत उठाओ। पर वही करो जो तुम्हारे दिमाग में आये और जो तुम्हें अच्छा लगे। और फिर तुम उतनी अक्लमन्दी से ही काम करोगे जितनी अक्लमन्दी से छोटे जौन ने किया।

13 आलसी हैरी[22]

हैरी एक बहुत ही आलसी लड़का था। हालॉकि रोज उसे अपनी बकरी चराने के अलावा और कोई काम नहीं था पर वह जब भी अपने काम से घर वापस लौटता था तो बस कराहता रहता।

वह कहता — "ओह हर साल एक बकरी को पतझड़ में चराने के लिये ले जाना तो बड़ा भारी और थका देने वाला काम है। काश। मैं लेटा रह सकता और सो सकता। पर नहीं।

यहॉ तो हर समय ऑख खोल कर रखनी पड़ती है कि कहीं वह बकरी छोटे पौधों को नुकसान न पहुॅचाये। या फिर किसी बड़ी हैज के नीचे न दुबक जाये। और या फिर बिल्कुल ही न भाग जाये। ऐसे में कोई ज़रा सा भी आराम कैसे कर सकता है। किसी को शान्ति कैसे मिल सकती है।"

यही सब सोचता सोचता वह बैठ गया और सोचने लगा कि वह कैसे इस बोझे को हल्का कर सकता है। वह बहुत देर तक सोचता रहा पर सब बेकार। वह कोई भी उपाय न सोच सका। पर अचानक ही जैसे उसकी ऑखों के सामने से परदा हट गया।

[22] Lazy Harry. A folktale from Germany by Brothers Grimm

"मुझे पता चल गया कि मुझे क्या करना है। मैं उस मोटी ट्रीना[23] से शादी कर लेता हूँ। उसके पास भी एक बकरी है। वह अपनी बकरी के साथ साथ मेरी बकरी भी चरा लाया करेगी। और बस फिर मैं इस काम से बिल्कुल आजाद हो जाऊँगा।"

यह सोच कर हैरी उठ खड़ा हुआ और चल दिया। उसने सीधे अपनी सड़क पार की क्योंकि उसका घर ज़्यादा दूर नहीं था। वे सामने ही रहते थे।

उसने ट्रीना के माता पिता से उनकी मेहनती और गुणी बेटी का हाथ माँगा। माता पिता को अधिक नहीं सोचना पड़ा। उन्होंने सोचा "एक तरह की चिड़ियें एक साथ ही उड़ती हैं" सो उन्होंने तुरन्त ही हाँ कर दी।

इस तरह से मोटी ट्रीना उसकी पत्नी बन गयी। अब वह दोनों बकरियाँ चराने ले जाने लगी। अब हैरी का समय भी बहुत अच्छा गुजरने लगा। अब उसके पास कोई काम नहीं था सिवाय आराम करने के और वह भी अपने आलसीपने के कारण। वह कभी कभी शौक के लिये उसके साथ चला जाता था।

वह कहता कि "यह भी मैं इसलिये जाता हूँ ताकि बाद में मुझे आराम का अच्छा आनन्द मिल सके नहीं तो आराम करने का आनन्द ही चला जाता है।

[23] Trina – name of a fat girl

पर मोटी ट्रीना भी हैरी से कम आलसी नहीं थी। एक दिन उसने हैरी से कहा — "प्रिय हैरी। हमको अपनी ज़िन्दगी इतनी परेशान क्यों करनी चाहिये। इसकी कोई जरूरत ही नहीं है। हमको अपनी जवानी के दिन आनन्द से मनाने चाहिये।

क्यों न हम अपनी दोनों बकरियों को अपने पड़ोसी को दे दें जो हमें रोज सुबह सुबह चराने ले जाने के लिये परेशान करती हैं और हमारी मीठी नींद में खलल डालती हैं। उनके बदले में वह अपना शहद की मक्खियों का छत्ता हमें दे देगा।

हम उस शहद की मक्खियों के छत्ते को अपने घर के पीछे धूप में कहीं रख देंगे। फिर हमें उसकी चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। शहद की मक्खियों को इतनी देख भाल की जरूरत भी नहीं है। क्योंकि वे अपने आप ही उड़ कर चली जाती हैं और फिर अपने आप ही घर वापस लौट आती हैं। वे अपने आप ही शहद इकट्ठा कर लाती हैं।

हैरी तो अपनी पत्नी की अक्लमन्दी की बातें सुन कर बहुत खुश हुआ। वह बोला — "ट्रीना तुमने कितनी अक्लमन्दी की बात की है। हम तुम्हारी यह बात जल्दी से जल्दी करने की कोशि करेंगे। इसके अलावा शहद बकरी के दूध से ज़्यादा स्वादिष्ट होता है और उससे शरीर को भी ज़्यादा फायदा होता है। उसे ज़्यादा दिनों तक रखा भी जा सकता है।"

जब यह बात पड़ोसी से की गयी तो वह तो तुरन्त ही दो बकरियों के लिये अपना शहद की मक्खियों का छत्ता देने के लिये तैयार हो गया। अब क्या था मक्खियॉ सुबह से शाम तक कभी बाहर जातीं तो कभी अन्दर आतीं।

उन्हें कोई थकान नहीं होती थी। वे अपना छत्ता मीठे शहद से भरती रहतीं। अब पतझड़ में हैरी एक घड़ा भर कर शहद निकाल सकता था। उन्होंने अपना जग एक लकड़ी के तख्ते पर रख दिया था जो उनके सोने वाले कमरे की एक दीवार में लगा हुआ था।

उन्हें डर था कि उसे उनसे कोई चुरा कर न ले जाये या फिर

उसे चूहे न ढूँढ लें ट्रीना ने हैज़ल[24] की एक डंडी घर में ला कर रखी हुई थी जिसे वह अपने बिस्तर के पास ही रखती थी ताकि जरूरत के समय वह उसे आसानी से उठा सके और बिन बुलाये मेहमान को भगा सके।

आलसी हैरी दोपहर से पहले बिस्तर से उठता नहीं था। उसका कहना था "जो सुबह जल्दी उठता है वह अपनी अच्छी नींद खोता है।

एक सुबह जब अपने रोज के सोने के बाद हैरी अभी भी अपने पंखों के बिस्तर में लेटा हुआ था तो उसने अपनी पत्नी से कहा — "स्त्रियों को मीठी चीज़ों से बहुत प्यार होता है और तुम हमेशा ही

[24] Hazel. Hazel nuts are good to eat. See a picture of hazel tree and its fruits above.

अकेले में शहद का स्वाद लेती रही हो तो यह हमारे लिये ज़्यादा अच्छा रहेगा कि इससे पहले तुम सारा शहद खत्म कर लो हम शहद के छत्ते को एक बतख और उसके बच्चे के लिये बदल लें।

ट्रीना बोली — "पर इससे पहले हमें उनकी देखभाल करने के लिये अपना बच्चा चाहिये उससे पहले नहीं। क्या मैं उन छोटी बतखों की चिन्ता करूँगी और उनके ऊपर बिना किसी मतलब के अपनी ताकत खर्च करूँगी।"

हैरी ने पूछा — "तो क्या वह छोटा सा बच्चा उन बतखों को देखेगा। आजकल बच्चे माता पिता का कहना नहीं मानते क्योंकि वे अपने आपको अपने माता पिता से अधिक अक्लमन्द समझते हैं। उसी लड़के की तरह से जैसे उस लड़के को खोयी हुई गाय ढूँढने के लिये भेजा गया था पर वह तो तीन ब्लैकबर्ड्स ढूँढने लगा।[25]"

ट्रीना बोली — "अगर वह मेरा कहा नहीं करेगा तो उसका बुरा होगा। मैं एक डंडी लूँगी और उसे इतनी बार मारूँगी जितना कि मैं गिन भी नहीं सकती और उसकी खाल उधेड़ दूँगी।"

अपने इस आवेश में उसने हैज़ल की डंडी पकड़ ली और आगे बोली — "देखो हैरी। मैं उसके ऊपर इस तरह से गिर पड़ूँगी।" कह कर उसने अपना हाथ उठाया और दुखी हो कर उस शहद के घड़े में मार दिया जो उनके बिस्तर के ऊपर रखा हुआ था। घड़ा

[25] For this read the previous story – Story No 12.

दीवार से टकरा कर टूट कर टुकड़े हो कर नीचे गिर गया और उसका सारा शहद नीचे बिखर गया।

हैरी बोला — "लो वह पड़े हैं बतख और उसका बच्चा। अब उन्हें किसी की देख भाल की जरूरत नहीं है। पर यह अच्छी बात है कि घड़ा मेरे सिर पर नहीं गिरा। इसलिये हमको अपनी किस्मत से ही सन्तुष्ट रहना चाहिये।"

तभी उसने देखा कि घड़े के एक टुकड़े में अभी भी थोड़ा सा शहद है तो उसने अपना हाथ बढ़ा कर उसे उठा लिया और खुश होते हुए कहा — "प्रिये। अब इस आखिरी शहद को हम चटनी की तरह खायेंगे और इस डरावनी घटना के बाद थोड़ा और आराम करेंगे। इससे क्या फर्क पड़ता है अगर हम थोड़ी देर बाद उठते हैं। दिन तो काफी लम्बा है।"

ट्रीना बोली — "हॉ। हम लोग सही समय पर अपने लक्ष्य तक पहुॅच ही जायेंगे। तुम्हें मा लूम है उस घोंघे के बारे में जिसे एक शादी में बुलाया गया था। उसने चलना शुरू किया तो वह क्रिस्टिनिंग की रस्म के समय पहुॅचा। घर के सामने पहुॅच कर वह घर की बाड़[26] पर गिर पड़ा और बोला "तेज़ चलना अच्छा नहीं है।"

[26] Translated for the word "Fence". See its picture above.

14 ग्रिफ़िन[27]

एक बार की बात है कि एक राजा था पर वह कहॉ का राजा था और उसका नाम क्या था यह मुझे नहीं मालूम। उसके कोई बेटा नहीं था केवल एक बेटी थी जो हमेशा बीमार रहती थी। कोई डाक्टर उसका इलाज नहीं कर सका था।

तब किसी ने उससे कहा कि वह अपनी बेटी को सेब खिलाये तो वह ठीक हो जायेगी। सो उसने अपने राज्य में यह मुनादी पिटवा दी कि जो कोई भी उसकी बेटी के लिये कोई ऐसा सेब ला कर देगा जिसे वह खुद खा सके तो वह उससे अपनी बेटी की शादी कर देगा और राजा बना दिया जायेगा।

एक किसान को इस बात का पता चला। उसके तीन बेटे थे। उसने अपने सबसे बड़े बेटे से कहा — "जाओ बाहर बागीचे में जाओ और एक टोकरी भर कर वे सेब राजा के दरबार ले जाओ जो लाल लाल गालों की तरह से लाल हैं। हो सकता है कि राजकुमारी इन्हें मन भर कर खा सके और तब तुम उससे शादी कर के राजा बन सको।"

लड़के ने ऐसा ही किया और दरबार के लिये चल पड़ा। कुछ दूर जाने पर ही उसे एक लोहे का आदमी मिला। उसने उससे पूछा कि उसकी उस टोकरी में क्या था।

[27] The Griffin. A folktale from Germany by Brothers Grimm.

लड़का बोला — "मेंढक की टॉगें।"

इस पर वह छोटा आदमी बोला — "ठीक है। ऐसा ही हो।" और वह चला गया। आखिर उएले[28] राज दरबार पहुॅचा और पहरेदार से कहा कि वह राजकुमारी के लिये सेब ले कर आया है जिन्हें खा कर वह ठीक हो जायेगी।

यह सुन कर राजा बहुत खुश हुआ। उसने तुरन्त ही उएले को अन्दर भेजने के लिये कहा। उएले को अन्दर ले जाया गया। पर अफसोस जब राजा ने उससे अपनी टोकरी खोलने के लिये कहा तो उसमें तो मेंढक की टॉगें थी जो अभी भी चल रही थीं।

यह देख कर राजा बहुत गुस्सा हुआ और उसे घर के बाहर भेज दिया। जब वह घर पहुॅचा तो उसने अपने पिता को बताया कि उसके साथ क्या हुआ था।

पिता ने फिर अपने दूसरे बेटे सीमे[29] को बुलाया और उससे भी सेब राज दरबार ले जाने के लिये कहा। वह भी सेब ले कर चल दिया। उसको भी वही छोटा लोहे का आदमी मिला। उसने उससे भी वही पूछा "तुम्हारी टोकरी में क्या है।"

सीमे बोला — "साही के कॉटे।"

छोटा आदमी बोला — "ठीक है ऐसा ही हो।" यह कह कर वह चला गया। सीमे भी राज दरबार चला गया।

---

[28] Uele – the name of the eldest son of the peasant

[29] Seame – the name of the second son of the peasant

जब वह राजा के महल पहुँचा तो उसने कहलवाया कि वह राजकुमारी के लिये सेब ले कर आया है ताकि वह ठीक हो सके पर किसी ने उसे अन्दर जाने नहीं दिया। उन्होंने कहा कि एक आदमी पहले भी वहाँ आया था और उनका बेवकूफ बना कर चला गया है।

सीमे जिद करता रहा कि उसके पास सचमुच में सेब ही हैं इसलिये उसे अन्दर जाने की इजाज़त मिलनी ही चाहिये। किसी तरह से विश्वास दिला कर वह अन्दर गया और टोकरी खोली तो उसमें तो साही के काँटे ही निकले।

इस बात से राजा को बहुत गुस्सा आया सो उसने सीमे को कोड़े लगवा कर बाहर निकलवा दिया। जब वह घर पहुँचा तो जा कर उसने अपने पिता को बताया कि उसके साथ क्या हुआ था तो उसका तीसरा सबसे छोटा बेटा हैन्स जिसे सब लोग बेवकूफ हैन्स कह कर पुकारते थे वहाँ आया और बोला कि क्या वह सेब ले कर राजा के दरबार जा सकता था।

पिता बोला — "तुम तो इन्हें ले जाने के लिये बहुत ही ठीक आदमी हो। अगर ये होशियार लोग उसे सेब दे कर नहीं आ सके तो तुम तो जरूर ही दे आओगे।"

लड़के को विश्वास नहीं हुआ। वह बोला — "पिता जी मैं सच कह रहा हूँ मैं जाना चाहता हूँ।"

पिता गुस्से से बोला — "भाग जाओ यहॉ से ओ बेवकूफ। तुमको तब तक इन्तजार करना चाहिये जब तुम अक्लमन्द होते हो।" और पिता वहॉ से चला गया।

लड़के ने पीछे से पिता की कमीज पकड़ ली और बोला — "सचमुच पिता जी मैं जाना चाहता हूँ।"

पिता बोला — "ठीक है तुम जा सकते हो। पर तुम भी जल्दी ही घर वापस आ जाओगे।"

लड़का तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया और खुशी से कूद पड़ा। यह देख कर उसका पिता फिर बोला — "यह क्या। तुम तो बेवकूफों की तरह से बर्ताव कर रहे हो। दिनों दिन तुम बेवकूफ ही होते जा रहे हो।"

हैन्स ने पिता की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया क्योंकि वह अपनी खुशी बर्बाद करना नहीं चाहता था। उस समय रात हो रही थी सो उसने सोचा कि वह कल सुबह तक इन्तजार करेगा क्योंकि अभी तो वह राज दरबार नहीं जा सकता था।

उस रात वह सारी रात नहीं सो सका। अगर उसकी थोड़ी बहुत देर के लिये ऑख लगी भी तो उसे सपने में सोने चॉदी के महल, सुन्दर लड़कियॉ और शाही चीज़ें ही दिखायी दीं।

सुबह सवेरे ही वह राज दरबार की ओर चल दिया। थोड़ी दूर पर ही उसे भी वह लोहे वाला आदमी मिला। वह उसके पास आया और उससे पूछा कि वह अपनी टोकरी में क्या ले जा रहा था।

लड़के ने जवाब दिया कि वह राजकुमारी के लिये सेब ले कर जा रहा था जिन्हें खा कर राजकुमारी ठीक हो सकती थी। आदमी बोला — "ऐसा ही हो और ऐसा ही रहे।"

पर जब हैन्स दरबार पहुँचा तो वहाँ उसे कोई भी किसी भी तरह अन्दर न जाने दे। उनका कहना था कि दो आदमी पहले भी यहाँ आ चुके हैं जिन्होंने उनसे कहा कि वे सेब ले कर आये है पर उनकी टोकरियों में मेंढक की टाँगें और साही के काँटे थे।

हैन्स बराबर अपनी इस बात पर कायम रहा कि उसके पास न तो मेंढक की टाँगें हैं और न ही साही के काँटे। उसके पास तो देश के सबसे सुन्दर और मीठे सेब थे। क्योंकि वह बहुत अच्छी तरह और नम्रता से बोल रहा था सो वे यह सोचने पर मजबूर हो गये कि यह लड़का झूठ नहीं बोल रहा। सो उन्होंने उसे अन्दर भेज दिया।

लड़का सच बोल रहा था। जब वह अन्दर गया और राजा ने उससे टोकरी खोलने के लिये कहा तो उसकी टोकरी में से सुनहरे पीले सेब बाहर निकल पड़े।

राजा तो उन्हें देख कर बहुत खुश हो गया। उसने उनमें से कुछ सेब अपनी बेटी के लिये ले जाने के लिये कहा और तब तक इन्तजार किया जब तक वहाँ से उनके असर की कोई खबर नहीं आती। जल्दी ही उसके पास उनके असर की खबर भी आ गयी । पर तुम क्या सोचते हो यह खबर देने कौन आया?

वह उसकी अपनी बेटी खुद थी। जैसे ही उसने वे सेब खाये वह ठीक हो गयी थी। वह अपने पलंग से कूद पड़ी और यह खबर देने के लिये खुद ही चली आयी।

उसे देख कर राजा की खुशी का वर्णन नहीं हो सकता। पर अब वह अपना राज्य हैन्स को देना नहीं चाहता था। उसने हैन्स से कहा कि वह उसके लिये एक नाव बनाये जो पानी की बजाय धरती पर ज़्यादा तेज़ चलती हो।

हैन्स उसकी शर्त पर राजी हो गया और अपने घर चला गया। उसने अपने पिता को जा कर बताया कि उस दिन उसके साथ क्या कुछ घटा था।

सो उसके पिता ने अपने बड़े बेटे को जंगल से लकड़ी काटने के लिये भेजा ताकि वह वैसी ही नाव बना सके जैसै कि राजा ने हैन्स से बनाने के लिये कहा था। वहॉ उएले ने खूब मेहनत से काम किया और सारे समय सीटी बजाता रहा।

दोपहर के समय जब आसमान में सूरज बिल्कुल ऊपर था तो वही लोहे का आदमी फिर वहॉ आया और उससे पूछा — "तुम यहॉ क्या कर रहे हो?"

उएले बोला — "मैं रसोईघर के लिये लकड़ी के कटोरे बना रहा हूँ।"

वह आदमी बोला — "ठीक है ऐसा ही हो और ऐसा ही रहे।"

शाम तक उएले ने सोचा कि उसने नाव बना ली है पर जब वह उसमें बैठने लगा तो वह तो एक कटोरा था। अगले दिन सीमे जंगल गया तो उसके साथ भी ठीक ऐसा ही हुआ जैसा उएले के साथ हुआ था।

तीसरे दिन बेवकूफ हैन्स गया। उसने सारा दिन बहुत मेहनत से काम किया। उसके लकड़ी काटने की गूँज सारे जंगल में सुनायी पड़ रही थी। सारे समय वह खुशी से गाता और सीटी बजाता रहा।

दोपहर को जब दिन की गर्मी सबसे ज़्यादा थी तो वह छोटा लोहे का आदमी उसके पास आया और उससे पूछा "यह तुम क्या बना रहे हो?"

हैन्स बोला — "मैं एक ऐसी नाव बना रहा हूँ जो पानी के बजाय सूखी धरती पर अधिक तेज़ चल सके। और जब मैं इसे खत्म कर लूँगा तो फिर मैं राजा की बेटी से शादी कर पाऊँगा।"

आदमी बोला — "ऐसा ही होगा और ऐसा ही रहेगा।" कह कर वह चला गया।

शाम को जब सूरज सुनहरी हो गया तब तक हैन्स ने ऐसी नाव बना कर खत्म कर ली थी। वह उसमें बैठा और महल की तरफ चल दिया। नाव तो इतनी तेज़ जा रही थी जैसे हवा। राजा ने उसे दूर से आते देख लिया था पर अभी भी वह अपनी बेटी को उसे देने के लिये तैयार नहीं था।

उसने उससे कहा — "यह तो ठीक है पर तुम्हें मेरा एक काम और करना पड़ेगा। कल सुबह को मेरे सौ खरगोश तुम्हें घास के मैदान में ले जाने पड़ेंगे और शाम के बाद उन्हें घर लाना पड़ेगा। और उनमें से अगर एक भी खो गया तो तुम्हें मेरी बेटी नहीं मिलेगी।"

हैन्स मान गया और अगले दिन वह राजा के सौ खरगोशों को घास के मैदान की तरफ ले गया। उनकी उसने ठीक से देखभाल की कि उनमें से एक भी खरगोश नहीं भागा।

कुछ घंटे बीत जाने के बाद महल से एक नौकरानी आयी और हैन्स से कहा कि वह उसे एक खरगोश तुरन्त ही दे दे। हैन्स जानता था कि इस सबका क्या मतलब है सो उसने कहा कि वह नहीं दे सकता। अगले दिन राजा खरगोश का सूप बना कर अपने मेहमान के आगे रख सकता है।

नौकरानी उसके मना करने पर विश्वास नहीं करती थी सो वह उसे लेने के लिये उस पर गुस्सा होती रही। इस पर हैन्स बोला कि अगर राजकुमारी खुद आ कर खरगोश माँगे तो वह उसे खरगोश दे सकता है। नौकरानी ने यह बार जा कर महल में कही तो राजकुमारी खुद वहाँ आयी।

इस बीच वह लोहे वाला आदमी हैन्स के पास आया और उससे पूछा कि वह वहाँ क्या कर रहा था। उसने कहा कि वह सौ खरगोशों की रखवाली कर रहा था। उसे देखना था कि उनमें से

कोई खरगोश वहॉ से भागे नहीं। तभी वह राजा की बेटी से शादी कर सकेगा।

आदमी बोला — "ठीक है। लो तुम यह सीटी लो। अगर कोई भी खरगोश तुम्हारे पास से भागे तो यह सीटी बजा देना वह तुरन्त ही तुम्हारे पास वापस भाग आयेगा।"

सो जब राजकुमारी खरगोश को लेने आयी तो हैन्स ने एक खरगोश उसके ऐप्रन में डाल दिया। पर जब वह करीब करीब सौ कदम वहॉ से चली गयी तो उसने सीटी बजा दी और खरगोश राजकुमारी के ऐप्रन में से कूद कर हैन्स के पास आ गया।

और इससे पहले कि वह घूम कर देखती वह अपने झुंड में जा कर मिल गया।

जब शाम हो गयी तो हैन्स ने एक बार फिर सीटी बजायी। सारे खरगोश उसके पास दौड़ कर आ गये और वह उन सबको महल ले गया। राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ कि हैन्स ने कैसे घास के मैदान से पूरे के पूरे सौ खरगोश बिना एक भी खोये हुए घर ले आया।

पर वह अभी भी अपनी बेटी उसे देने को तैयार नहीं था। उसने कहा कि वह उसे ग्रिफ़िन पक्षी की पूँछ का एक पंख ला कर दे। हैन्स एक बार फिर चल दिया और सीधा चलता चला गया।

शाम को वह एक किले में आ पहुँचा। वहाँ पहुँच कर उसने रात को ठहरने की जगह माँगी। किले के मालिक ने उसे खुशी से जगह दे दी और उससे पूछा — "तुम कहाँ जा रहे हो?"

"मैं ग्रिफ़िन को जा रहा हूँ।"

"अरे ग्रिफ़िन को। मैंने सुना है कि वह सब जानता है। मेरी एक लोहे की आलमारी की चाभी खो गयी है मेहरबानी कर के उसके बारे में पूछते आना कि वह कहाँ है।"

हैन्स बोला — "जरूर। मैं जरूर पूछता आऊँगा।"

अगले दिन सुबह ही फिर अपनी यात्रा पर चल दिया। चलते चलते वह एक और किले में आया। वहाँ भी वह रात को ठहरा। जब वहाँ के लोगों को पता चला कि ग्रिफ़िन के पास जा रहा है तो उन्होंने उससे कहा कि उनके घर में एक बेटी है जो बहुत बीमार है। उन्होंने उसके सारे इलाज कर लिये हैं पर वह किसी भी इलाज से अभी तक ठीक नहीं हुई।

मेहरबानी कर के अगर ग्रिफ़िन से वह यह पता लगा दे कि ऐसी कौन सी चीज़ है जो उसे ठीक कर देगी। हैन्स बोला कि वह बड़ी खुशी इस बात का पता लगा देगा और वह फिर आगे चल दिया।

आगे चल कर उसे एक झील मिली। वहाँ कोई नाव तो नहीं थी पर एक बहुत लम्बा आदमी खड़ा था जो लोगों को झील के पार ले जाता था।

आदमी ने हैन्स से पूछा — "तुम किधर जा रहे हो?"

"ग्रिफ़िन के पास।"

आदमी बोला — "मेहरबानी कर के उससे यह पूछना कि मुझे हर रोज हर आदमी को झील के पार क्यों ले कर जाना पड़ता है।"

"जरूर जरूर। मैं जरूर यह बात उससे पूछूँगा।"

लम्बे आदमी ने उसे अपने कन्धे पर बिठाया और झील पार ले गया। आखिर हैन्स ग्रिफ़िन के घर पहुँचा। उस समय ग्रिफ़िन तो घर पर नहीं था केवल उसकी पत्नी ही घर पर थी।

उसकी पत्नी ने हैन्स से पूछा कि उसे ग्रिफ़िन से क्या चाहिये। उसने उसे सब कुछ बताा कर कहा कि उसे ग्रिफ़िन की पूँछ का एक पंख चाहिये। और एक किला था जहाँ पर वहाँ के मालिक की तिजोरी की चाभी खो गयी थी तो उसने यह पूछा है कि वह कहाँ है।

इसके अलावा एक दूसरे किले में एक लड़की बीमार है। उन लोगों ने यह पूछा है कि वह कैसे ठीक होगी। उसके पास ही एक झील है जहाँ एक बहुत लम्बा आदमी हर एक को झील पार कराता है। वह यह पूछ रहा था कि उसे हर रोज हर आदमी को झील क्यों पार करानी पड़ती है।

ग्रिफ़िन की पत्नी बोली — "देखो मेरे अच्छे दोस्त। कोई ईसाई ग्रिफ़िन से बात नहीं कर सकता क्योंकि वह उन सबको नष्ट कर देता है। पर अगर तुम चाहो तो तुम यहाँ उसके पलंग के नीचे छिप

जाओ और रात को जब वह गहरी नींद सो जाये तो उसकी पूँछ से एक पंख निकाल लेना। और दूसरी बातें जो तुमने मुझसे पूछी है वे मैं उससे खुद ही पूछ कर तुम्हें बताऊँगी।"

हैन्स इस बात से सन्तुष्ट हो गया और ग्रिफ़िन के पलंग के नीचे छिप गया। थोड़ी देर में ग्रिफ़िन आया तो आते ही बोला — "प्रिये मुझे यहाँ किसी ईसाई की खुशबू आ रही है।"

उसकी पत्नी ने कहा — "हाँ यहाँ एक आया तो था पर वह तो चला गया।" यह सुन कर ग्रिफ़िन ने फिर कुछ नहीं कहा।

बीच रात में जब ग्रिफ़िन गहरी नींद सो रहा था और खर्राटे मार रहा था तो हैन्स उठा और उसने ग्रिफ़िन की पूँछ से एक पंख निकाल लिया। ऐसा करते ही ग्रिफ़िन की आँख खुल गयी।

वह बोला — "प्रिये यहाँ कोई ईसाई है। कोई मेरी पूँछ खींच रहा था।"

पत्नी बोली — "निश्चित रूप से तुम सपना देख रहे होगे। मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि एक ईसाई यहाँ आया जरूर था पर वह चला गया। उसने मुझसे कई बातें कहीं। एक किले में उनकी तिजोरी की चाभी खो गयी है और वह उन्हें नहीं मिल रही।"

ग्रिफ़िन बोला — "ओह बेवकूफ। वह चाभी तो खेत के लकड़ी के मकान में उसके दरवाजे के पीछे एक लट्ठे के नीचे पड़ी है।"

दूसरे सवाल कि एक किले में एक लड़की है जो बीमार है वह कैसे ठीक होगी के जवाब में उसने कहा — "ओ बेवकूफों। उसके घर के नीचे वाले कमरे की सीढ़ियों के नीचे एक मेंढक ने उसके बालों से अपना घर बना लिया है। अगर वह वहॉ से अपने बाल निकाल लेगी तो वह ठीक हो जायेगी।

तीसरे सवाल कि झील के किनारे एक लम्बे आदमी को हर रोज लोगों को झील क्यों पार करानी पड़ती है के जवाब में उसने कहा — "ओह बेवकूफ। अगर वह किसी एक आदमी उस झील में डुबो दे तो फिर उसे किसी और को झील पार नहीं कराना पड़ेगा।"

अगले दिन ग्रिफ़िन उठा और चला गया। उसके बाद हैन्स नीचे से निकल कर बाहर आया। अब उसके पास ग्रिफ़िन का पंख था और उसकी तीनों समस्याओं के हल थे। ग्रिफ़िन की पत्नी ने उसे यह सब एक बार और बता दिया ताकि वह भूल न जाये।

अब हैन्स वहॉ से चल दिया। सबसे पहले वह झील के पास आया तो उस आदमी ने उससे पूछा कि क्या वह उसके बारे में पता लगा कर आया। हैन्स ने कहा कि हॉ वह पता लगा कर आया है पर पहले वह उसे उस झील के पार उतार दे वह उसे वह बात तब बतायेगा।

आदमी ने उसे झील के उस पार उतार दिया तब हैन्स ने उसे बताया कि वह एक आदमी को झील में डुबो दे उसके बाद उसे यह काम नहीं करना पड़ेगा। आदमी तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया

और उसने कृतज्ञता दिखाने के लिये कहा कि वह उसे झील के उस पार एक बार और ले जाना चाहता है।

पर हैन्स ने उससे कहा कि नहीं वह उसे अब और कष्ट देना नहीं चाहता। वह उससे बहुत सन्तुष्ट था और वह अपने रास्ते चला गया।

चलते चलते वह उस किले में आया जहॉ वह लड़की बीमार पड़ी थी। क्योंकि वह चल नहीं सकती थी इसलिये उसने उसे अपने कन्धों पर उठाया और नीचे वाले कमरे की तरफ जो सीढ़ियॉ जाती थी उनसे हो कर उसे नीचे ले गया।

वहॉ पहुँच कर उसने नीचे वाली सीढ़ी पर मेंढक के घर को तोड़ दिया और उसे लड़की के हाथ में दे दिया। जैसे ही उसने ऐसा किया लड़की उसके कन्धे से कूद कर नीचे खड़ी हो गयी और उसके आगे आगे सीढ़ियॉ चढ़ने लगी। उन लोगों ने बहुत सारे सोने चॉदी की भेंटें दीं और और भी बहुत कुछ दिया जो उसने चाहा।

वहॉ से वह फिर आगे चला तो वह उस किले में आया जिसके मालिक की तिजोरी की चाभी नहीं मिल रही थी। वहॉ आ कर वह तुरन्त ही लकड़ी के घर की तरफ गया और दरवाजे के पीछे रखे लकड़ी के एक लट्ठे के नीचे से उसकी चाभी निकाल लाया।

वह भी हैन्स से बहुत खुश था और उसने भी उसे अपनी तिजोरी में से बहुत सारा सोना दिया और और भी बहुत सारी चीज़ें दीं जैसे गाय भेड़ें बकरियॉ आदि।

जब हैन्स राजा के सामने सोना चॉदी और इन सब चीज़ों के साथ पहुॅचा पहुॅचा तो राजा ने आश्चर्य से पूछा कि वे सब उसे कहॉ और कैसे मिल गये। तब हैन्स ने उसे बताया कि ग्रिफ़िन ने जिसने जो मॉगा वह सब उसे दिया।

तो राजा ने सोचा कि वह भी ऐसी चीज़ का फायदा उठा सकता था सो वह भी ग्रिफिन से मिलने चल दिया। पर जब वह झील पर पहुॅचा तो हैन्स के बाद वही सबसे पहला आदमी था जो झील पार उतरना चाहता था।

वह आदमी उसे झील पार उतारने के लिये अपने कन्धे पर बिठा कर ले गया और उसे झील में डुबो दिया और चला गया। राजा झील में डूब गया उधर हैन्स ने राजकुमारी से शादी कर ली और वहॉ का राजा बन गया।

15 आलसी कातने वाली[30]

एक बार की बात है कि एक जगह एक पति पत्नी रहते थे। आदमी की पत्नी इतनी आलसी थी कि वह कोई काम नहीं करती थी। जो कुछ भी उसका पति उसे कातने के लिये देता वह उसे कातती नहीं थी। और जो वह कात लेती थी वह उसे लपेटती नहीं थी बल्कि उसे उलझा हुआ एक ढेर के रूप में छोड़ देती।

अगर उसका पति उसे इस बात के लिये डॉटता तो वह उसे दो की जगह चार बात सुनाती। वह कहती मैं इसे कैसे लपेटूँ मेरे पास कोई रील तो है ही नहीं। तुम अभी अभी जाओ और जंगल से मेरे लिये एक रील ले कर आओ।"

पति कहता — "अगर केवल यही बात है तो मैं अभी जंगल जाता हूँ और रील बनाने के लिये कुछ लकड़ी ले कर आता हूँ।"

तब उसकी पत्नी डर जाती कि अगर वह रील बनाने के लिये लकड़ी ले आयेगा तो उसे रील भी बनानी पड़ जायेगी और उस पर धागा भी लपेटना पड़ जायेगा। उसके बाद फिर धागा कातना पड़ेगा।

उसने कुछ देर सोचा और फिर एक शानदार विचार उसके दिमाग में आया। उसने छिप कर जंगल तक पति का पीछा किया और जब वह लकड़ी काटने के लिये एक पेड़ पर चढ़ गया वह

[30] The Lazy Spinner. A folktale from Germany by Brothers Grimm.

उसके नीचे एक झाड़ी में छिप गयी जहॉ वह उसे नहीं देख सकता था और चिल्लायी —

वह जो रील के लिये लकड़ी काटता है मर जायेगा
और जो उसे लपेटेगा वह भी नष्ट हो जायेगा

आदमी ने यह सुना और एक पल के लिये अपनी कुल्हाड़ी रोक ली। उसने सोचा कि इसका क्या मतलब था। फिर बोला — "हलो। इस सबका क्या मतलब है। क्या मेरे कान बज रहे हैं। मैं ऐसी बेकार की बातों से घबराऊॅगा नहीं।"

सो उसने फिर से अपनी कुल्हाड़ी सॅभाली और फिर से लकड़ी काटना शुरू कर दिया तो नीचे से फिर से आवाज आयी —

वह जो रील के लिये लकड़ी काटता है मर जायेगा
और जो उसे लपेटेगा वह भी नष्ट हो जायेगा

वह बेचारा यह सुन कर फिर से रुक गया। अबकी बार वह डर गया और इस बात पर विचार करने लगा। पर फिर कुछ पल बाद उसने कुल्हाड़ी फिर से उठा ली और लकड़ी काटने लगा। पर फिर से वही आवाज आयी —

वह जो रील के लिये लकड़ी काटता है मर जायेगा
और जो उसे लपेटेगा वह भी नष्ट हो जायेगा

बस उसके लिये इतना ही काफी था। उसका इरादा बदल गया था। वह जल्दी जल्दी पेड़ पर से नीचे उतरा और अपने घर चला

गया। पत्नी भी झाड़ी में से बाहर निकल आयी और वहॉ से जितनी तेज़ी से उससे हो सका उतनी तेज़ी से वहॉ से भाग गयी ताकि वह अपने पति से पहले पहुॅच जाये।

सो जब पति ऑगन तक पहुॅचा तब तक वह अपने चेहरे पर ऐसा भोलापन ले कर बाहर निकल आयी जैसे कि कुछ हुआ ही न हो और पति से पूछा — "क्या तुम रील बनाने के लिये कोई अच्छी सी लकड़ी ले आये?"

वह बोला — "नहीं। धागे को नहीं लपेटा जायेगा।" और उसे जंगल में हुई सारी घटना बता दी और उसे इस बारे में फिर तंग नहीं किया।

कुछ समय बाद पति ने फिर से घर के बिगड़े हुए रूप के बारे में शिकायत करनी शुरू कर दी। वह बोला — "प्रिये। यह कुछ अच्छा नहीं लगता कि यह सारा धागा घर भर में इस तरह सब जगह फैला रहे।"

पत्नी बोली — "मैं बताती हूॅ। क्योंकि अभी हमारे पास कोई रील नहीं है तो तुम ऊपर वाले कमरे में जाओ और मैं नीचे खड़ी हो जाती हूॅ। फिर मैं तुम्हें धागा नीचे से ऊपर फेंकूंगी और तुम मुझे धागा ऊपर से नीचे फेंकना इस तरह से धागे की लच्छी बन जायेगी।"

पति बोला — "हॉ यह तरकीब तो काम करेगी।"

सो दोनों ने ऐसा ही करना शुरू किया गया और जब ऐसा हो गया तो पति ने कहा कि "धागे की तो अब लच्छियॉ बन गयी हैं अब हमें इन्हें उबाल देना चाहिये।"

यह सुन कर पत्नी फिर परेशान हो गयी पर उसने कहा — "हॉ हॉ हम लोग इन्हें कल सुबह उबाल देंगे।" पर मन ही मन वह अब कोई दूसरी चाल सोच रही थी।

सुबह सवेरे ही उसने आग जलायी और उसके ऊपर एक बर्तन पानी उबलने के लिये रख दिया और उसमें बजाय लच्छियों को रखने के रस्सी रख दी।

उसके बाद वह पति के पास गयी जो अभी तक बिस्तर में ही लेटा हुआ था और बोली — "मुझे जरूरी बाहर जाना है तो तुम ज़रा बर्तन देख लो। लच्छियॉ उसमें उबल रही हैं। ज़रा ध्यान रखना सुबह होने वाली है अगर उनको मुर्गे के बॉग देने से पहले बर्तन में से न निकाला गया तो वह रस्सी हो जायेंगी।"

पति बोला "ठीक है।" और इधर उधर घूमने की बजाय वह तुरन्त ही उठा और बाहर बर्तन की तरफ चल दिया। पर वह जब तक बर्तन के पास पहुँचा और उसमें झॉका तो वह तो यह देख कर डर गया कि उसमें तो रस्सी पड़ी थी।

यह देख कर वह तो चूहे की तरह से स्थिर खड़ा रह गया। उसको लगा कि उसने अपना काम ठीक से नहीं किया। भविष्य के लिये उसने धागे से तौबा कर ली और फिर कभी धागे और कातने

का नाम भी नहीं लिया। पर तुमको तो यह पता चल ही गया न कि वह एक नीच स्त्री थी।

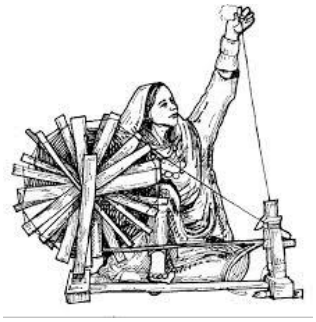

16 राजा थ्रशबीयर्ड[31]

एक राजा था और उसके एक बेटी थी जो बहुत बहुत सुन्दर थी पर वह घमंडी बहुत थी और इतनी घमंडी थी कि उसे कोई भी लड़का पसन्द नहीं आता था। जितने भी राजकुमार या राजा उससे शादी करने की इच्छा से उसके पास आये पर उसने सबको सबको केवल भगा ही नहीं दिया बल्कि उनका मजाक भी बनाया।

एक बार राजा ने एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया तो उसमें बहुत सारे नौजवानों को बुलाया जो उसकी बेटी से शादी करना चाहते थे। उन सबको उनके पद के अनुसार बुलाया गया।

पहले राजा लोग आये। उनके बाद ग्रैंड ड्यूक्स आये। फिर राजकुमार आये। इनके बाद अर्ल, बैरन और सबसे बाद में जनता में से लोग आये।[32]

तब राजकुमारी को बारी बारी से इन सबको दिखाया गया पर हरएक में उसने कोई न कोई कमी निकाल दी। कोई मोटा था तो कोई वाइन की बोतल था। कोई लम्बा था तो उसके लिये उसने कहा "लम्बे और पतले की जरूरत नहीं है।"

तीसरा बहुत छोटा था तो उसके लिये कहा "छोटा और मोटा तो कोई काम जल्दी कर ही नहीं सकता।"

---

[31] King Thrushbeard. A folktale from Germany by Brothers Grimm. Thrush is a bird. It means that who has a beard like thrush bird.

[32] Grand Dukes, Princes, Earls, Barons, and Gentry

चौथा बहुत पीला था तो उसके लिये उसने कहा "यह तो मौत की तरह से पीला है।" पॉचवॉ कुछ लाल था उसके लिये उसने कहा "यह तो लड़ने वाला मुर्गा है।" छठा सीधा नहीं खड़ा था उसके लिये उसने कहा "ताजा लकड़ी का लट्ठा चूल्हे के पीछे।"

इसी तरह से हर उम्मीदवार के लिये उसके पास कहने के लिये कुछ न कुछ था पर एक बहुत अच्छे राजा को देख कर तो उसने उसकी हॅसी उड़ा कर बहुत देर तक आनन्द लिया। उसका पद बहुत ऊॅचा था पर उसकी ठोड़ी ज़रा सी मुड़ी हुई थी।

उसे देख कर वह बड़े ज़ोर से बोली — "अरे इसकी ठोड़ी तो थ्रश चिड़िया की चोंच की तरह से मुड़ी हुई है।" और उसी समय से उसका नाम राजा थ्रशबीयर्ड पड़ गया।

पर बूढ़े राजा ने जब यह देखा कि उसकी बेटी ने सिवाय उनकी हॅसी उड़ाने के और कुछ नहीं किया और सब उम्मीदवारों का अपमान किया तो वह बहुत गुस्सा हुआ। उसने निश्चय किया कि वह उसकी शादी सबसे पहले भिखारी से कर देगा जो भी उसके दरवाजे पर आये।

कुछ दिनों के बाद उसके दरवाजे पर एक वायोलिन बजाने वाला आया और उसकी खिड़की के नीचे थोड़ी सी भीख मॉगने के लिये गाने लगा। जब राजा ने उसे सुना तो उसने उसे अपने पास लाने के लिये कहा।

भिखारी बेचारा अपने फटे कपड़ों में लिपटा हुआ राजा के सामने आया और उसने राजा और उसकी बेटी के सामने गाया। जब उसका गाना खत्म हो गया तो उसने राजा से छोटी सी भेंट माँगी।

राजा बोला — "मैं तुम्हारे गाने से इतना खुश हूँ कि मैं तुम्हें अपनी बेटी देता हूँ।"

राजा की बेटी तो यह सुन कर काँप गयी पर राजा ने कहा — "मैंने यह कसम खायी है कि जो भी पहला पुरुष भिखारी मेरे दरवाजे पर आयेगा मैं उसी को तुम्हें दे दूँगा और मैं उस कसम को रखूँगा।"

बेटी ने ने इसके विरोध में कुछ भी कहा वह सब बेकार था। पुजारी बुलाया गया और उसकी उसी जगह उस वायलिन बजाने वाले भिखारी से शादी कर दी गयी।

जब उसकी शादी हो गयी तो राजा बोला — "अब तुम भिखारी की पत्नी हो सो अब तुम्हारा मेरे महल में रहना उचित नहीं है। अब तुम अपने पति के साथ अपनी ससुराल जाओ।"

भिखारी ने उसका हाथ पकड़ा और उसे महल के बाहर ले कर चल दिया। उसे भिखारी के पीछे पीछे पैदल जाना ही पड़ा। चलते चलते वे एक जंगल में पहुँचे तो उसने भिखारी से पूछा — "यह सुन्दर जंगल किसका है?"

भिखारी ने कहा — "राजा थ्रशबीयर्ड का। अगर तुमने उसे अपने पति की तरह स्वीकार कर लिया होता तो आज यह तुम्हारा होता।"

राजा की बेटी बोली — "आह। मैं कितनी बदकिस्मत हूँ। काश मैंने राजा थ्रशबीयर्ड को चुन लिया होता।"

चलते चलते वे एक बहुत बड़े घास के मैदान में आये। राजा की बेटी ने फिर पूछा — "यह इतना सुन्दर घास का मैदान किसका है?"

भिखारी बोला — "राजा थ्रशबीयर्ड का। अगर तुमने उसे अपने पति की तरह स्वीकार कर लिया होता तो आज यह तुम्हारा होता।"

राजा की बेटी बोली — "आह। मैं कितनी बदकिस्मत हूँ। काश मैंने राजा थ्रशबीयर्ड को चुन लिया होता।"

चलते चलते वे एक बहुत बड़े शहर में आये। राजा की बेटी ने फिर पूछा — "यह इतना सुन्दर इतना बड़ा शहर किसका है?"

भिखारी बोला — "राजा थ्रशबीयर्ड का। अगर तुमने उसे अपने पति की तरह स्वीकार कर लिया होता तो आज यह तुम्हारा होता।"

राजा की बेटी बोली — "आह। मैं कितनी बदकिस्मत हूँ। काश मैंने राजा थ्रशबीयर्ड को चुन लिया होता।"

वायलिन बजाने वाला भिखारी बोला — "यह मुझे तुम्हारे मुँह से सुनने में अच्छा नहीं लग रहा कि हर बार तुम दूसरे पति की इच्छा करती हो। क्या मैं तुम्हारे लिये काफी अच्छा नहीं हूँ?"

आखिर वे एक छोटी सी झोंपड़ी के सामने आये तो राजा की बेटी के मुँह से निकला — "ओह कितनी छोटी सी झोंपड़ी। यह किसकी है।"

वायलिन बजाने वाला बोला — "यह मेरा घर है और तुम्हारा भी। आज से यहाँ हम दोनों साथ साथ रहेंगे।"

राजा की बेटी को उस झोंपड़ी में अन्दर जाने के लिये थोड़ा झुकना पड़ा क्योंकि उसका दरवाजा बहुत नीचा था। उसने पूछा — "यहाँ नौकर कहाँ हैं?"

भिखारी बोला — "कैसे नौकर? यहाँ तो तुम्हें जो कुछ चाहिये वह काम अपने आप ही करना पड़ेगा। लेकिन अभी के लिये तो तुम पहले आग जलाओ और मेरे खाने के लिये पानी गरम होने के लिये रखो। मैं बहुत थक गया हूँ।"

पर राजा की बेटी को तो आग जलाना और खाना बनाना आता नहीं था सो भिखारी को सब कुछ ठीक से करने के लिये उसकी सहायता करनी पड़ी। जो कुछ थोड़ा बहुत उन्होंने बनाया उसे खा कर वे सोने चले गये।

भिखारी को राजा की बेटी को सुबह उठाना ही पड़ा ताकि वह घर की देखभाल कर सके।

कुछ दिन तक तो वे इस तरह से ठीक से रहे इसके बाद उनके खाने का सामान खत्म हो गया। भिखारी ने कहा — "प्रिये अब हम लोग यहॉ केवल खा पी कर और कुछ भी कमाये बिना नहीं रह सकते। कुछ कमाने के लिये अब तुम्हें टोकरियॉ बुननी पड़ेंगी।"

वह बाहर गया और विलो के पेड़ की कुछ टहनियॉ काट कर ले आया। उसने उसकी टोकरियॉ बनानी शुरू कीं तो विलो की सख्त टहनियों ने उसके हाथ घायल कर दिये।

यह देख कर भिखारी बोला — "ऐसे नहीं चलेगा। मैं सोचता हूॅ कि इस काम को करने की बजाय तुम्हारे लिये कातने का काम ठीक रहेगा सो उसने कातने का काम करना शुरू किया तो उसकी कोमल उंगलियॉ भी कटने लगीं। उनसे खून बहने लगा।

आखिर भिखारी ने अपनी पत्नी से कहा — "तुमसे कोई काम नहीं होने का। मैंने तुमको लेने का यह सौदा बेकार ही किया। अब मैं सोचता हूॅ कि मैं मिट्टी के बर्तन बनाना शुरू कर दूॅ। तुम उन्हें बाजार में बैठ कर बेचना शुरू कर देना।"

राजा की बेटी ने सोचा कि अगर कहीं मेरे किसी राज्य वाले ने मुझे बाजार में बैठे और मिट्टी के बर्तन बेचते वाली हालत में देख लिया तो वह मेरी हॅसी उड़ायेगा। पर उसके पास और कोई चारा नहीं था या फिर वह भूख से मरती।

पहले दिन उसने बहुत अच्छे बर्तन बेचे क्योंकि लोग एक स्त्री से वह बर्तन खरीदने में ज़्यादा रुचि रखते थे। स्त्री सुन्दर थी सो उन्होंने उसकी मनमानी पैसे दिये। बहुतों ने उसे बर्तन के पैसे दिये पर बर्तन वहीं छोड़ गये। सो जब तक बर्तन चले वे उनके पैसों से अपने घर का काम चलाते रहे।

उसके बाद पति ने बहुत सारी नये प्लेट प्याले आदि खरीद लिये। इनको ले कर राजा की बेटी बाजार गयी और वहॉ उसने उन्हें बेचने के लिये सजा कर रखे ही थे कि पता नहीं कहॉ से एक घुड़सवार आया और उन्हें तोड़ फोड़ कर चला गया।

वह वहीं रोने लगी कि अब वह क्या करे। वह नहीं जानती थी अब उसका क्या होगा। उसका पति क्या कहेगा।

रोते रोते वह घर पहुॅची और जा कर अपने पति को सारा किस्सा बताया कि उन चीनी के बर्तनों के साथ क्या हुआ। पति उस पर नाराज होते हुए बोला — "ऐसी चीनी मिट्टी की बनी चीज़ों को ले कर बाजार में कोने पर कौन बैठता है। खैर अब तुम यह रोना धोना छोड़ो। मुझे अब यह बात ठीक से पता चल गयी है कि तुम कोई साधारण से साधारण काम भी नहीं कर सकतीं।

मैं राजा साहब के महल गया था। मैंने वहॉ जा कर उनके रसोईघर में पूछा कि उनके रसोईघर में कोई जगह खाली है कि नहीं। उन्होंने तुम्हें वहॉ काम दे देने का वायदा किया है। इस तरह से तुमको वहॉ अच्छा खाना बिना पैसे के ही मिल जायेगा।"

इस तरह राजा की बेटी अब राजा के रसोईघर की नौकरानी हो गयी। वह वहॉ के रसोइये की सहायता करती। उसे जब वह रसोइया बुलाता तो उसके पुकारने पर जाना पड़ता और गन्दे से गन्दा काम करना पड़ता। अपनी दोनों जेबों में उसने एक एक बर्तन बॉध रखा था जिनमें वह वहॉ का बचा हुआ खाना घर ले जाती थी।

अब ऐसा हुआ कि राजा के सबसे बड़े बेटे की शादी थी तो वह गरीब लड़की बड़े कमरे के दरवाजे पर चली गयी और शादी देखने लगी।

जब सारी मोमबत्तियॉ जल गयीं और एक से एक सुन्दर लोग उसमें घुसने लगे तो वह सारा कमरा जगमगा उठा तो उसे अपनी किस्मत याद आयी और वह अपने जिद्दीपने और घमंड को कोसने लगी जिसने उसे इतनी नीची दशा और गरीबी में ला दिया था।

स्वाददार खाने की प्लेटें अन्दर जा रही थीं जिनसे उड़ती हुई खुशबू उसकी नाक तक पहुॅच रही थी। नौकरों ने खाने के कुछ टुकड़े उसकी ओर उछाल दिये। उसने उनको लपक लिया और उन्हें घर ले जाने के लिये अपनी शीशियों में रख लिया।

उसी समय राजा का बेटा भी कमरे में घुसा। उसने मखमल और सिल्क के कपड़े पहने हुए थे और गले में सोने की जंजीरें पहने थीं। जब उसने एक सुन्दर स्त्री दरवाजे के पास खड़ी हुई देखी तो

उसने उसका हाथ पकड़ लिया और नाचना शुरू कर दिया होता पर उसने मना कर दिया। वह डर से सिकुड़ गयी थी।

वह उसे देख कर इसलिये डर गयी थी कि वह उसे पहचान गयी थी। वह तो राजा थ्रशबीयर्ड था – उससे शादी की इच्छा रखने वाला जिसे उसने डॉट फटकार कर भगा दिया था।

उसने उसकी पकड़ से छूटना चाहा पर कोई फायदा नहीं हुआ। वह उसे खींच कर कमरे में ले गया पर वह डोरी जिससे उसकी शीशियॉ उसकी जेबों से बॅधी हुई थीं टूट कर खुल गयी।

शीशियॉ नीचे गिर कर टूट गयीं। उनका पानी बह निकला और उनमें रखे खाने के टुकड़े नीचे फर्श पर बिखर गये। और जब लोगों ने यह तमाशा देखा तो वे तो बड़ी ज़ोर से खिलखिला कर हॅस पड़े।

सबको इस तरह हॅसता देख कर वह तो शरम के मारे जैसे हजारों मील नीचे धरती में गड़ गयी। वह वहॉ से दरवाजे की तरफ भागी पर सीढ़ी के पास खड़े हुए एक आदमी ने उसे पकड़ लिया। और जब उसने उसकी ओर देखा तो फिर से राजा थ्रशबीयर्ड था।

उसने उससे बड़ी नर्मी से कहा — "तुम मुझसे डरो नहीं। मैं ही तुम्हारा वायलिन बजाने वाला हूॅ जो तुम्हारे साथ इतने दिनों से उस छोटी सी झोंपड़ी में रह रहा हूॅ। मुझे उसका वेश रखना पड़ा।

मैं ही वह घुड़सवार था जो तुम्हारे चीनी मिट्टी के बर्तनों पर से हो कर चला गया था। यह सब मैंने तुम्हारा घमंड तोड़ने के लिये

किया तुमको नम्र बनाने के लिये किया तुमको सजा देने के लिये किया क्योंकि तुमने मेरा मजाक बनाया।"

यह सुन कर वह फूट फूट कर रो पड़ी और बोली — "मैंने तुम्हारे साथ बहुत गलत किया है। मैं तुम्हारी पत्नी बनने योग्य नहीं हूँ।"

लेकिन राजा ने कहा — "तुम दुखी मत हो। बुरे दिन अब खत्म हो गये। आज हम अपनी शादी मना रहे हैं।"

तभी कुछ दासियाँ वहाँ आयीं और उसे बढ़िया दुलहिनों वाले कपड़े पहनाने के लिये ले गयीं। उसके माता पिता और दरबार के लोग भी वहाँ आ गये और राजकुमारी को बधाई दी।

काश मैं भी वहाँ होता...

17 सुनहरी बतख[33]

एक बार की बात है कि एक आदमी था जिसके तीन बेटे थे। उनमें से उसके तीसरे सबसे छोटे बेटे का नाम था खरदिमाग। उसको हर समय डॉट हर काम पर डॉट पड़ती।

एक दिन कुछ ऐसा हुआ कि वह जंगल लकड़ी काटने जाना चाहता था तो जाने से पहले उसकी मॉ ने उसे एक बहुत बढ़िया केक और एक बोतल वाइन की दी ताकि वह भूख और प्यास से परेशान न हो।

जब वह जंगल पहुॅचा तो उसे एक सफेद आदमी मिला। उसने लड़के को "गुड मौर्निंग" कहा और कहा — "क्या तुम मुझे उस केक में से एक छोटा सा टुकड़ा दोगे जो तुम्हारी जेब में रखा है और थोड़ी सी वाइन पीने के लिये दोगे। मुझे बहुत भूख और प्यास लगी है।"

पर इस होशियार बेटे ने जवाब दिया — "अगर मैं तुम्हें केक और वाइन दूॅगा तो मेरे लिये तो कुछ बचेगा ही नहीं। अपने रास्ते जाओ बाबा।"

कह कर वह उस बूढ़े को वहीं खड़ा छोड़ कर जंगल की तरफ चला गया।

---

[33] The Golden Goose. A folktale of Germany by Andrew Lang. Taken from : https://fairytalez.com/the-golden-goose/

जंगल में जा कर उसने एक पेड़ काटना शुरू किया। पर पेड़ को असल में काटने से पहले उसने पेड़ पर एक बहुत हल्की सी कुल्हाड़ी चलायी जिससे उसकी बॉह बुरी तरह से जख्मी हो गयी। उसे अपने काम को छोड़ कर घर जाना पड़ा और उसकी मरहम पट्टी करवानी पड़ी।

उसके बाद उसका दूसरा बेटा जंगल में लकड़ी काटने गया। उसकी मॉ ने उसको एक अच्छी केक और एक बोतल वाइन की दिन के खाने के लिये दी जैसे कि उसने अपने बड़े बेटे को दी थी।

इस बेटे को भी रास्ते में एक छोटा बूढ़ा मिला। उसने भी लड़के को "गुड मौर्निंग" कहा और कहा — "क्या तुम मुझे उस केक में से एक छोटा सा टुकड़ा दोगे जो तुम्हारी जेब में रखा है और थोड़ी सी वाइन पीने के लिये दोगे। मुझे बहुत भूख और प्यास लगी है।"

पर इस होशियार बेटे ने उसे कुछ ज़्यादा अच्छा जवाब दिया जो उसके बड़े भाई ने दिया था — "अगर मैं तुम्हें कुछ भी दूँगा तो वह मेरे लिये नहीं बचेगा। इसलिये अपने रास्ते जाओ बाबा।"

कह कर वह भी उस बूढ़े को वहीं खड़ा छोड़ कर जंगल की तरफ चला गया। वह भी एक पेड़ काटने के लिये उस पर चढ़ा तो उसने केवल कुछ बार ही कुल्हाड़ी पेड़ पर मारी होगी कि उसकी टॉग बहुत ज़ोर से जख्मी हो गयी और उसे घर वापस लौटना पड़ा।

यह देख कर खरदिमाग बोला — "पिता जी आप मुझे आज्ञा दीजिये अब मैं जंगल से लकड़ी काट कर लाऊँगा।"

उसके पिता ने जवाब दिया — "बेटा तुम्हारे दोनों बड़े भाई जंगल से जख्मी हो कर लौटे हैं। तुम अभी छोड़ो। तुम्हें तो अभी इसके बारे में कुछ पता भी नहीं है।"

पर खरदिमाग उनके पीछे इतना पड़ा कि उनको उसे जंगल जा कर लकड़ी काटने की आज्ञा देनी ही पड़ी। पिता ने कहा — "ठीक है जाओ। शायद जब तुम इससे जख्मी हो जाओ तभी तुम्हें अक्ल आयेगी।" उसकी मॉ ने उसे पानी से बनी और राख में पकी एक सादा सी केक दी और पीने के लिये खट्टी बीयर[34] दी।

जब वह जंगल पहुॅचा तो उसको भी वह सफेद बूढ़ा मिला तो उसने उसे नमस्ते की और कहा — "क्या तुम मुझे थोड़ी सी केक और अपनी बोतल में से कुछ पीने को दोगे। मुझे बहुत भूख और प्यास लगी है।"

खरदिमाग बोला — "मेरे पास केवल राख में पकी हुई केक है और कुछ खट्टी बीयर है। अगर तुम्हें यह पसन्द हो तो हम दोनों मिल कर इसे खा सकते हैं।"

सो वे दोनों बैठ गये और खरदिमाग ने अपनी केक निकाली तो उसने देखा कि उसकी राख में पकायी गयी केक तो बहुत बढ़िया वाली केक में बदल चुकी है। और उसकी खट्टी बीयर बहुत बढ़िया वाइन में। दोनों ने मिल कर उस खाने को बहुत आनन्द से खाया और पिया।

[34] A kind of light alcoholic drink

खाने पीने के बाद बूढ़ा बोला — "अब मैं तुम्हारी किस्मत बदलने जा रहा हूँ क्योंकि तुम बहुत दयालु दिल के हो और तुम्हारे पास थोड़ा भी हो तो तुम उसे लोगों के साथ बॉटने के लिये तैयार रहते हो। देखो वह सामने एक पुराना पेड़ खड़ा है। तुम उसको काट दो तो तुम्हें उसकी जड़ में कुछ मिलेगा।" इतना कह कर बूढ़ा चला गया।

खर दिमाग ने तुरन्त ही उस पेड़ को काट गिराया। जब वह पेड़ कट गया तो उसे उसकी जड़ में एक बतख मिली जिसके पंख असली सोने के थे। उसने उसे वहॉ से उठा लिया और उसे एक सराय में ले गया जहॉ उसे रात बितानी थी।

उधर सराय के मालिक की तीन बेटियॉ थीं। जब उन्होंने बतख देखी तो उनकी उत्सुकता बढ़ गयी कि यह आश्चर्यजनक चिड़िया क्या कर सकती थी। उन तीनों लड़कियों में से हर एक उस चिड़िया का एक पंख लेना चाहती थी।

सबसे बड़ी वाली बेटी ने सोचा "इसमें कोई शक नहीं है कि मुझे इसका एक पंख चुराने का कोई न कोई मौका मौका मिल ही जायेगा।

जैसे ही पहली बार खरदिमाग कमरे से बाहर गया तो उसने उस बतख को उसके पंखों से पकड़ लिया। पर यह क्या उसकी उँगलियॉ तो उसके पंखों से ही चिपक गयी थीं। वह अपना हाथ ही उस बतख पर से नहीं हटा सकी।

जल्दी ही वहॉ सराय के मालिक की दूसरी बेटी भी आ पहुँची। उसने सोचा कि वह भी बतख से उसका एक पंख ले कर आती है। पर मुश्किल से उसने अपनी बहिन को छुआ ही था कि वह भी उससे चिपक गयी।

आखीर में तीसरी बेटी भी उस बतख का एक पंख लेने के लिये आयी पर तभी उसकी दोनों बहिनें चिल्लायीं — "रुक जाओ। भगवान के लिये वहीं रुक जाओ।"

छोटी बहिन यह नहीं समझ पायी कि उसकी दोनों बहिनें उसको वहीं रुक जाने के लिये क्यों कह रही हैं। उसने सोचा कि जब वे दोनों वहॉ हैं तो उसे भी वहॉ क्यों नहीं होना चाहिये। सो वह भी उनके ऊपर कूद गयी। जैसे ही वह उनके ऊपर कूदी वह भी उनसे चिपक गयी। इस तरह तीनों ने वह रात बतख से चिपके चिपके गुजारी।

अगली सुबह खरदिमाग ने अपनी बतख अपनी बगल में दबायी और वहॉ से चल दिया। उसने उन तीनों लड़कियों पर ध्यान ही नहीं दिया जो उसकी बतख से चिपकी हुई उससे लटकती हुई उसके पीछे पीछे चली आ रही थीं।

उनको उसके पीछे भागना पड़ रहा था – दॉये या बॉये जिधर भी वह जाता। वे एक मैदान से गुजरे तो वहॉ उनको एक पादरी मिला। वह उस जुलूस को देखते ही चिल्लाया — "अरे तुमको शर्म आनी चाहिये ओ बहादुर लड़कियों। तुम्हारा एक नौजवान के पीछे

इस तरह मैदानों से हो कर भागने का क्या मतलब है। क्या तुम इसे उचित व्यवहार कहती हो?"

इतना कह कर उसने सबसे छोटी लड़की का हाथ पकड़ कर उसे छुड़ाने की कोशिश की पर जैसे ही उसने उसका हाथ पकड़ वह भी उससे चिपक गया और उन तीनों के साथ भागने लगा।

कुछ देर बाद ही एक क्लर्क उधर से जा रहा था तो उसे यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि एक आदमी तीन लड़कियों के पीछे भाग रहा था। उसने पादरी से पूछा — "ओह आप सब इतनी जल्दी जल्दी कहॉ जा रहे हैं। भूलना नहीं कि आज चर्च में एक क्रिस्टिनिंग की रस्म है।"

कह कर वह पादरी के पीछे भाग लिया और उसकी बॉह पकड़ ली। वह भी पादरी से चिपक गया। अब उस लड़के के पीछे पॉच लोग भागे जा रहे थे।

उसी समय दो किसान अपना काम खत्म कर के अपने अपने हल लिये हुए आ रहे थे। पादरी ने उन्हें देखा तो उन्हें पुकारा और उनसे विनती की वे उसे और क्लर्क को उनसे छुड़ा लें। पर जैसे ही उन्होंने क्लर्क को छुआ तो वे भी उससे चिपक गये। अब खरदिमाग और उसकी बतख के पीछे सात लोग भाग रहे थे।

कुछ समय बाद वे एक राजा के शहर में आ गये जिसकी बेटी बहुत गम्भीर रहती थी कि कोई उसे अब तक हॅसा ही नहीं सका

था। इसलिये ढिंढोरा पिटवा रखा था कि जो कोई भी उसकी बेटी को हॅसायेगा वह अपनी बेटी की शादी उस आदमी से कर देगा।

जब खरदिमाग ने यह सुना तो वह अपनी बतख और उसके पीछे लगी रेलगाड़ी को ले कर उसके सामने से गुजरा। जैसे ही उसने एक के पीछे दूसरा सात आदमी भागते हुए देखे तो वह तो ठहाका मार कर हॅस पड़ी और फिर अपने आपको रोक ही नहीं सकी।

इस तरह खरदिमाग की शादी राजा की बेटी से हो गयी। पर राजा का उस जैसे आदमी को अपनी बेटी देने का मन नहीं हुआ। उसने कई तरह के अड़ंगे लगाये। उसने कहा कि पहले वह कोई ऐसा आदमी ढूँढ कर लाये जो एक कमरा भर कर शराब पी जाये।

खर दिमाग के दिमाग में एक ही आदमी आया और वह था वह बूढ़ा जो उसे जंगल में मिला था। सो वह जंगल में उसी जगह गया जहॉ उसने पेड़ काटा था। वहॉ उसको एक आदमी बड़ा उदास सा चेहरा लिये बैठा मिल गया।

खरदिमाग ने उससे पूछा कि वह इतना उदास क्यों था। ऐसी क्या चीज़ थी जो उसके दिल को परेशान किये हुए थी। वह बोला — "मुझे बहुत प्यास लगी है। मुझे मालूम नहीं कि मैं अपनी इस प्यास को कैसे बुझाऊॅ।

ठंडा पानी तो मैं बिल्कुल पी ही नहीं सकता। हालॉकि मैंने एक बैरल भर कर वाइन पी ली है पर यह तो मेरी प्यास बुझाने के लिये एक बूॅद के समान है। मेरी प्यास कैसे बुझेगी?"

खर दिमाग बोला — "शायद मैं आपकी कुछ सहायता कर सकूँ। आप मेरे साथ आइये आप वहाँ मन भर कर पी पायेंगे।"

कह कर वह उसे राजा के उस कमरे के तक ले गया जिसमें उसकी वाइन भरी हुई थी। वह आदमी शराब की बड़ी बड़ी शीशियों के सामने बैठ गया और दिन खत्म होने से पहले पहले उस कमरे में रखी सारी वाइन पी गया।

उसके बाद खरदिमाग ने राजकुमारी को माँगा पर राजा को अभी भी एक ऐसे आदमी को अपनी बेटी देने का विचार अच्छा नहीं लगा जिसे सब लोग खर दिमाग कहते हों। सो उसने किसी और शर्त के बारे में सोचना शुरू कर दिया।

उसने खरदिमाग से कहा कि वह उसकी बेटी से शादी करने से पहले उसके लिये एक ऐसा आदमी ला कर दे जो रोटी का एक पहाड़ खा सके। खरदिमाग ने सोचने में अधिक समय नहीं लगाया। वह फिर से वहीं उसी पेड़ के पास पहुँच गया जिसे उसने काटा था।

उसने फिर से वहाँ एक आदमी बैठा देखा जिसने अपने शरीर के चारों तरफ एक पेटी बाँध रखी थी। वह बहुत परेशान लग रहा था। पूछने पर उसने कहा — "मैंने अभी अभी एक ओवन भर कर रोटियाँ खायी हैं। पर उनका क्या। उससे मुझे क्या फायदा क्योंकि मेरा पेट तो अभी भरा ही नहीं। वह तो अभी भी खाली है। अगर मुझे भूख से मरना नहीं है तो मुझे इस पेटी को बाँधे रखना ही पड़ेगा।"

खरदिमाग यह सुन कर बहुत खुश हुआ। वह बोला — "अब आपको भूखा रहने की कोई जरूरत नहीं है। आप मेरे साथ चलिये मैं आपको पेट भर खाना खिलाऊँगा।" और वह उस आदमी को ले कर राजा के दरबार में आ गया।

राजा ने अपने राज्य का सारा आटा मँगवा कर रखा हुआ था और उस सबकी रोटी बनवा कर रखी हुई थी। पर उस जंगल से आये हुए आदमी ने रोटी के पहाड़ के सामने अपनी सीट लगवायी और शाम तक वे सारी रोटियाँ खा कर खत्म कर दीं।

तीसरी बार खरदिमाग ने अपनी दुलहिन को माँगा तो राजा फिर से कुछ ना नुकुर करने लगा। फिर बोला — "अच्छा तो तुम मुझे एक ऐसा जहाज़ ला कर दो जो पानी और जमीन दोनों पर चल सके। जब तुम एक ऐसे जहाज़ पर सवार हो कर आओगे तब मैं तुम्हें अपनी बेटी बिना किसी और शर्त के दे दूँगा।"

यह सुन कर खरदिमाग फिर से उसी पेड़ के पास चल दिया। वहाँ पहुँचने पर उसे वहाँ वही बूढ़ा दिखायी दिया जिससे उसने अपना खाना बाँटा था।

वह बोला — "मैंने तुम्हारे लिये पिया और खाया अब मैं तुमको ऐसा जहाज़ भी दूँगा जैसा तुम्हें चाहिये। मैंने तुम्हारे लिये यह सब इसलिये किया क्योंकि तुमने मेरे साथ इतनी दया का बर्ताव किया।"

यह कह कर उसने खरदिमाग को एक जहाज़ दिया जो पानी और जमीन दोनों पर चल सकता था।

अब जब राजा ने वह जहाज़ देखा तो वह उसे अपनी बेटी देने से मना नहीं कर सका। उसने अपनी बेटी की शादी खरदिमाग से बड़ी धूमधाम से की। राजा के मर जाने के बाद खरदिमाग ही राजा भी बन गया और अपनी पत्नी के साथ बहुत समय तक खुशी खुशी रहा।

18 किसान की होशियार बेटी[35]

एक बार की बात है कि एक बहुत ही गरीब किसान था। उसके पास कोई जमीन नहीं थी पर उसके पास एक छोटा सा मकान था और एक बेटी थी।

एक दिन लड़की ने अपने पिता से कहा कि "हमको राजा से कोई नयी साफ की गयी जमीन मॉगनी चाहिये।" जब राजा ने उनकी गरीबी के बारे में सुना तो उसने उन्हें जमीन का एक छोटा सा टुकड़ा दे दिया।

पिता और बेटी दोनों ने मिल कर उस पर मक्का लगाने की सोचा। जब उन्होंने अपना सारा खेत खोद लिया तो उनको अपने खेत में असली सोने की एक ओखली मिली।

पिता ने बेटी से कहा — "क्योंकि हमारे लौर्ड इतने अच्छे और दयावान हैं कि उन्होंने हमें यह खेत दिया तो हमें यह ओखली उन्हें दे देनी चाहिये।"

पर लड़की इस बात पर राजी नहीं थी। उसने कहा — "पिता जी। अगर हमने यह ओखली बिना मूसल के उन्हें दी तो ठीक नहीं होगा। उन्हें इसे देने से पहले हमें मूसल भी प्राप्त करनी होगी। इसलिये अगर आप उनसे अभी यह बात न ही कहें तो अच्छा है।"

पर पिता उसकी बात मानने को तैयार नहीं था।

[35] The Peasant's Wise Daughter. A folktale from Germany by Brothers Grimm

अगले दिन उसने वह ओखली उठायी और राजा के पास ले गया। उसने उससे कहा कि उसने यह ओखली राजा ने जो साफ की हुई जमीन उसको दी थी उस जमीन में पायी थी। वह उसे अगर उसकी तरफ से भेंट की तरह से स्वीकार करें तो उनकी बड़ी मेहरबानी होगी।

राजा ने वह ओखली अपने हाथ में ली और किसान से पूछा कि क्या उसे इस ओखली के अलावा कुछ और भी मिला था। किसान ने कहा "नहीं।" राजा ने कहा कि अब वह उसे उसका मूसल और ला कर दे।

किसान बोला पर वह तो उसे मिला नहीं। हॉ वह हवा से बात कर सकता था। उसको जेल में डाल दिया गया और उसे वहीं रखने के लिये कहा गया जब तक वह राजा को मूसल नहीं दे देता। राजा के नौकर उसके लिये रोज खाना पानी ले कर जाते जो जेल में रहने वालों को मिलता था।

वे जानते थे कि किस तरह से वह बेचारा रोता रहता — "आह। काश मैंने अपनी बेटी की बात सुनी होती। अफसोस। मैंने अपनी बेटी की बात नहीं सुनी।"

एक दिन नौकर लोग राजा के पास गये और उनसे कहा कि कैदी न खाता है न पीता है और बार बार यह कहते हुए बहुत रो रहा है कि "काश। मैंने अपनी बेटी की बात सुनी होती।" यह सुन कर राजा ने नौकरों को कैदी को अपने सामने लाने की आज्ञा दी।

राजा ने किसान से पूछा — "तुम यह कह कह कर बार बार क्यों रो रहे हो कि "काश। मैंने अपनी बेटी की बात सुनी होती।" ऐसा उसने क्या कहा था जो तुम उसे बार बार याद कर रहे हो?"

किसान बोला — "सरकार। उसने मुझसे बार बार यह कहा था कि मैं यह ओखली आपके पास न ले जाऊँ। क्योंकि अगर मैं उसे आपके पास ले कर गया तो मुझे उन्हें उसका मूसल और देना पड़ेगा।"

राजा बोला — "अगर तुम्हारे घर में इतनी होशियार कोई बेटी है तो उसे यहाँ ले कर आओ।"

सो किसान की बेटी को राजा के सामने आना पड़ा। राजा ने कहा कि अगर वह इतनी ही होशियार है तो राजा उसके लिये एक पहेली रखेगा। अगर उसने उस पहेली का हल बता दिया तो राजा उससे शादी कर लेगा।

यह कह कर राजा ने कहा — "जब तुम दोबारा मेरे पास आओ तो न तो तुम कपड़े पहने हो न ही बिना कपड़ों के हो। न तो तुम किसी सवारी पर हो न ही तुम चल रही हो। न तुम सड़क पर हो न ही सड़क के बाहर हो। अगर तुम ऐसा कर सकती हो तो मैं तुमसे शादी कर लूँगा।"

यह सुन कर वह चली गयी। उसने अपने सारे कपड़े उतार दिये जो वह पहने थी सो अब वह बिना कपड़ों के खड़ी थी। उसने

एक बहुत बड़ा सा मछली पकड़ने का जाल लिया और उसमें बैठ गयी। इससे अब वह बिना कपड़ों के नहीं थी।

उसने एक गधा लिया और अपना मछली पकड़ने वाला जाल उसकी पूँछ से बाँध लिया इससे वह गधा उसे घसीट कर ले जाने वाला था। इस तरह से वह न तो किसी पर सवार थी और न ही वह चल रही थी। गधा उसे लीक पर खींच कर लिये जा रहा था तो इस तरह से वह सड़क पर थी भी और नहीं भी थी।

जब वह इस तरीके से राजा के महल पहुँची तो राजा ने कहा कि उसने उसकी पहेली बूझ दी है। उसकी सब शर्तें पूरी कर दी हैं। उसने उसके पिता को जेल से छोड़ दिया और उससे शादी कर ली। अब वह सारे शाही सामान की मालकिन थी।

इसी तरह से कुछ साल बीत गये। एक बार राजा अपने सिपाहियों की परेड देख रहा था कि कुछ किसान अपनी लकड़ी बेचने के लिये उसके शहर में आये और अपनी अपनी गाड़ियों के साथ महल के सामने ही रुक गये।

कुछ की गाड़ियों में बैल जुते हुए थे और कुछ की गाड़ियों में घोड़े। एक किसान के पास तीन घोड़े थे जिनमें से एक घोड़ी थी जिसने एक बच्चे घोड़े को जन्म दिया। वह वहाँ से भाग निकला और दो बैलों के बीच में जा कर बैठ गया जो एक गाड़ी में जुते हुए थे।

जब दोनों किसान आपस में मिले तो झगड़ने लगे। एक दूसरे को पीटने लगे और सबको परेशान करने लगे। जिस किसान के बैलों के बीच में घोड़े का बच्चा था वह किसान घोड़े के बच्चे को अपने पास रखना चाहता था।

उसका कहना था कि वह घोड़े का बच्चा उसके बैल का है जबकि घोड़े वाले किसान का कहना था कि उसकी घोड़ी ने वह बच्चा दिया है इसलिये वह उसका है।

यह झगड़ा राजा तक पहुँचा तो राजा ने फैसला दे दिया कि वह घोड़ी का बच्चा उसी किसान का है जहाँ वह पाया गया। इस तरह वह घोड़ी का बच्चा बैलों वाले किसान को मिल गया जबकि वह उसका था ही नहीं। दूसरा किसान बेचारा वहाँ से चला गया और अपने घोड़े के बच्चे का अफसोस करने लगा।

तभी उसे पता चला कि उसकी रानी तो बहुत ही अच्छी है क्योंकि वह खुद एक किसान की बेटी है। सो वह उसके पास गया और उससे न्याय करने की विनती की ताकि वह अपना घोड़े का बच्चा वापस पा सके।

रानी ने उसका मामला सुना और उसे विश्वास दिलाया कि वह उसे बतायेगी कि उसे क्या करना है अगर वह उसको धोखा न दे तो।"

तब उसने उसे बताया कि अगले दिन सुबह सवेरे ही जब राजा के रक्षकों की परेड होती है तुम बीच रास्ते में बैठ जाना। उसी रास्ते

से राजा साहब भी गुजरेंगे। तुम अपने हाथ में एक बड़ा सा मछली पकड़ने का जाल ले लेना और उससे मछली पकड़ने का बहाना करना और फिर उसे खाली करने का बहाना करना जैसे कि तुम्हारे जाल में बहुत सारी मछलियॉ आ गयी हों।

फिर उसने उसे बताया कि अगर राजा उससे कोई सवाल पूछे तो उसे क्या कहना है।

अगले दिन किसान ने वैसा ही किया जैसा उससे रानी ने करने के लिये कहा था। वह परेड के रास्ते में जा कर खड़ा हो गया और मछली पकड़ने वाले जाल से मछली पकड़ने और जाल को मछलियों से खाली करने का नाटक करने लगा।

सो जब राजा ने उसे ऐसा करते हुए देखा तो अपने एक दूत को उसके पास भेजा कि उससे पूछ कर आओ कि वह बेवकूफ क्या कर रहा है। किसान ने जवाब दिया "तुम देख नहीं रहे कि मैं मछलियॉ पकड़ रहा हूँ।"

दूत ने पूछा — "पर यहॉ तो कोई पानी नहीं है तुम मछलियॉ कैसे पकड़ रहे हो।"

किसान बोला — "सूखी जमीन से मछलियॉ पकड़ना तो मेरे लिये बहुत आसान है। इतना आसान है जैसे बैल के लिये घोड़े का बच्चा देना।"

दूत यह जवाब ले कर राजा साहब के पास पहुँचा तो राजा ने उस किसान को अपने सामने लाने के लिये कहा। किसान ने बताया

कि यह विचार उसका नहीं था तो राजा ने उससे पूछा कि "फिर वह विचार किसका था।" तो किसान को फिर उसे बताना ही पड़ा।

किसान उसे नहीं बताता कि यह विचार रानी जी का है। वह उससे यही कहता रहा कि यह विचार उसी का था पर उन्होंने उसे भूसे के ढेर पर लिटा कर बहुत पीटा और इतना तंग किया कि उसे रानी जी का नाम लेना ही पड़ा।

जब राजा घर वापस लौटा तो उसने अपनी पत्नी से पूछा — "तुमने मेरे साथ ऐसा धोखा क्यों किया। मैं तुम्हें अब अपनी पत्नी तरह से नहीं रख सकता। अब तुम्हारा समय समाप्त हुआ। अब तुम उसी जगह चली जाओ जहॉ से तुम आयी थीं – यानी अपने किसान वाले घर से।"

केवल एक बात की उसने उसके ऊपर कृपा की कि वह केवल एक चीज़ जो वह सबसे ज़्यादा पसन्द करती हो वहॉ से ले जा सकती है। यह कह कर उसने उसे वहॉ से भेज दिया।

उसने कहा — "प्रिय। अगर यही तुम्हारी आज्ञा है तो मैं ऐसा ही करूँगी।" यह कह कर उसने उसे गले से लगाया चूमा और फिर वहॉ से चली गय्सी।

उसके बाद उसने जाने से पहले शराब का एक ताकतवर जाम मॅगवाया। राजा ने तो उसका बहुत बड़ा सा घूँट पिया पर उसने बहुत थोड़ा ही पिया। इस शराब को पी कर वह बहुत जल्दी ही सो गया।

जब उसने देखा कि वह वाकई गहरी नींद सो गया तब उसने एक नौकर को बुलवाया राजा को सुन्दर सफेद चादर में लपेटा और उससे राजा को गाड़ी में रखने पर मजबूर किया। गाड़ी में रखवा कर वह उसे अपने घर ले गयी। वहॉ उसे उसने अपने बिस्तर में लिटा दिया।

वहॉ वह पूरे एक दिन और एक रात सोता रहा। जब वह जागा तो उसने इधर उधर देखा तो पूछा — "ओह मेरे भगवान मैं कहॉ हूॅ।" उसने अपने नौकरों को आवाज लगायी पर वहॉ तो उसका कोई नौकर नहीं था।

नौकर की बजाय उसकी पत्नी आयी और बोली — "मेरे प्रिय लौर्ड और राजा साहब। कल आपने मुझे यह कह कर घर से निकाल दिया था कि मैं अपनी एक प्रिय चीज़ को ले कर घर से निकल जाऊॅ।

मेरी नजर में मेरी सबसे प्रिय चीज़ आप थे सो मैंने आपको लिया और महल छोड़ कर अपने घर आ गयी। सो अब आप मेरे घर में हैं।"

यह सुन कर राजा की ऑखों में ऑसू आ गये। वह बोला — "प्रिये तुम मेरी हो और मैं तुम्हारा हूॅ।" कह कर उसने उसका हाथ पकड़ा और अपने महल वापस ले गया। वहॉ पहुॅच कर उसने उससे दोबारा शादी कर ली। शायद वे वहॉ अभी भी रह रहे होंगे।

19 तीन सुनहरे बाल वाला शैतान[36]

एक बार एक बहुत गरीब स्त्री थी। उसने एक बच्चे को जन्म दिया। वह बच्चा कौल[37] के साथ पैदा हुआ था सो ज्योतिषियों ने उसके लिये यह भविष्यवाणी की कि वह अपने चौदहवें साल में किसी राजा की बेटी से शादी करेगा।

अब ऐसा हुआ कि जल्दी ही एक राजा उस गॉव में आया। पर कोई उस गॉव में राजा को पहचानता नहीं था। राजा ने पूछा कि उस गॉव की क्या खबर है तो उन्होंने जवाब दिया कि उनके गॉव में एक बच्चा कौल के साथ पैदा हुआ है।

इस तरीके से जो बच्चा पैदा होता है वह बहुत अच्छी किस्मत वाला होता है। ऐसा ही लोगों ने बताया भी है कि चौदहवें साल में वह राजा की बेटी से शादी करेगा।

राजा बहुत बुरे दिल का आदमी था। वह इस भविष्यवाणी से बहुत गुस्सा हुआ सो वह उस बच्चे के माता पिता के पास गया और बोला — "ओ गरीबों। तुम अपने बच्चे को मुझे दे दो। मैं इसे पालूँगा पोसूँगा।"

---

[36] The Devil With the Three Golden Hairs. A folktale from Germany by Brothers Grimm

[37] Caul is **a piece of membrane that can cover a newborn's head and face**. Birth with a caul is rare, occurring in fewer than 1 in 80,000 births. The caul is harmless and is immediately removed by the parent, physician or midwife upon birth of the child.

पहले तो उन्होंने मना कर दिया पर फिर जब अजनबी ने उन्हें बहुत सारा सोना दिया तो यह सोच कर वे राजी हो गये कि उनका बच्चा तो किस्मत वाला है उसके साथ सब अच्छा ही होगा। सो उन्होंने अपना बच्चा उन्हें दे दिया।

राजा ने उसे एक बक्से में रखा और उसे साथ ले कर वहॉ से चला गया। वह उसे ले कर एक गहरे पानी की जगह पहुॅचा और उस बक्से को उस पानी में फेंक दिया। उसने सोचा कि "मैंने अपनी बेटी को इस लड़के से बचा लिया।"

अब क्या हुआ कि वह बक्सा तो डूबा नहीं बल्कि एक नाव की तरह से तैरता चला गया। उसके अन्दर पानी की एक बूॅद भी नहीं घुसी। वह बक्सा राजा के शहर में दो मील के घेरे के अन्दर ही रहा।

वहीं पास में ही एक चक्की थी सो वह बक्सा वहीं जा कर रुक गया। उसकी अच्छी किस्मत से वहॉ चक्की वाले का एक लड़का खड़ा हुआ था। उसने वह बक्सा तैरता जाता देख लिया तो एक हुक फेंक कर उसे अपने पास खींच लिया।

पर जब उसने उसे खोला तो देखा कि उसमें तो एक बहुत सुन्दर बच्चा रखा हुआ है तो वह उसे चक्की वाले और उसकी पत्नी के पास ले गया। चक्की वाले के कोई बच्चा नहीं था सो वह उसे देख कर बहुत खुश हुआ। उन्होंने कहा कि यह बच्चा तो हमें भगवान ने दिया है सो उसे बहुत लाड़ प्यार से पालने लगे।

एक बार तूफान आया तो राजा उस चक्की में पहुँच गया। वहाँ उसने एक सुन्दर नौजवान देखा तो चक्की वाले से पूछा कि क्या वह उसका बेटा था।

चक्की वाले ने कहा — "नहीं। इसे तो हमने पाया है। चौदह साल पहले यह एक बक्से में यहाँ तक तैरता चला आया था। हमारे एक नौकर ने इसको बाहर निकाल लिया था।"

राजा को विश्वास हो गया कि यह किस्मत वाला बच्चा वही है जिसे उसने पानी में फेंक दिया था। उसने चक्की वाले से कहा — "अगर वह उसकी एक चिट्ठी रानी के पास ले जाये तो वह उसे सोने के दो सिक्के देगा।"

वे बोले — "जैसी राजा साहब की आज्ञा।" कह कर उन्होंने लड़के से रानी जी के पास जाने के लिये कहा।

राजा ने रानी को एक चिट्ठी लिखी कि "जैसे ही यह लड़का तुम्हारे पास पहुँचे तुम इसको मरवा देना और दफ़ना देना। और यह सब काम मेरे आने से पहले हो जाना चाहिये।"

वह लड़का यह चिट्ठी ले कर राजा के महल चल दिया पर वह रास्ता भूल गया। शाम को वह एक जंगल में आ पहुँचा। अँधेरे में उसे एक रोशनी दिखायी दी सो वह उधर चल दिया। वहाँ जा कर उसे एक बहुत बड़ा मकान दिखायी दिया।

वह उसमें अन्दर चला गया। वहाँ उसे एक बुढ़िया बैठी दिखायी दी। वह अकेली ही आग के पास बैठी थी।

जब उसने लड़के को देखा तो उससे पूछा — "बेटा तुम कहॉ से आ रहे हो और किधर जा रहे हो।"

लड़का बोला — "मैं चक्की से आ रहा हूॅ और रानी जी के पास जा रहा हूॅ। मैं उनके लिये एक चिट्ठी ले कर जा रहा हूॅ। पर मैं रास्ता भूल गया हूॅ तो आज की रात मैं यहॉ रुकना चाहूॅगा।"

बुढ़िया बोली — "ओह बेचारे तुम। तुम तो यहॉ चोरों के घर में आ गये हो। अब जब वे यहॉ आयेंगे तो तुम्हें मार देंगे।"

लड़का बोला — "उन्हें आने दीजिये। मैं डरता नहीं हूॅ पर अभी मैं इतना थका हुआ हूॅ कि अब इससे आगे नहीं जा सकता।" कह कर वह वहीं पास में पड़ी बैन्च पर लेट गया और सो गया।

उसके कुछ देर बाद ही चोर आ गये तो उन्होंने आते ही पूछा कि वह कौन अजनबी वहॉ सो रहा था।

बुढ़िया बोली — "यह एक भोला भाला बच्चा है जो जंगल में रास्ता भूल गया है। मैंने इस पर दया कर के इसे अपने घर में शरण दे दी है। यह रानी के लिये एक चिट्ठी ले कर जा रहा है।"

चोरों ने उसकी चिट्ठी पढ़ी तो देखा कि उसमे लिखा था कि "जैसे ही वह तुम्हारे पास पहुॅचे इसे मार कर दफ़ना देना।" चोरों को भी उस सुन्दर भोले भाले बच्चे के ऊपर दया आ गयी।

चोरों के सरदार ने तुरन्त ही वह चिट्ठी फाड़ डाली और एक और चिट्ठी लिखी कि "जैसे ही यह लड़का तुम्हारे पास पहुॅचे इसकी शादी राजकुमारी से कर देना।"

इसके बाद वह लड़का उसी बैन्च पर सुबह तक सोता रहा। जब वह सुबह को जागा तो उन्होंने उसको वह दूसरी चिट्ठी दी और उसे राजमहल का रास्ता दिखा दिया।

राजमहल पहुँच कर लड़के ने रानी जी को वह चिट्ठी दी तो उसने वैसा ही किया जैसा कि राजा ने चिट्ठी में लिखा था। उसने एक बहुत ही शानदार शादी की दावत का इन्तजाम किया और राजकुमारी की शादी उस किस्मत वाले लड़के से कर दी। और क्योंकि लड़का बहुत सुन्दर और सबसे मिलजुल कर रहने वाला था तो राजकुमारी भी उसके साथ हँसी खुशी रहने लगी।

कुछ दिनों बाद राजा लौट कर घर पहुँचा तो देखा कि उसके बारे में जो भविष्यवाणी की गयी थी वह तो सच हो गयी है। उस किस्मत वाले लड़के की शादी उसकी बेटी से हो चुकी है।

वह सोचने लगा कि यह हुआ कैसे। मैंने तो अपनी चिट्ठी में कुछ और ही लिखा था। उसने रानी जी से वह चिट्ठी दिखाने के लिये कहा जो उसने उसे लिख कर भेजी थी। रानी तुरन्त ही वह चिट्ठी निकाल कर ले आयी ताकि राजा खुद अपनी ऑखों से देख सके कि उसने क्या लिखा था।

राजा ने साफ देख लिया कि उसके हाथ की लिखी हुई चिट्ठी बदल दी गयी है। यह वह चिट्ठी नहीं थी जो उसने लिखी थी। उसने लड़के से पूछा कि उस चिट्ठी का क्या हुआ जिसे उसने उस पर भरोसा कर के दी थी। और वह दूसरी चिट्ठी क्यों ले कर आया।

लड़का बोला कि वह इस बारे में कुछ नहीं जानता। हो सकता कि जब मैं जंगल में रात में सोया हुआ था तभी किसी ने उसे बदल दिया हो।

राजा बोला — "तुमको यह सब इतनी आसानी से नहीं मिलेगा। जो भी मेरी बेटी से शादी करेगा उसे नरक से शैतानों के सरदार के सिर से तीन सुनहरी बाल ला कर देने होंगे। जो मुझे चाहिये वह मुझे ला कर दो और मेरी बेटी को अपने पास रख लो।"

इस तरह से राजा ने उससे अपना छुटकारा पाने की कोशिश की पर किस्मत वाला बच्चा बोला — "मैं आपके लिये शैतानों के सरदार के तीन सुनहरे बाल अवश्य ला दूँगा। मैं शैतान से नहीं डरता।" इतना कह कर उसने राजा से आज्ञा ली और अपने रास्ते चल दिया।

जिस रास्ते को उसने लिया वह रास्ता उसे एक बड़े शहर की तरफ ले गया जहाँ फाटक के पास खड़े हुए एक चौकीदार ने उससे पूछा कि वह क्या काम करता था और वह क्या जानता था।

किस्मत वाले बच्चे ने कहा कि वह सब कुछ जानता था। चौकीदार फिर बोला — "तो तुम हम्हारा एक काम कर दो। अगर तुम हमें यह बता दो कि हमारा बाजार वाल फव्वारा जिसमें पहले हमेशा से वाइन बहती थी अब क्यों सूख गया है। अब तो वह पानी भी नहीं देता।"

लड़का बोला — "यह तुम जान पाओगे पर तुम तब तक इन्तजार करो जब तक मैं लौट कर आता हूँ।"

कह कर वह वहाँ से चला गया और एक दूसरे शहर में आ गया। वहाँ के दरबान ने भी उससे यही पूछा कि वह क्या करता था और वह क्या जानता था। लड़के ने यहाँ भी वही कहा कि वह सब कुछ जानता है।

उसने कहा कि "तुम हमारे ऊपर कृपा कर के यह बताओ कि हमारे यहाँ एक पेड़ है जिस पर कभी सुनहरे सेब लगा करते थे पर अब उस पर पत्ते भी नहीं लगते।"

लड़का बोला — "तुम जान जाओगे। बस मेरे लौटने का इन्तजार करो।"

चलते चलते वह एक नदी के पास पहुँचा जिसे उसे पार करना ही था। तो नाव के नाविक ने उससे पूछा — "तुम क्या करते हो और तुम क्या जानते हो।"

लड़का बोला — "मैं सब कुछ जानता हूँ।"

नाविक बोला — "तो मेरे ऊपर एक उपकार करो। मुझे यह बताओ कि मैं हमेशा ही इस नाव को आगे पीछे क्यों खेता रहता हूँ। मुझे इससे छुट्टी क्यों नहीं मिलती।"

लड़का बोला — "तुम जान जाओगे। बस मेरे लौटने का इन्तजार करो।"

जब उसने नदी पार कर ली तो उसे नरक का दरवाजा दिखायी दिया। वह काला था और उसके अन्दर धुँए की कालिख लगी थी। शैतान तो घर में नहीं था हॉ उसकी मॉ थी। वह एक आराम कुर्सी पर बैठी हुई थी।

जब उसने लड़के को देखा तो पूछा — "तुम्हें क्या चाहिये बेटा?" वह कोई नीच स्त्री नहीं लग रही थी।

लड़का बोला — "मॉ जी मुझे शैतान के सिर के तीन सुनहरी बाल चाहिये वरना मैं अपनी पत्नी को नहीं रख पाऊॅगा।"

बुढ़िया बोली — "यह तो बड़ा अच्छा सौदा है। अगर शैतान घर आ गया और उसने तुम्हें देख लिया तो वह तुम्हें मार डालेगा पर क्योंकि मुझे तुम पर दया आती है इसलिये मैं देखती हूॅ कि मैं तुम्हारी सहायता किस तरह कर सकती हूॅ।"

उसने लड़के को एक चींटी मे बदल दिया और उससे कहा कि वह उसकी पोशाक में छिप जाये। लड़का बोला — "यह सब तो ठीक है पर मुझे उनसे तीन बातें और पूछनी थीं।

पहली कि एक फव्वारा जो पहले वाइन फेंका करता था वह अब सूख क्यों गया। अब तो वह पानी भी नहीं फेंकता। दूसरे एक पेड़ है जिस पर पहले सुनहरे सेब लगा करते थे अब उस पर सुनहरे सेब लगना तो दूर एक पत्ता भी नहीं लगता। तीसरे एक नाविक है जो लगतार नाव खेता रहता है उसे उससे छूट्टी क्यों नहीं मिलती।"

बुढ़िया बोली — "ये सवाल अलग हैं। पर जब मैं उसके तीन सुनहरी बाल उसके सिर से तोड़ूँ तो तुम शान्त रह कर यह सुनना कि वह क्या बातें करता है।"

शाम हुई और शैतान घर लौटा। जैसे ही वह घर में घुसा तो उसे लगा कि उसके घर की हवा खराब है। उसने कहा — "मुझे लग रहा है कि यहाँ कोई आदमी है। मुझे उसकी गंध आ रही है। यहाँ सब कुछ ठीक नहीं है।"

कह कर उसने घर का कोना कोना छान लिया पर उसे कहीं कोई नहीं मिला। इस पर उसकी दादी ने उसे डाँटा और कहा — "इसे अभी अभी तो झाड़ा बुहारा गया है और सब चीज़ें करीने से रखी गयी हैं और अब तुम इन्हें इधर उधर कर रहे हो। तुम्हारी नाक में तो हमेशा ही आदमी के माँस की बू रहती है। बैठ जाओ और अपना खाना खाओ।"

जब उसने खा पी लिया तो क्योंकि वह बहुत थक गया था सो उसने अपना सिर अपनी दादी की गोद में रख लिया और जल्दी ही सो गया। उसकी साँस भारी हो गयी थी और वह खर्राटे ले रहा था।

तब उस स्त्री ने उसके सिर से एक सुनहरी बाल तोड़ा और अपने पास रख लिया। शैतान चिल्लाया — "दादी यह तुम क्या कर रही हो?"

दादी बोली — "बेटे मैंने एक सपना देखा सो मैंने तुम्हारा एक बाल पकड़ लिया।"

शैतान ने पूछा — "तुमने क्या सपना देखा दादी?"

दादी बोली — "मैंने देखा कि बाजार में एक फव्वारा है जिससे कभी वाइन बहा करती थी पर अब वह सूख गया है और वाइन छोड़ अब उसमें से पानी भी नहीं बहता। ऐसा क्यों है।"

शैतान बोला — "फव्वारे के नीचे जो कुँआ है उसकी तली में एक पत्थर के नीचे एक मेंढक बैठा है अगर उसे मार दो तो उसमें से फिर से वाइन बहने लगेगी।"

इतना कह कर वह फिर सो गया। जब तक कि वह खर्राटे नहीं लेने लगा जिससे कि उसके मकान की खिड़कियाँ तक हिलने लगीं। दादी ने फिर से उसके सिर से एक बाल तोड़ लिया। शैतान की आँख फिर खुल गयी।

उसने फिर पूछा — "दादी यह क्या कर रही हो।"

दादी बोली — "गुस्सा मत हो। यह सब मैंने सपने में किया है बेटे।"

शैतान ने पूछा — "इस बार तुमने सपने में क्या देखा?"

दादी बोली — "इस बार मैंने देखा कि एक सेब का पेड़ है जिस पर सुनहरे सेब आया करते थे पर अब न तो उस पर सेब आते हैं और न ही कोई पत्ता। तुम क्या सोचते हो कि इसकी क्या वजह हो सकती है।"

शैतान बोला — "काश वे जान पाते। एक चूहा उसकी जड़ों को काट रहा है। अगर वे उस चूहे को मार देंगे तो वह पेड़ फिर से फल देने लगेगा। पर अगर वह उसकी जड़ों को बहुत दिन तक काटता रहा तो वह पेड़ बिल्कुल सूख जायेगा।

पर अब तुम मुझे सोने दो मुझे परेशान मत करो। अगर तुमने मुझे फिर से जगाया तो मै तुम्हारे कान पर घूँसा मारूँगा।"

उसकी दादी ने उसे समझा बुझा कर फिर सुला दिया। वह फिर खर्राटे भरने लगा। फिर उसने उसका एक और बाल तोड़ा। इस बार शैतान उछल कर खड़ा हो गया और उसके साथ कुछ बुरा करने वाला था कि दादी बोली — "अब बुरे सपनों का कोई क्या कर सकता है।"

शैतान ने पूछा — "और क्या था वह बुरा सपना?"

दादी बोली — "मैंने देखा कि एक नाविक है वह हर समय नाव चलाता रहता है। उसे इस काम से कब छुट्टी मिलेगी।"

शैतान बोला — "आह बेवकूफ। जब कभी कोई उसकी नाव में बैठने आये तो वह अपनी पतवार उसके हाथ में दे दे तब वह दूसरा आदमी उस नाव को चलाता रहेगा और वह इस काम से आजाद हो जायेगा।"

अब तक क्योंकि दादी ने अपने पोते के तीन सुनहरे बाल तोड़ लिये थे और उस लड़के के तीनों सवालों का जवाब भी पा लिया था उसने उस सॉप को सुबह तक सोने दिया।

जब शैतान फिर से सो गया तो उसने अपनी पोशाक में से चींटी को बाहर निकाला और उसे फिर से आदमी की शक्ल में बदल दिया। फिर उसने उसे शैतान के तीन सुनहरे बाल दे कर कहा — "आशा है कि तुमने अपने तीनों सवालों के जवाब तो सुन ही लिये होंगे।"

लड़का बोला — "हॉ वे मैंने सुन लिये हैं और मैं उन्हें याद रखने की कोशिश करूँगा।"

बुढ़िया ने कहा — "जो तुम्हें चाहिये था वह अब सब तुम्हारे पास है अब तुम जा सकते हो।"

लड़के ने बुढ़िया को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और सन्तुष्ट हो कर नरक छोड़ दिया। उसका सब काम ठीक से हो गया था।

चलते चलते वह नाविक के पास आया जिसे वह उसके सवाल का जवाब देने वाला था। लड़के न कहा — "पहले तुम मुझे उस पार ले चलो तब मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम अपने इस काम से आजाद कैसे हो सकते हो।"

सो वह नाविक उसे उस पार ले गया तब उसने उसे शैतान की सलाह बतायी — "अगली बार जब कोई तुम्हारे पास पार उतरने के लिये आये तो तुम अपनी पतवार उसे थमा देना तो फिर वही इस नाव को चलाता रहेगा और तुम इस काम से आजाद हो जाओगे।"

वहॉ से चल कर वह उस शहर में आया जहॉ सेब का पेड़ खड़ा हुआ था पर वह फल नहीं दे रहा था।

उसने वहॉ के पहरेदार को बताया कि उस पेड़ की जड़ को एक चूहा काट रहा था। अगर वह उस चूहे को मार देगा तो वह पेड़ फिर से फल देने लगेगा। पर अगर वह चूहा उस पेड़ की जड़ को देर तक काटता रहा तो वह पेड़ बिल्कुल ही सूख जायेगा। सो अगर उसको उस पर फल चाहिये तो उसे उस चूहे को मार देना चाहिये।

यह सुन कर पहरेदार इतना खुश हुआ कि उसने लड़के को दो गधे सोने के सिक्के दिये

इससे आगे चला तो वह उस शहर में आया जिसका कुॅआ सूख गया था। वहॉ के चौकीदार को उसने बताया कि उसका कुॅआ इसलिये सूख रहा था क्योंकि उसमें नीचे एक पत्थर के नीचे एक मेंढक बैठा था। अगर वह उस मेंढक को मार देगा तो उस कुॅए से फिर से वाइन निकलने लगेगी।

चौकीदार ने उसे बहुत बहुत धन्यवाद दिया और उसने भी उसे सोने से लदे दो गधे दिये।

आखीर में वह किस्मत वाला लड़का अपनी पत्नी के पास आया। उसकी पत्नी उसे देख कर बहुत खुश हुई। उसे यह सुन कर और भी अच्छा लगा कि कितने अच्छे तरीके से वह और धनी हो कर आया है।

फिर वह राजा के पास शैतान के तीन सुनहरी बाल देने गया। जब राजा ने सोने से लदे हुए चार गधे देखे तो वह उससे और भी अधिक खुश हो गया।

वह बोला — "तुमने मेरी सारी शर्तें पूरी कर दी हैं इसलिये अब तुम मेरी बेटी के काबिल हो। पर मुझे यह तो बताओ मेरे प्रिय दामाद जी कि इतना सारा सोना तुम्हें मिला कैसे। यह तो बहुत सारा पैसा है।"

लड़का बोला — "जब मैं एक नदी पार कर के उसके उस पार पहुँचा तो वहाँ दूसरे किनारे पर रेत की बजाय सोना पड़ा हुआ था।"

राजा ने पूछा — "क्या मैं भी वह सोना ला सकता हूँ?"

लड़का बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं जितना चाहें उतना ला सकते हैं। वहाँ नदी पर एक नाविक नाव चलाता है। उसे अपनी नाव में अपने आपको उस पार ले जाने देना तब वहाँ पहुँच कर थैले भर भर कर आप सोना ला सकते हैं।"

लालची राजा जल्दी से उधर की तरफ चल दिया। जब वह नदी के पास आया तो उसने नाविक से उसे उस पार पहुँचाने के लिये कहा। नाविक आया और पतवार पकड़ कर राजा को चलने के लिये कहा। जब वे नदी के उस पार पहुँचे तो उसने राजा को अपनी पतवार पकड़ा दी और बाहर कूद गया।

बस उसके बाद से अपने पापों के फलस्वरूप फिर वही नाव चलाता रहा। शायद वह अभी भी नाव चला रहा होगा क्योंकि उसे पता ही नहीं कि अगर नाव किसी दूसरे आदमी को चलाने के लिये देनी हो तो बस केवल उसकी पतवार ही किसी दूसरे आदमी के हाथ में देनी है।

20 मेंढक राजकुमार[38]

जर्मनी की यह सबसे अधिक लोकप्रिय कहानी है। अगर तुमने यह कहानी पढ़ी नहीं होगी तो कम से कम सुनी जरूर होगी।

एक बार की बात है कि एक राज्य में एक बहुत ही सुन्दर राजकुमारी रहती थी। वह एक बहुत बड़े महल में रहती थी जिसमें बहुत सारे फव्वारे और बागीचे थे।

राजकुमारी को बागीचों में घूमना बहुत अच्छा लगता था सो वह अपने महल के बागीचों में घूमती रहती और वहॉ बहुत देर तक पेड़ पौधों को देखती रहती। जब वह फव्वारे के पास बैठती तो उसमें वह अपनी परछाईं देखती रहती।

वह हमेशा से ही बहुत अच्छी नहीं थी इसी लिये उसके साथ खेलने के लिये उसका कोई दोस्त नहीं था। जब वह बाहर खेलती तो बस वह एक सुनहरी गेंद से ही खेलती। वह उसको हवा में उछाल उछाल कर खेलती रहती।

एक बार जब वह राजकुमारी अपनी गेंद को उछाल उछाल कर खेल रही थी तो उसकी गेंद एक कुॅए में गिर गयी। उसने जब कुॅए में झॉक कर देखा तो उसे केवल अपनी परछाईं ही दिखायी दी गेंद नहीं दिखायी दी।

---

[38] The Frog Prince – a folktale from Germany, Europe. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=66
Adapted from the “Brothers Grimm”.

ऐसा पहली बार हुआ था जब उसको अपनी परछाईं देखना अच्छा नहीं लगा। उसने रोना शुरू कर दिया।

एक कोमल आवाज ने पूछा — "राजकुमारी, तुम क्यों रोती हो?" राजकुमारी ने अपने चारों तरफ देखा पर उसे अपने पास तो कोई भी दिखायी नहीं दिया।

उसने पूछा — "यह कौन बोला मुझसे?"

फिर उसने नीचे झुक कर देखा तो देखा कि एक मेंढक उसके पैरों के पास बैठा था। उसके मुँह से निकला — "उँह, एक गन्दा बूढ़ा मेंढक।"

मेंढक बोला — "राजकुमारी जी पहली बात तो यह कि मुझे नहीं लगता कि मैं गन्दा हूँ। और दूसरी बात यह कि मैं बूढ़ा भी नहीं हूँ। और तीसरी बात यह कि मैंने पूछा कि तुम क्यों रो रही हो?"

राजकुमारी बोली — "मेरी गेंद इस कुँए में गिर गयी है। अगर तुम इस कुँए में से मेरी गेंद निकाल दोगे तो मैं तुमको अपने मोती और जवाहरात दे दूँगी।"

मेंढक बोला — "मैं तुम्हारी गेंद निकाल तो सकता हूँ पर मुझे तुम्हारे मोती और जवाहरात नहीं चाहिये। मैं तुम्हारे घर में आना चाहता हूँ। मैं तुम्हारी मेज पर तुम्हारे साथ खाना खाना चाहता हूँ तुम्हारी सुन्दर सोने की थाली में से। और फिर मैं तुम्हारे बिस्तर पर सोना चाहता हूँ।"

राजकुमारी ने कुछ बुरा सा मुँह बनाया तो मेंढक फिर बोला — "हॉ और मैं यह भी चाहता हूँ कि तुम मेरा चुम्बन लो। वायदा करो कि तुम यह सब करोगी तभी मैं तुम्हारी सुनहरी गेंद निकाल कर तुमको दूँगा।

राजकुमारी बोली — "ठीक है मैं वायदा करती हूँ कि मैं यह सब करूँगी जो तुमने मुझसे कहा है। पर अब तुम मेरी गेंद तो निकाल दो।"

उसने यह सोच कर यह वायदा कर दिया कि एक बार अगर वह मेंढक उस कुँए में कूद गया तो वह उसमें से कभी भी नहीं निकल पायेगा और मुझे अपना वायदा पूरा करने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। पर हो सकता है कि वह उसकी गेंद निकाल दे।

मेंढक तुरन्त ही उस कुँए में कूद गया और कुछ ही मिनटों में अपने मुँह में उसकी गेंद ले कर ऊपर आ गया और उसको कुँए के बाहर राजकुमारी के पास सूखी जमीन पर उछाल कर फेंक दी।

राजकुमारी अपनी गेंद को पा कर इतनी खुश थी कि उसने तो मेंढक को धन्यवाद भी नहीं दिया और वह अपनी गेंद उठा कर अपने महल में भाग गयी।

मेंढक पीछे से चिल्लाया — "ओ राजकुमारी, अपना वायदा याद रखना।" पर राजकुमारी ने तो जैसे सुना ही नहीं। उसको मेंढक से किये गये वायदे को याद रखने की जरूरत भी क्या थी। उसको तो अपनी गेंद मिल गयी थी।

अगले दिन जब राजकुमारी खाना खाने बैठी तो किसी ने उसके महल का दरवाजा खटखटाया।

पहले तो किसी ने बहुत धीरे से दरवाजा खटखटाया जिसे केवल राजकुमारी ही सुन सकी। पर फिर उसके खटखटाने की आवाज उसको नौकरों ने भी सुनी और फिर जल्दी ही वह खटखटाने की आवाज इतनी बढ़ गयी कि उसको राजा ने भी सुना —

राजकुमारी, राजकुमारी, सुनो, राजकुमारी, राजकुमारी, अपना वायदा निभाओ
खेलते समय तुम्हारी गेंद खो गयी थी, फिर वह गेंद तुमको वापस दी गयी
ऐसा मत समझो कि मैं तुमको परेशान कर रहा हूँ
वायदा तो वायदा है अपने पिता से पूछ लो

वह मेंढक महल के बाहर दरवाजे पर खड़ा था।

राजा ने अपनी बेटी से पूछा — "यह वायदे के बारे में क्या बात है बेटी? हमको हमेशा अपने वायदे निभाने चाहिये। क्या तुमने इस मेंढक से कोई वायदा किया था?"

राजकुमारी बोली — "पिता जी, कल खेलते हुए मेरी गेंद कुँए में गिर गयी थी। मैंने उससे केवल वह गेंद लेने के लिये ही वायदा किया था। पिता जी, वह एक बहुत ही गन्दा बूढ़ा मेंढक है। किसी मेंढक से किये गये वायदे का क्या निभाना।"

मेंढक बाहर से ही बोला — "पहली बात यह कि मैं गन्दा नहीं हूँ। दूसरी बात यह कि मैं तुमको फिर से याद दिला दूँ कि मैं बूढ़ा

भी नहीं हूँ। और तीसरी बात तो यह है कि वायदा तो वायदा है चाहे वह किसी से भी किया जाये।"

राजा ने अपनी बेटी से कहा — "बेटी, यह मेंढक ठीक कहता है। वायदा तो वायदा है चाहे वह किसी से भी किया जाये। इस मेंढक को महल के अन्दर बुलाओ और अपना वायदा पूरा करो।"

राजकुमारी ने फिर वैसा ही किया जैसा कि उसके पिता ने कहा था। उसने महल का दरवाजा खोला और मेंढक कूद कर अन्दर आ गया

वह राजकुमारी से बोला — "बहुत बहुत धन्यवाद। यह पहला वायदा है जो तुमने पूरा किया। तुमने कहा था कि मैं अन्दर आ सकता हूँ और मैं अब यहाँ हूँ।"

मेंढक फिर कूदता हुआ खाने के कमरे में चला गया और बोला — "अब मुझे मेज पर बिठाओ।"

राजकुमारी उसको ना कहने ही वाली थी कि उसने देखा कि उसके पिता उसको देख रहे हैं सो उसने उसको उठा कर अपने पास वाली कुर्सी पर बिठा लिया।

मेंढक बोला — "यह तुमने दूसरा वायदा पूरा किया। अब तुम अपनी सोने की थाली मेरी तरफ खिसकाओ ताकि मैं उसमें से खाना खा सकूँ।"

राजकुमारी बोली "उफ़।" और उसने वह थाली मेंढक की तरफ खिसका दी। मेंढक ने उसमें से पेट भर कर खाया और बोला

— "अब तुम मुझे अपने कमरे में ले चलो ताकि मैं वहॉ तुम्हारे बिस्तर पर सो सकूँ।"

राजकुमारी बोली — "मेरे बिस्तर में?" वह बहस नहीं करना चाहती थी पर वह जानती थी कि वह क्या कह रही है क्योंकि उसने वायदा किया था।

वह एक राजा की बेटी थी, और हालॉकि वह काफी बिगड़ी हुई थी फिर भी उसको मालूम था कि उसको अपना वायदा निभाना ही था।

जैसे ही उसने मेंढक को उठाया तो उसने अपनी नाक दूसरी तरफ कर ली। उसको ले जा कर उसने अपने लाल मखमल के तकिये पर रख दिया। फिर वह उस तकिये को ऊपर ले गयी और उस तकिये को ले जा कर अपने बिस्तर पर रख दिया।

खुद वह जा कर एक कुर्सी पर बैठ गयी और मेंढक की तरफ देखती रही कि वह मेंढक आगे क्या करता है। मेंढक ने अपनी ऑखें बन्द की और सो गया। एक मेंढक उसके अपने बिस्तर में? उफ़। वह सारी रात उसने वहीं कुर्सी पर सोते हुए गुजार दी।

जब सुबह की रोशनी की पहली किरन खिड़की के रास्ते उसके कमरे में आयी तो मेंढक जाग गया और बिस्तर पर से कूद पड़ा। वह कमरे से बाहर आया, सीढ़ियों से नीचे उतरा और महल के बाहर चला गया।

उसके बाहर जाते ही राजकुमारी की जान में जान आयी कि अब मुझे उसे चूमना नहीं पड़ेगा। पर अगली रात मेंढक फिर महल वापस आया और बोला —

राजकुमारी, राजकुमारी, सुनो, राजकुमारी, राजकुमारी, अपना वायदा निभाओ
खेलते समय तुम्हारी गेंद खो गयी थी, फिर वह गेंद तुमको वापस दी गयी
ऐसा मत समझो कि मैं तुमको परेशान कर रहा हूँ
वायदा तो वायदा है अपने पिता से पूछ लो

मेंढक ने जैसा पहली रात किया वैसे ही दूसरी रात भी किया, और फिर तीसरी रात भी।

इस तरह तीन रात राजकुमारी ने मेंढक को महल में आने दिया। अपने साथ खाने की मेज पर बैठने दिया। अपनी सोने की थाली में से खाना खाने दिया और अपने बिस्तर में सोने दिया। और तीनों रात वह खुद कुर्सी पर सोती रही।

पर वह खुश थी कि अपना वायदा रखने के लिये उसे मेंढक को कम से कम चूमना नहीं पड़ा।

लेकिन तीसरी रात राजकुमारी ने एक अजीब सा सपना देखा। उसने देखा कि मेंढक उससे बातें कर रहा है। सपने में उसने मेंढक को यह कहते हुए सुना कि वह सचमुच में एक राजकुमार था और एक बुरी परी ने शाप दे कर उसको मेंढक में बदल दिया था।

उसने मेंढक से कहा कि जब वह किसी राजकुमारी के बिस्तर पर तीन रात सोयेगा और वह राजकुमारी उसको चूमेगी तब वह फिर से राजकुमार में बदल जायेगा।

यह सपना देख कर राजकुमारी की ऑख खुल गयी तब उसको लगा कि वह तो सपना देख रही थी। उसने इधर उधर देखा तो वह ठंडा मेंढक तो अभी भी उसके बिस्तर पर बेखबर पड़ा सो रहा था।

फिर वह अपने सपने के बारे में सोचने लगी। उसने अपने वायदे के बारे में भी सोचा। उसे याद आया कि उसने मेंढक से उसे चूमने का वायदा भी किया है।

वह अपनी कुर्सी से उठी और अपने बिस्तर के ऊपर सोते हुए मेंढक के पास गयी। उसने अपनी ऑखें बन्द कीं और उस मेंढक के माथे पर उसको चूम लिया।

लो, जैसे ही उसके होठों ने मेंढक को छुआ वह मेंढक तो सचमुच में ही राजकुमार बन गया। राजकुमारी ने अपनी ऑखें समय से खोल ली थीं जिससे वह मेंढक को राजकुमार के रूप में बदलते देख सकी।

उसके बाद राजकुमार ने ऑखें खोलीं तो उसने देखा कि राजकुमारी तो उसके ऊपर झुकी खड़ी है। वह बोला — "तुमने अपना वह तीसरा वायदा भी निभाया हालॉकि वह वायदा तुमने एक मेंढक से किया था।"

राजकुमार सुन्दर था। उस समय राजकुमारी को अपनी परछाईं की तरफ देखने की बजाय राजकुमार की तरफ देखना ज़्यादा अच्छा लग रहा था।

राजकुमार ने राजकुमारी से पूछा — "क्या मैं तुम्हारे पिता से शादी के लिये तुम्हारा हाथ माँग सकता हूँ? अगर वह तुमको मुझसे शादी करने की इजाज़त दे देंगे तो मैं तुमको अपने पिता के राज्य ले जाऊँगा जहाँ मैं तुमसे शादी कर लूँगा और तुम्हें तब तक प्यार करूँगा जब तक हम ज़िन्दा रहेंगे।"

यह सुन कर राजकुमारी मुस्कुरा दी और उसने तुरन्त ही उसका जवाब दे दिया। उसने भी उससे शादी करने और उसको ज़िन्दगी भर प्यार करने का वायदा किया।

उसने यह भी याद रखा कि वायदा तो वायदा होता है उसको निभाना ही चाहिये चाहे वह किसी से भी किया गया हो।

21 मेंढक और राजकुमारी[39]

जर्मनी की यह कहानी भी इससे पहले वाली कहानी "मेंढक राजकुमार" जैसी ही है।

एक बार की बात है कि एक शाम को एक राजकुमारी ने अपनी टोपी पहनी और जूते पहने और अकेली ही घूमने चल दी। चलते चलते वह एक जंगल में पहुँच गयी।

वहाँ उसने एक ठंडे पानी का सोता देखा जिसके बीच में एक गुलाब खिला हुआ था। वह वहीं सुस्ताने के लिये उस सोते के पास बैठ गयी। उसके हाथ में एक सुनहरी गेंद थी जो उसको बहुत अच्छी लगती थी।

वह वहाँ बैठी बैठी उस गेंद को उछाल उछाल कर खेल रही थी। एक बार वह इतनी ऊँची उछली कि वह उसके हाथ नहीं आयी और जमीन पर लुढ़कती चली गयी।

राजकुमारी उसके पीछे दौड़ी भी पर उसे पकड़ न सकी और वह पानी में चली गयी। राजकुमारी ने पानी में झाँका परन्तु पानी गहरा होने की वजह से वह पानी में जाने का साहस न कर सकी।

---

[39] The Frog Prince – a folktale of Germany, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.eastoftheweb.com/short-stories/UBooks/FrogPrin.shtml
This folktale has also been written by Brothers Grimm.

राजकुमारी बहुत दुखी हुई और कहने लगी — "काश, मेरी गेंद वापस मिल जाये तो मैं अपनी सब वेशकीमती कपड़े और जवाहरात और जो कुछ भी मेरे पास है मैं उसे वह सब दे दूँ।"

यह सुनते ही एक मेंढक ने अपना मुँह पानी से बाहर निकाला और बोला — "राजकुमारी, तुम इतनी ज़ोर से क्यों रोती हो?"

राजकुमारी बोली — "ओ गन्दे मेंढक, तुम मेरी क्या सहायता कर सकते हो? मेरी सुनहरी गेंद पानी में गिर गयी है। मैं उसी के लिये रोती हूँ।

पर अगर तुम उसे निकाल दो तो मैं अपनी सब वेशकीमती कपड़े और जवाहरात और जो कुछ भी मेरे पास है मैं वह सब तुम्हें दे दूँगी।"

मेंढक बोला — "मुझे तुम्हारे वेशकीमती कपड़े और जवाहरात आदि नहीं चाहिये, मगर अगर तुम मुझे प्यार करो, अपने साथ रखो, अपने साथ सोने की थाली में खाना खिलाओ, अपने छोटे से बिछौने पर सोने दो तो मै तुम्हारी गेंद ला सकता हूँ।"

राजकुमारी सोचने लगी कि यह मेंढक क्या बेकार की बातें कर रहा है। यह तो पानी से बाहर ही नहीं आ सकता। पर हो सकता है कि वह मेरी गेंद निकाल दे इसलिये मैं इसकी बात माने लेती हूँ।

यही सोच कर वह बोली — "अगर तुम मेरी गेंद निकाल दो तो जो कुछ तुम चाहते हो वह मैं तुम्हारे लिये करने को तैयार हूँ।"

मेंढक ने एक डुबकी लगायी और कुछ ही पल में गेंद मुँह में दबाये ऊपर आ गया और उस गेंद को उसने जमीन पर फेंक दिया। जैसे ही राजकुमारी ने अपनी गेंद देखी तो वह बहुत खुश हुई और उसे उठाने को दौड़ी।

वह अपनी गेंद पा कर इतनी ज़्यादा खुश थी कि उसने मेंढक की तरफ मुड़ कर भी नहीं देखा और अपनी गेंद उठा कर तुरन्त ही घर की ओर दौड़ी चली गयी।

मेंढक ने उसे पुकारा भी — "रुको, राजकुमारी रुको, अपने वायदे के अनुसार मुझे भी अपने साथ ले लो।" परन्तु वह तो यह जा और वह जा।

अगले दिन राजकुमारी जब खाना खाने बैठी तो उसने कुछ अजीब सी आवाज सुनी। उसे लगा जैसे कोई महल की संगमरमर की सीढ़ियों से ऊपर आ रहा है और फिर तुरन्त बाद ही किसी के धीरे से दरवाजा खटखटाने की आवाज सुनायी दी...

दरवाजा खोलो प्यारी राजकुमारी दरवाजा खोलो तुम्हारा प्यार खड़ा है
याद करो हमने तुमसे क्या कहा था उस फव्वारे के साये में जो जंगल में है।

तब राजकुमारी दौड़ कर गयी और उसने दरवाजा खोला। उसके सामने एक मेंढक खड़ा था। उसको तो वह बिल्कुल भूल ही गयी थी। वह डर गयी और डर के मारे तुरन्त ही दरवाजा बन्द कर के अपनी जगह पर आ बैठी।

उसके पिता राजा ने उसको डरा हुआ देख कर उससे पूछा — "क्या बात है बेटी? तुम इतना डरी हुई क्यों हो?"

वह बोली — "पिता जी, वहॉ एक गन्दा सा मेंढक है जिसने आज सुबह पानी में से मेरी गेंद बाहर निकाली थी।

मैंने उसे यह सोच कर उससे अपने साथ रहने के लिये कह दिया था कि वह तो कभी पानी से बाहर आ ही नहीं सकता मगर वह तो यहॉ खड़ा है और अन्दर आना चाहता है।"

इसी समय मेंढक ने फिर उसका दरवाजा खटखटाया और अपनी पहले वाली लाइनें दोहरायीं —

दरवाजा खोलो प्यारी राजकुमारी दरवाजा खोलो तुम्हारा प्यार खड़ा है
याद करो हमने तुमसे क्या कहा था उस फव्वारे के साये में जो जंगल में है

राजा बोला — "बेटी, जब तुमने उससे ऐसा कहा है तो तुम्हें अपना वायदा निभाना चाहिये और उसे अन्दर बुला लेना चाहिये।"

राजकुमारी ने दरवाजा खोल दिया और वह गन्दा मेंढक फुदकता हुआ अन्दर आ गया।

अन्दर आ कर वह राजकुमारी से बोला — "मुझे अपनी पास वाली कुर्सी पर बैठने में मेरी मदद करो न।" न चाहते हुए भी राजकुमारी ने उसे अपने पास वाली कुर्सी पर बिठा लिया।

जैसे ही राजकुमारी ने उसे अपने पास वाली कुर्सी पर बिठाया, वह बोला — "अब तुम अपनी थाली मेरे पास लाओ ताकि मैं भी उसमें से खाना खा सकूँ।"

राजकुमारी को उससे बड़ी नफरत सी हुई कि वह कैसे एक मेंढक को अपने साथ अपनी थाली में खाना खिलाये पर अपने वायदे को ध्यान में रखते हुए उसने चुपचाप अपनी सोने की थाली मेंढक के पास खिसका दी।

जब मेंढक पेट भर खाना खा चुका तो बोला — "अब मैं बहुत थक गया हूँ, तुम मुझे अपने पलंग पर ले चलो, मैं सोऊँगा।"

न इच्छा होते हुए भी राजकुमारी उसे अपने हाथों में उठा कर ऊपर ले गयी और अपने बिछौने में अपने तकिये के ऊपर उसे लिटा दिया जहाँ वह सारी रात सोता रहा। सुबह होते ही वह कूदा और घर से बाहर चला गया।

राजकुमारी ने सोचा कि शायद अब वह चला गया और अब फिर नहीं आयेगा मगर यह उसकी भूल थी क्योंकि अगले दिन शाम को वह फिर आ गया और फिर वैसा ही हुआ जैसा कि पहली शाम को हुआ था।

वह आ कर बोला —

दरवाजा खोलो प्यारी राजकुमारी दरवाजा खोलो तुम्हारा प्यार खड़ा है
याद करो हमने तुमसे क्या कहा था उस फव्वारे के साये में जो जंगल में है

राजकुमारी ने फिर से दरवाजा खोला तो देखा कि वही मेंढक फिर दरवाजे पर खड़ा था। वह फिर अन्दर आ गया और पहली रात की तरह से राजकुमारी के साथ खाना खाया और फिर उसके बिस्तर पर सो गया और सुबह तक सोता रहा।

और फिर तीसरी शाम को भी ऐसा ही हुआ। परन्तु अगले दिन सुबह उसे बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसने अपने बिछौने पास मेंढक की बजाय एक सुन्दर राजकुमार को खड़े देखा।

तब उस राजकुमार ने उसे बताया कि एक बुरी परी ने उसको शाप दे दिया था जिससे वह मेंढक में बदल गया था और उसे इस रूप में तब तक वहॉ रहना था जब तक कोई राजकुमारी आ कर उसे निकाले नहीं और अपने साथ सुलाये नहीं।

तुमने मेरे ऊपर पड़ा यह जादू दूर कर दिया। अब मेरी कोई इच्छा नहीं है सिवाय इसके कि तुम मेरे साथ मेरे पिता के राज्य में चलो जहॉ मैं तुमसे शादी कर सकूॅ। मैं तुमसे वायदा करता हूॅ कि मैं तुमको ज़िन्दगी भर प्यार करता रहूॅगा।"

राजकुमारी तुरन्त तैयार हो गयी। आठ घोड़ों की शाही सवारी में बैठ कर वे राजकुमार के राज्य चल दिये। वहॉ जा कर उनकी शादी हो गयी। सारे राज्य में खूब खुशियॉ मनायी गयीं और वे सारी ज़िन्दगी सुख से रहे।

22 बीन्स एक तरफ से फटी हुई क्यों[40]

यह बहुत पुरानी बात है कि जर्मनी में एक बार एक बुढ़िया के घर में उसकी आलमारी में केवल एक समय के पकाने के लायक बहुत थोड़ी सी बीन्स[41] रह गयी थीं।

उसने वे बीन्स उठायीं और उनको पकाने के लिये एक खाली बर्तन में डाला। जैसे ही वे बीन्स उसने उस खाली बर्तन में डालीं और वे उस बर्तन की तली से जा कर टकरायीं। उनमें से एक बीन उछल कर बर्तन के बाहर आ गयी और फर्श पर कुछ दूर जा कर गिर गयी।

उस बुढ़िया को यह पता ही नहीं चला कि एक बीन बर्तन में से छिटक कर बाहर जा पड़ी है। उसने उस बर्तन में पानी डाला और उसके नीचे आग जला दी।

उसने थोड़ा सा भूसा धीमी जलती आग पर डाला ताकि वह जल्दी से जल जाये। जैसे ही वह ऐसा कर रही थी कि हवा का एक झोंका आया और उसमें से एक तिनके को वहॉ से उड़ा कर ले गया

---

[40] Why Beans Have a Split Side – a folktale from Germany, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=62
Adapted from the "Brothers Grimm" story "The Straw, the Coal and the Bean".

[41] Beans is generic term for any kind of seed grown in a pod (legumes). They can be green also with pod like green beans, cluster beans etc; or dry beans also like soy beans, broad beans, black-eyed beans, all whole pulses (lentils, black lentils, green lentils etc). Here beans word means dry beans like black-eyed beans. See its picture above.

और वह तिनका भी उड़ कर फ़र्श पर पड़ी उस बीन के पास जा गिरा।

उस बुढ़िया को इस तिनके के उड़ जाने का भी पता नहीं चला। बर्तन के नीचे आग जला कर वह बुढ़िया अपने दूसरे कामों में लग गयी।

पर जैसे ही वह आग के पास से हटी कि एक लाल जलता हुआ कोयला आग में से कूदा और उस तिनके और बीन के पास जा पड़ा।

बीन ने उन दोनों को देखा तो बोली — "अच्छे दोस्तों, तुम लोग कहॉ से आये हो?"

कोयला बोला — "अपनी अच्छी किस्मत से मैं आग में जलने से बच कर आ गया हूँ वरना मैं तो उस आग में जल कर राख ही हो गया होता।"

तिनका बोला — "मैं भी आग में जलने से बच कर आ गया हूँ। धन्यवाद उस हवा के झोंके का जिसने मुझे वहॉ से उड़ा कर और यहॉ डाल कर आग से आजादी दी।

मेरे भाई लोग और मैं एक छोटे से बक्से में पड़े हुए थे। हम लोग किसी को कोई तकलीफ भी नहीं पहुँचा रहे थे कि बस उस बुढ़िया ने हमको जलाने की कोशिश की। केवल मैं ही वहॉ से बच सका।"

बीन बोली — "ऐसा लगता है कि हम लोगों की अच्छी किस्मत ने हम सबकी सहायता की है। कुछ ही मिनटों में अपनी दूसरी बहिनों की तरह से मैं भी पानी से भीग जाती और उबल जाती जब तक कि मेरी खाल मेरे शरीर से अलग नहीं हो गयी होती।"

तिनका बोला — "पर अब हम क्या करें? क्योंकि यह जगह तो हममें से किसी के लिये भी सुरक्षित नहीं है।"

बीन बोली — "क्योंकि हम सब इस मुसीबत से एक साथ बचे हैं इसलिये ऐसा लगता है कि हम लोगों को अब साथ साथ ही रहना चाहिये और दुनियॉ में बाहर निकल कर अपनी किस्मत आजमानी चाहिये।"

यह सलाह बाकी दोनों को अच्छी लगी सो वे तीनों उस बुढ़िया की ऑख बचा कर घर छोड़ कर चल दिये। बहुत जल्दी ही वह बुढ़िया को बहुत पीछे छोड़ कर बहुत आगे चले गये।

वे तीनों अपने आजादी के रास्ते पर चले जा रहे थे कि वे एक नदी के किनारे आ पहुॅचे। क्योंकि वह नदी बहुत ही उथली थी और चौड़ी भी कम थी इसलिये उसके पार करने के लिये किसी आदमी या जानवरों ने उसके ऊपर कोई पुल नहीं बनाया था।

पर इस नदी को चल कर पार करना इन तीनों यात्रियों में से किसी के लिये भी मुमकिन नहीं था। वे उस नदी को पार नहीं कर पा रहे थे।

तिनका बोला — "मुझे एक विचार सूझा है। क्योंकि मैं हम सबमें सबसे लम्बा हूँ तो मैं नदी के इस पार से उस पार तक लेट जाता हूँ और तुम दोनो मेरे ऊपर चढ़ कर इस नदी को पार कर लो।"

बीन और कोयला यह सुन कर बहुत खुश हुए। सो तिनका नदी के दोनों किनारों के बीच में लेट गया।

कोयले ने उसके ऊपर चढ़ कर नदी को पार करना शुरू किया। तो पहले तो वह उसके ऊपर जल्दी से चढ़ा पर तिनका मजबूती से लेटा रहा पर जब वह कोयला नदी के आधे रास्ते आया तो उसने देखा कि पानी तो नदी में बहुत ज़ोर से बह रहा है। उस पानी के बहाव को देख कर वह डर गया।

पहले तो वह धीरे धीरे चला पर फिर वह तिनके के बीच में आ कर तो बिल्कुल ही रुक गया। उसके बोझ और गर्मी से तिनका टूट गया। कोयला अभी भी खूब लाल और गर्म था। सो दोनों पानी में गिर गये और पानी के साथ बह गये।

बीन की सॉस में सॉस आयी जब उसने देखा कि वही एक ज़िन्दा बच गयी है। वह हॅसने लगी और इतनी हॅसी इतनी हॅसी कि वह एक तरफ से फट गयी।

यहीं यह बीन भी खत्म हो गयी होती और यह कहानी भी पर ऐसा नहीं हुआ। तभी वहॉ से एक दर्जी गुजर रहा था। उसने यह सब देखा तो उसको बीन के ऊपर दया आ गयी।

उसने अपना सुई धागा निकाला जो वह हमेशा अपने पास रखता था। उसने तुरन्त ही बीन को उठा लिया और उसको उसकी फटी हुई जगह से सिल दिया।

इस तरह से वह बीन फिर बहुत दिनों तक ज़िन्दा रही। उसका परिवार भी हुआ और वह फिर बूढ़ी हो कर मरी।

जब दर्जी ने फटी बीन को सिला तो इत्तफाक से उस समय के पास केवल काला धागा ही था सो उसने उसे काले धागे से ही सिल दिया। सो उस दिन से ले कर आज तक हर बीन चाहे कोई भी बीन क्यों न हो एक तरफ से गाढ़े रंग से सिली हुई ही होती है।

23 दलिये का बर्तन[42]

एक बार की बात है कि जर्मनी में एक छोटी सी गरीब लड़की अपनी मॉ के साथ रहती थी। ये दोनों एक ऐसे गॉव में रहती थीं जहॉ सारे ही लोग गरीब थे। लोगों के पास खाना ही नहीं था।

यह लड़की भी बजाय खेलने के अपना सारा समय खेतों में गुजारती थी जहॉ वह फसल कट जाने के बाद अन्न के दाने ढूँढा करती थी।

इस तरह से दाने बटोरना आसान काम नहीं था। कई बार उसको अपने हाथों पर चलना पड़ता और दानों की वे बालियॉ उठानी पड़ती जो मिट्टी में पड़ी होतीं थीं जो फसल काटने के बाद आदमी लोग वहॉ छोड़ जाते थे।

वह और कई और लड़कियॉ उन खेतों के मालिक से उनके खेतों में से इस तरह अन्न बीनने के लिये इजाज़त मॉग लेती थीं और इस तरीके से थोड़ा बहुत अनाज इकट्ठा कर लेती थीं।

वे भी उनको यह इजाज़त इस शर्त पर दे देते थे कि जो कुछ वे इकट्ठा करेंगीं उसका आधा वे उनको दे देंगी।

---

[42] The Porridge Pot - a folktale from Germany, Europe. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=14
Collected and retold by Mike Lockett

जब वे दाने बीन रही होती थीं तो उनको चिड़ियों का बहुत ख्याल रखना पड़ता था। वे चिड़ियें उन लड़कियों से मुकाबला करतीं और वहॉ से दाने उठा लेतीं।

कुल मिला कर यह एक मेहनत का काम था – कुछ दाने उठाना, फिर उनकी धूल झाड़ना, उन्हें अपने ऐप्रन में रखना और हर समय वहॉ आती चिड़ियों को उड़ाना।

वे चिड़ियॉ उनसे नाराज रहतीं क्योंकि उनको लगता कि वे लड़कियॉ उनके हिस्से का खाना ले जा रही हैं।

सारी सुबह गर्मी में काम कर के वे लड़कियॉ उस खेत का आखिरी दाना तक उठा लेती थीं। उसका आधा वे उस खेत के मालिक को दे देती थीं जैसा कि उनका उनसे वायदा था और बाकी का आधा घर ले आती थीं।

एक दिन जब वे लड़कियॉ दाने उठा कर घर की तरफ रवाना हुईं तो दोपहर हो चुकी थी। रास्ते में उनको एक छोटी सी बुढ़िया मिली जो खाने की भीख मॉग रही थी — "नमस्ते बच्चों, क्या तुम मुझे कुछ खाना दोगी? मैं बहुत भूखी हूॅ।"

दूसरी लड़कियों ने तो जब वे उस बुढ़िया के पास से निकलीं तो उधर से उन्होंने अपना मुॅह फेर लिया पर वह छोटी गरीब लड़की उसकी तरफ देखे बिना न रह सकी। वह उसके पास आ गयी।

बुढ़िया बोली — "बेटी, क्या तुम एक बुढ़िया की सहायता नहीं करोगी?"

हालॅकि वह लड़की गरीब थी और उसने अपने इकट्ठा किये हुए दानों में से आधे दाने तो खेत के मालिक को ही दे दिये थे अब वे बचे हुए आधे दाने भी उन दोनों मॉ बेटी के लिये काफी नहीं थे पर उसकी मॉ ने उसको चीज़ों को बॉट कर इस्तेमाल करना सिखाया था।

उसको मालूम था कि अगर उसमें से उसने उस बुढ़िया को कुछ दाने भी दे दिये तो उसके अपने दलिये में पानी ज़्यादा हो जायेगा और उनका पेट नहीं भरेगा।

फिर भी उसने अपने ऐप्रन में इकट्ठे किये हुए दानों के दो बराबर हिस्से किये और उनमें से एक हिस्सा उस बुढ़िया को दे कर कहा — "भगवान आपका भला करे।"

बुढ़िया उन दानों को ले कर बहुत खुश हो गयी। वह बोली — "बेटी, क्योंकि तुमने मेरे ऊपर इतनी दया की है तो तुम यह बर्तन लेती जाओ।"

इतना कह कर उसने अपने पीछे की एक झाड़ी के पीछे से लोहे का एक बर्तन निकाला और उस लड़की को दे दिया।

पहले तो वह लड़की उस बर्तन को ले नहीं रही थी पर उसको लगा कि उस बर्तन को उस बुढ़िया से न ले कर वह उसका दिल

दुखा रही है सो उसने उससे वह बर्तन ले लिया और बोली — "बहुत बहुत धन्यवाद मॉ जी।"

बुढ़िया बोली — "कोई बात नहीं बेटी। खुश रहो।"

उसके बाद उस बुढ़िया ने उसको एक भेद की बात बतायी — "तुम यह बर्तन ले जाओ। तुमको केवल यह कहना है "ओ छोटे बर्तन उबलो।" बस इस बर्तन में तुम्हारे लिये मीठा दलिया उबलने लगेगा।

उसके बाद उससे कहना "ओ छोटे बर्तन रुक जाओ।" तो इस बर्तन में वह दलिया उबलना बन्द हो जायेगा।

उस छोटी लड़की को यह सब कहानी सी लगी पर फिर भी वह वह उस बर्तन को अपने घर ले गयी।

जब वह घर पहुॅची तो उसने सोचा कि उसको उस बर्तन को कम से कम जॉचना तो चाहिये कि उस बुढ़िया की कहानी सच थी भी या नहीं।

उसने बर्तन को रसोईघर में रखा और बोली — "ओ छोटे बर्तन उबलो।" बस तुरन्त ही उसमें कई दिनों के लिये दलिया उबल कर तैयार हो गया।

उसने फिर कहा — "ओ छोटे बर्तन रुक जाओ।" बस उस बर्तन में वह दलिया उबलना बन्द हो गया।

उस लड़की और उसकी मॉ ने वह दलिया खुद भी खाया और अपने उन पड़ोसियों को भी दिया जो उनके इधर उधर रहते थे।

क्योंकि यह अच्छी बात नहीं थी कि जब पास में लोग भूखे हों तो खाना केवल खुद ही खाया जाये।

जब उन्होंने देखा कि उनके सामने वाले और पीछे वाले घरों में भी खाना नहीं था तो उस लड़की ने घर आ कर फिर उस बर्तन से कहा — "ओ छोटे बर्तन उबलो।"

एक बार उस बर्तन ने फिर से काफी सारा दलिया कई दिनों के लिये उबाल दिया। वह उसमें से कुछ दलिया उन लोगों को भी दे आयी जिनके पास खाना नहीं था क्योंकि यह अच्छी बात नहीं थी कि जब पास में लोग भूखे हों तो खाना केवल खुद ही खाया जाये।

कुछ हफ्ते बाद जब वह लड़की घर में नहीं थी, अपनी किसी दोस्त के घर गयी हुई थी तो उसकी मॉ को भूख लगी। उसने अपनी बेटी को उस बर्तन में दलिया पकाते देखा था सो उसने भी बर्तन को बोल दिया — "ओ छोटे बर्तन उबलो।"

बस उस बर्तन में दलिया उबलने लगा। पर उसको यह नहीं मालूम था कि उसको रोकते कैसे हैं सो वह उसको रोक नहीं पायी। दलिया उबलता गया, उबलता गया, और उबलता गया। वह बर्तन के बाहर तक निकल गया। फिर वह रसोईघर के फर्श पर फैल गया क्योंकि उसको कोई रोकने वाला तो था नहीं।

वहॉ से भी बाहर निकल कर वह घर भर में फैल गया। वहॉ से भी आगे बढ़ कर वह बाहर गली में चला गया और सबके घरों में घुस गया।

कुछ देर बाद वह छोटी लड़की घर वापस लौटी तो उसने अपने घर में से दलिये की नदी बहती देखी। वह तुरन्त बाहर से चिल्लायी — "ओ छोटे बर्तन रुक जाओ।"

यह सुनते ही उस बर्तन में दलिया उबलना बन्द हो गया।

पर अब सब घरों में लोग अपने अपने तरीके से अपना दलिया खा रहे थे। सबके लिये यह एक बहुत बड़ा आश्चर्य था पर कोई शिकायत नहीं कर रहा था। फिर वे महीनों तक भूखे नहीं रहे।

यह अच्छी बात नहीं है न कि जब पास में लोग भूखे हों तो खाना केवल खुद ही खाया जाये।

24 इच्छाऐं पूरी करने वाली खाल[43]

एक बार एक लकड़हारा जिसका नाम रुडोल्फ[44] था अपनी पत्नी के साथ एक जंगल में एक झोंपड़ी में रहता था। वह बहुत ही गरीब था।

वह जंगल जहॉ वह रहता था इतना घना था कि उधर कोई नहीं आता जाता था लेकिन फिर भी उस लकड़हारे को कभी अकेलापन महसूस नहीं होता था।

जब वह घर पर होता तो अपनी पत्नी के साथ आग के पास बैठ कर उससे बातें करता और जब वह जंगल में जाता तो वहॉ वह जंगल के जानवरों और चिड़ियों से बातें करता।

वह अक्सर उनसे कहा करता — "मैं दुनियॉ के खजाने को छोड़ कर तुम्हारे जैसे दोस्तों के साथ रहना ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

एक दिन एक राजा उस जंगल में शिकार खेलने आया। उसके साथ उसकी रानियॉ, राजकुमार, राजकुमारियॉ, दरबारी और उनकी पत्नियॉ भी थे।

पहले वे एक बार आये फिर वे दोबारा आये और फिर वे तीसरी बार भी आये। अब उनको यह जंगल इतना पसन्द आया कि वे करीब करीब रोज ही आने लगे।

---

[43] The Wishful Skin – a folktale from Germany, Europe.

[44] Rudolf – name of the woodcutter

उनके कपड़े बहुत बढ़िया होते। वे चॉदी की घंटियॉ पहने घोड़ों पर सवार हो कर आते। साथ में उनके नौकर चाकर अच्छे अच्छे खाने और बढ़िया शराब लाते और फिर वे जंगल में खूब मौज मस्ती मनाते।

कभी कभी कोई रुडोल्फ की झोंपड़ी के तरफ भी आ निकलता और उसमें झॉकता। अन्दर झॉक कर वह हॅसता और कहता — "उॅह, इस पुरानी मेज को देखो जिस पर मेजपोश भी नहीं है। अरे, यहॉ तो कुर्सी भी नहीं है। यह कितने पुराने ढंग का घर है।"

जब वह तीन टॉग का स्टूल देखता तो कहता — "ओह, इस घर में रहने वाले की पैन्ट में तो गद्दियॉ लगी होनी चाहिये तभी वह इतने सख्त स्टूल पर बैठ सकता है।"

और फिर वह जब रुडोल्फ की जोड़ और पैबन्द लगी पैन्ट देखता तो कहता — "मैंने ठीक ही कहा था न?"

रुडोल्फ ऐसी अपमानजनक बातें सुनता और खून का सा घूॅट पी कर रह जाता। धीरे धीरे वह असन्तुष्ट रहने लगा। वह सोचता — "मैं इतना गरीब क्यों हूॅ और वे लोग इतने अमीर क्यों हैं।"

और वह ऐसे चेहरे से जंगल जाता कि जंगल के सारे पशु पक्षी उसको देख कर घबरा जाते।

एक दिन एक खरगोश ने उससे कहा — "रुडोल्फ भाई, क्या बात है तुम कुछ उदास दिखायी दे रहे हो?"

रुडोल्फ बनावटी मुस्कुराहट के साथ बोला — "कोई खास बात नहीं खरगोश भाई, बस मेरी भी कभी कभी इच्छा होती है कि काश, मैं भी अमीर होता। बस इतनी सी बात है।"

खरगोश मुस्कुराया और बोला — "बिना इच्छा पूरी करने वाली खाल के कोई भी इच्छा करना बेवकूफी है। तुम यहीं रुको मैं अभी आता हूँ।"

कह कर वह खरगोश वहाँ से जाने ही वाला था कि रुडोल्फ अपनी कुल्हाड़ी रख कर बैठ गया और बोला — "तुमने क्या कहा खरगोश भाई? इच्छा पूरी करने वाली खाल? यह क्या बला है?"

खरगोश बोला — "रुको, मैं अभी तुम्हें दिखाता हूँ।" कह कर वह झाड़ियों के पीछे कूद गया और तुरन्त ही एक खाल ले कर लौटा जो देखने में मकड़ी के जाले जैसी बुनी हुई लगती थी।

वह बोला — "यह देखो, यह है वह खाल। पर इस खाल के बारे में तुम किसी से कुछ कहना नहीं। यह खाल परियों की है और वे हमेशा इसे छिपा कर रखती हैं क्योंकि हमेशा ही उन्हें इसकी चोरी का डर बना रहता है। यह बड़ी कीमती है और यह इच्छाओं की बनी हुई है।"

रुडोल्फ ने खरगोश की ओर चालाकी से देखते हुए कहा — "खरगोश भाई, मान लो अगर मैं इसे पहन लूँ तो?"

सुनते ही खरगोश थोड़ा सा डर गया फिर बोला — "यह खाल मेरी नहीं है रुडोल्फ भाई। सो अगर इसे पहनने के बाद तुमने कोई भी इच्छा की तो परियों को पता चल जायेगा और मैं आफत में पड़ जाऊँगा।

इस खाल में एक खास बात और भी है और वह यह कि अगर इसको पहनने के बाद तुमने कोई भी इच्छा की तो तुम्हारी वह इच्छा तो पूरी हो जायेगी पर इसका एक धागा टूट जायेगा और यह उतनी ही छोटी हो जायेगी क्योंकि इसकी इतनी सारी इच्छाओं में से एक इच्छा पूरी हो गयी।

सो अगर तुम यह खाल पहन लो तो तुम्हारी केवल उतनी ही इच्छाऐं पूरी हो पायेंगी जितने इसमें धागे हैं।"

रुडोल्फ ने कहा — "बेवकूफ न बनो खरगोश भाई, क्या तुम सोचते हो कि मैं तुम्हें आफत में डालूँगा? पर पहले मुझे इसे देखने तो दो कि यह कैसे काम करती है।"

कह कर उसने अपना कोट उतार दिया और फिर एक ज़ोर की ताली बजायी जिससे खरगोश डर कर उछल पड़ा और उतनी ही देर में रुडोल्फ ने झटके से वह खाल उसके हाथ से छीन कर पहन ली।

"हा, हा, हा, अब मेरी इच्छा है कि यह मुझसे चिपक जाये और कभी अलग न हो।"

बेचारा खरगोश चिल्लाया — "अरे रुडोल्फ भाई यह तुमने क्या किया? इसे मुझे वापस कर दो। परियाँ क्या कहेंगी। तुमने तो पहले

ही अपनी एक इच्छा पूरी कर के और इसका एक धागा कम कर के इसे छोटा कर दिया है। सुनो, इसे मुझे वापस कर दो।"

रुडोल्फ बोला — "तुम बेवकूफ हो खरगोश भाई, अब तो यह मुझसे अलग हो ही नहीं सकती। मैं इसे तुमको कैसे दे दूँ?"

खरगोश चीखा — "इसे मुझे वापस कर दो नहीं तो ठीक नहीं होगा।"

खरगोश इतने ज़ोर से चीखा कि रुडोल्फ को थोड़ी शर्म आ गयी परन्तु साथ में गुस्सा भी आया और वह खरगोश से बोला — "क्या तुम चुप नहीं रहोगे? मेरी इच्छा है कि तुम अभी अभी मेरी ऑखों से दूर हो जाओ।"

वह आगे कुछ और कहने जा ही रहा था कि उसने देखा कि खरगोश तो वहॉ से कब का गायब हो चुका था।

"अहा, मजा तो अब आयेगा। अब मैं जो चाहूँ पा सकता हूँ।" उसने अपना कोट उठाया और घर की ओर चल दिया।

जब वह घर के दरवाजे के पास पहुँचा तो पहले वह कुछ पल सोचता रहा फिर अन्दर घुसा और अपनी पत्नी के पास जा कर बैठ गया। वह उस समय आग के पास बैठी थी।

उसने अपनी पत्नी से कहा — "आज तुम्हारे पास क्या खाना है? क्या तुम्हारे पास बढ़िया खाना है? जैसे मुर्गी, सॉस, कबाब।"

पत्नी उसे आश्चर्य से घूरने लगी कि आज उसके पति को क्या हो गया है। वह बोली — "क्या तुम पागल हो गये हो? यह सब कहॉ से आयेगा? यहॉ तो केवल डबल रोटी और शहद है जो तुम रोज खाते हो।"

"उॅह, आज तो मेरी इच्छा है कि अपने खाने की मेज पर मुर्गा हो, सौस हो, कबाब हो, बढ़िया शराब हो। साथ ही ये सब चीज़ें किसी बढ़िया मेज पर सजी हों जहॉ सोने की तश्तरियॉ हों, चॉदी की चम्मचें हों, ऊॅची ऊॅची कुर्सियॉ हों और मखमली गद्दियॉ हों।"

"रुको, रुको," उसकी पत्नी बीच में ही चिल्लायी क्योंकि वह तो अब तक एक नयी मखमली गद्दी वाली कुर्सी पर बैठ भी चुकी थी और मुॅह से निकलते ही रुडोल्फ की सारी इच्छाऐं पूरी होती जा रही थीं।

"क्या, क्यों, कैसे?" पत्नी ने पूछा तो रुडोल्फ बोला — "प्रिये, यह सब इस खाल का कमाल है।" और फिर उसने उस खाल के बारे में उसको सब कुछ बता दिया।

खाल के बारे में सुन कर तो उसकी पत्नी उछल पड़ी और आश्चर्य से उसका बोल भी न फूटा। आश्चर्य कुछ कम होने पर तो उसने अपने पति को फिर चैन ही नहीं लेने दिया।

वह रात भर अपनी इच्छाऍ उसे बताती रही। जो भी इच्छा उनके मुॅह से निकलती वह उसी समय पूरी हो जाती — सुन्दर

बढ़िया कपड़े, बहुत सारा धन और सोना, महल, फूलों से भरा बागीचा, अनगिनत नौकर चाकर, सभी कुछ उनको इस खाल से मिल गया था।

इच्छाएँ पूरी होती रहीं और उन्हें पता भी न चला कि कब एक भयानक घटना घट गयी। रुडोल्फ की पत्नी अपनी इच्छाएँ पूरी करने में इतनी मग्न थी कि उसने देखा ही नहीं कि कब उसका पति सिकुड़ गया और सिकुड़ कर और छोटा होता जा रहा था।

बच्चो क्या तुम्हें याद आया कि ऐसा क्यों हो रहा था? तुम्हें याद होगा कि वह खाल रुडोल्फ ने पहन ली थी और उसने यह इच्छा की थी कि वह कभी उसके शरीर से अलग न हो। इस तरह वह खाल उसके शरीर से चिपक गयी थी और इस प्रकार वह कभी न उतरने वाली खाल बन गयी थी।

और तुमको यह भी याद होगा कि खरगोश ने रुडोल्फ को इस खाल के बारे में यह भी बताया था कि उसकी एक इच्छा पूरी होने पर उस खाल का एक धागा टूट जायेगा और वह खाल उतनी ही छोटी हो जायेगी।

इसी लिये जैसे जैसे उनकी इच्छाएँ पूरी होती जा रही थीं वह खाल सिकुड़ती जा रही थी और उसके साथ साथ सिकुड़ रहा था रुडोल्फ।

बेचारा बूढ़ा रुडोल्फ। अब उसे यह सब बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा था। अब उसकी इच्छा यह हो रही थी कि वह अब

बड़ा हो जाये परन्तु वह यह इच्छा नहीं कर सकता था क्योंकि इससे वह बड़ा होते होते फट भी सकता था। फिर वह खाल भी फट जाती और बेकार हो जाती।

लेकिन अब परेशानी यह थी कि उसकी पत्नी अभी भी सन्तुष्ट नहीं थी। आखिर उसकी पत्नी की इच्छा हुई कि वह रानी बने और उसका पति राजा और यह इच्छा करते ही तुरन्त ही वह एक बहुत बड़े महल में राज सिंहासन पर बैठी थी।

पर बेचारा रुडोल्फ, वह रानी के सामने बच्चे से भी छोटा लग रहा था। और वह धीरे धीरे इतना छोटा हो चुका था कि वह अब कुर्सी पर बैठ कर नहीं बल्कि मेज के ऊपर बैठ कर खाना खाता था।

उसके लिये एक खास छोटा सिंहासन बनवाया गया जैसी कि किसी गुड़िया की कुर्सी होती है और वैसी ही एक छोटी सी मेज। यह छोटी सी कुर्सी और मेज खाने के बड़े कमरे में खाने की बड़ी मेज पर रखी जाती और वहीं राजा रुडोल्फ साहब अपना खाना खाते।

पर यह सब इतने बड़े राजा के लिये तो बहुत ही अपमानजनक था न। जो कोई भी उसको देखता हॅसे बिना न रहता। हालॉकि वे लोग अपने ऊपर काफी काबू करने की कोशिश करते पर फिर भी उस छोटे से राजा से वे खेले बिना न रह सकते जैसे वह कोई राजा न हो कर कोई खिलौना हो।

कुछ समय बाद एक इससे भी अधिक भयानक घटना घटी। रुडोल्फ की पत्नी अब उससे कतराने लगी थी क्योंकि उसे लोगों का अपने पति के ऊपर हॅसना बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता था।

उसने रुडोल्फ का मिलने जुलने वालों के सामने आना बन्द कर दिया। उसके लिये गुड़िया के घर जैसा एक छोटा घर बनवा दिया और उसे एक जगह पर रखवा दिया। और अब वह रुडोल्फ से उसी समय मिलने जाती थी जब उसको उससे अपनी कोई इच्छा पूरी करवानी होती थी।

अब तुम सोच सकते हो कि रुडोल्फ बेचारा कितना अकेलापन महसूस करता होगा। वह रोज सुबह उठता, अपना ताज पहनता और खिड़की में बैठ कर बाहर देखता रहता।

उसे आश्चर्य होता कि वह कितना छोटा हो गया है। फिर डरता कि इस तरह छोटा होते होते एक दिन वह कहीं गायब ही न हो जाये।

एक दिन वह अपनी खिड़की में बैठा बाहर झॉक रहा था कि उसने देखा कि एक लकड़हारा उधर से जा रहा था। उसके एक हाथ में कुल्हाड़ी थी और दूसरे हाथ से वह सिर पर रखा लकड़ी का गट्ठर सॅभाले था। वह मस्ती में गुनगुनाता चला जा रहा था।

रुडोल्फ ने उसे देख कर एक आह भरी और कहा — "ओह, मुझे इस आदमी से कितनी ईर्ष्या हो रही है। मेरी भी इच्छा है कि मैं भी यह सब भूल कर जंगल में अपनी पत्नी के साथ अपनी झोंपड़ी में रहूँ।"

बस, उसके इतना कहते ही यकायक एक ठंडी हवा का झोंका आया और रुडोल्फ ने देखा कि वह जंगल में लकड़ी का गट्ठर उठा रहा था और उसकी पत्नी झोंपड़ी में झोंपड़ी गरम करने के लिये आग जला रही थी और डबल रोटी और शहद लिये उसके आने का इन्तजार कर रही थी।

अब वह खुश था।

25 बतख लड़की[45]

एक बार की बात है कि एक विधवा रानी थी। उसके पति को मरे हुए काफी दिन बीत गये थे। उसके एक बेटी थी जिसकी शादी दूर देश के एक राजकुमार से पक्की हो चुकी थी।

जब उसकी शादी का समय आया तो उसने अपनी बेटी को उस राजकुमार के पास भेजा।

उसने अपनी बेटी के साथ बहुत सारे सोने और चॉदी के बर्तन, सोने और चॉदी की और बहुत सारी छोटी छोटी चीज़ें, प्याले और जवाहरात आदि यानी जो भी शाही दहेज में देने के लायक चीज़ें थीं सब बॉध दीं।

क्योंकि वह उसकी अकेली बेटी थी और वह उसको बहुत प्यार करती थी और उसको वह सब कुछ देना चाहती थी जो एक राजकुमारी को दिया जाना चाहिये था।

उसने अपनी बेटी के साथ एक दासी भी कर दी जो उसके साथ जाती। दोनों को एक एक घोड़ा दे दिया गया।

राजकुमारी के घोड़े का नाम फ़ालाडा था। वह एक जादुई घोड़ा था क्योंकि वह बोल सकता था। जब बेटी के जाने का समय आया

[45] The Goose Girl – a fairy tale from Germany, Europe. Written by Jacob and Wilhelm Grimm in Brothers Grimm' book – "Children's and Household Tales – Grimms' Fairy Tales".
This story is taken from http://www.pitt.edu/~dash/grimm089.html
The story was first translated into English by Edgar Taylor in 1826, then by many others.
Andrew Lang has included it in his "The Blue Fairy Book" in 1889.

तो रानी अपने सोने के कमरे में गयी और उसने चाकू से अपनी उँगलियॉ काटीं।

जब उनमें से खून निकलने लगा तो उसने एक सफेद कपड़ा लिया और उसमें उस खून की तीन बूँद इकट्ठा की और अपनी बेटी को दे कर कहा "तुम इनका खास ख्याल रखना बेटी। रास्ते में ये तुम्हारे काम आयेंगी।"

लड़की ने वह कपड़ा अपने गले के पास अपने ब्लाउज़ में रख लिया। दोनों ने दुखी मन से एक दूसरे से विदा ली। फिर वह अपने घोड़े पर चढ़ी और अपनी दासी के साथ अपने पति के घर चल दी।

कुछ समय के सफर के बाद राजकुमारी को बहुत तेज़ प्यास लगी तो उसने अपनी दासी से कहा — "तुम घोड़े से उतरो और मेरे लिये जो प्याला तुम अपने साथ लायी हो उसमें मेरे लिये झरने से पानी ला दो। मुझे बहुत प्यास लगी है।"

दासी बोली — "अगर तुमको पानी चाहिये तो अपने आप झरने के पास जाओ और वहॉ लेट कर पानी पी आओ। मुझे अब आगे से तुम्हारी नौकरानी नहीं रहना।"

राजकुमारी कुछ नहीं बोली। वह अपने घोड़े से नीचे उतरी और पास के झरने पर गयी और खुद ही जा कर वहॉ पानी के ऊपर झुकी और पानी पिया।

वह अपने सोने के प्याले से पानी नहीं पी पायी क्योंकि उसकी दासी ने वह उसको दिया ही नहीं। अपनी यह हालत देख कर वह बहुत धीरे से बोली — "हे भगवान आगे मेरा क्या होगा।"

उसकी वे तीन खून की बूँदें बोलीं — "अफसोस, अगर तुम्हारी माँ को इस बात का पता चलता तो उसके दिल के तो दो टुकड़े हो जाते।" पर राजकुमारी बहुत ही नम्र थी सो वह कुछ नहीं बोली और चुपचाप वहाँ से आ कर अपने घोड़े पर चढ़ गयी।

वे लोग कुछ देर और चले। दिन बहुत गरम था सो कुछ दूर और चलने के बाद राजकुमारी को फिर से प्यास लग आयी। उसने फिर से अपनी नौकरानी को अपने लिये पानी लाने के लिये कहा। मगर उस नौकरानी ने फिर से उसको वही जवाब दिया कि वह अब उसकी नौकरानी नहीं है। वह जा कर अपने आप पानी पी ले।

राजकुमारी बेचारी फिर अपने घोड़े पर से उतरी, पानी के पास गयी और उस बहते पानी के ऊपर झुक कर रो पड़ी और बोली — "हे भगवान, आगे मेरा क्या होगा।"

उसकी वे तीन खून की बूँदें फिर वही बोलीं — "अफसोस, अगर तुम्हारी माँ को इस बात का पता चलता तो उसके दिल के तो दो टुकड़े हो जाते।"

इस बार जब राजकुमारी पानी पीने के लिये नदी के ऊपर झुकी तो उसके ब्लाउज़ में से उसका वह खून की बूँदों का कपड़ा नदी में

गिर गया और बह गया। राजकुमारी को इस बात का पता ही नहीं चला।

पर राजकुमारी की दासी ने यह सब देख लिया। उसने जान लिया कि अब वह राजकुमारी पर हुक्म चला सकती थी। क्योंकि राजकुमारी की अब ताकत कम हो गयी थी और वह अब कमजोर भी हो गयी थी।

उसने इस मौके का फायदा उठाया। जब राजकुमारी वापस आ कर अपने घोड़े पर चढ़ने लगी तो उसने राजकुमारी से कहा — "वह घोड़ा तो मेरा है और यह घोड़ा तुम्हारा है। तुम इस घोड़े पर बैठो और मैं तुम्हारे वाले घोड़े पर बैठूँगी।" राजकुमारी को उसकी बात माननी पड़ी।

फिर दासी ने उससे उसके शाही कपड़े भी उतरवा लिये और अपने पुराने कपड़े उसको पहनने के लिये दे दिये।

उसके बाद दासी ने उसे इस बात की कसम खाने के लिये भी कहा कि अगर उसने इस सबके बदलने के बारे में उसने किसी से कुछ भी कहा तो वह उसको मार देगी। बेचारी राजकुमारी को यह कसम भी खानी पड़ी।

राजकुमारी का फ़ालाडा घोड़ा यह सब देख रहा था उसने सब बातें याद कर लीं।

अब वह दासी राजकुमारी के कपड़े पहन कर उसी के घोड़े फ़ालाडा पर बैठ कर चल दी जबकि राजकुमारी अपनी दासी के

कपड़े पहन कर उस दासी के घोड़े पर बैठ कर उसके पीछे पीछे चलती रही।

आखिर वे दोनों राजकुमार के महल में आयीं तो वह दासी तो ऐसी दिखायी दे रही थी जैसे कि वह उसकी मॅगेतर राजकुमारी हो और पीछे आती हुई राजकुमारी ऐसी लग रही थी जैसे उसकी दासी हो।

राजकुमार उनको बाहर लेने के लिये आया तो उसने यह सोचते हुए नकली राजकुमारी को घोड़े पर से उतारा कि वही उसकी दुलहिन थी। राजकुमार उसको ऊपर महल में ले गया और उस दासी को नीचे ही छोड़ गया।

उधर राजा ने ऊपर खिड़की से देखा तो एक लड़की को नीचे खड़े इन्तजार करते पाया। उसने देखा कि वह लड़की तो बहुत सुन्दर और बहुत ही कोमल थी। सो वह उसको शाही महल में गया और राजकुमार की पत्नी से उस लड़की के बारे में पूछा जो ऑगन में खड़ी थी कि वह कौन थी।

नकली राजकुमारी ने कहा कि उसने उसको साथ के लिये रास्ते से ले लिया था और उसको कुछ काम दे दिया था ताकि वह खाली न बैठी रहे।

पर राजा के पास तो उसको देने के लिये कोई काम नहीं था और उसको पता भी नहीं था कि वह क्या कहे सिवाय इसके "मेरे पास एक लड़का है जो हमारी बतखों की देखभाल करता है।

उस लड़के का नाम कौनरैड[46] है। यह लड़की उस लड़के की बतखों की देखभाल करने में सहायता कर दिया करेगी।"

राजा के जाने के तुरन्त बाद नकली राजकुमारी अपने होने वाले पति से बोली — "प्रिय, तुम मेरा एक काम कर दो।"

राजकुमार बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। बोलो मैं तुम्हारे लिये क्या करूँ?"

नकली राजकुमारी बोली — "अभी मैं जिस घोड़े पर चढ़ कर आयी हूँ किसी को बुला कर उसका सिर कटवा दो क्योंकि उसने मुझे रास्ते में बहुत तंग किया था।"

तो ऐसा हुआ कि फ़ालाडा बेचारे को तो मरना ही पड़ा। असली राजकुमारी ने जब यह सुना तो उसने घोड़े को मारने वाले से प्रार्थना की कि वह उसको सोने का एक सिक्का देगी अगर वह उसका एक छोटा सा काम कर दे।

शहर में एक बड़ा सा दरवाजा था जिसमें से हो कर वह रोज सुबह शाम अपनी बतखों को ले कर जाया करती थी। अच्छा होगा अगर वह फ़ालाडा का सिर उस दरवाजे के नीचे टॉग दे। घोड़े मारने वाले ने ऐसा ही किया। उसने फ़ालाडा का सिर उस बड़े दरवाजे के नीचे कील से कस कर ठोक दिया।

[46] Conrad – name of the boy who took care of the King's ducks

अगले दिन जब राजकुमारी कौनरैड के साथ उस दरवाजे में से बाहर निकली तो उसने फ़ालाडा के सिर से कहा — "फ़ालाडा तुम तो मर गये और मेरी ज़िन्दगी की सारी खुशियॉ चली गयीं।"

फ़ालाडा बोला — "अफसोस ओ जाती हुई रानी, अगर तुम्हारी मॉ को पता चलता तो तुम्हारी मॉ के दिल के दो टुकड़े हो जाते।"

बतखों को मैदान में छोड़ कर राजकुमारी अपने बालों में कंघी करने बैठ गयी। उसके बाल असली सोने के थे।

उधर जब बतखें मैदान में घूम रहीं थी तो कौनरैड ने देखा कि राजकुमारी अपने बालों में कंघी कर रही थी तो उसको लालच हो आया कि वह उसके सुनहरी बालों में से कुछ बाल ले ले।

पर राजकुमारी ने यह भॉप लिया तो उसने जादू के कुछ शब्द बोले — "बहो हवा बहो। मैं कहती हूॅ कि कौनरैड का टोप उड़ा कर ले जाओ ताकि वह उसका तब तक पीछा करता रहे जब तक मैं कंघी कर के अपने बाल बॉधती हूॅ।"

उसके यह कहते ही हवा का एक इतने ज़ोर का झोंका आया कि वह कौनरैड का टोप उड़ा कर ले गया और उसका टोप मैदान के उस पार उड़ता ही चला गया। कौनरैड को उसको लेने के लिये उसके पीछे भागना पड़ा।

जब वह अपना टोप ले कर वापस आया तब तक राजकुमारी अपने बालों में कंघी कर के अपने बाल बॉध चुकी थी। अब तो कौनरैड उसका एक बाल भी नहीं ले सकता था।

यह देख कर कौनरैड को बहुत गुस्सा आया। वह उससे बोला भी नहीं। वे शाम तक इसी तरह से बिना बोले बतखों की देखभाल करते रहे और फिर घर चले गये।

अगली सुबह जब वे अपने बतखें फिर से उस दरवाजे से ले कर बाहर जा रहे थे तो राजकुमारी फिर बोली — "फ़ालाडा तुम तो मर गये और मेरी ज़िन्दगी की सारी खुशियॉ चली गयीं।"

फ़ालाडा बोला — "अफसोस ओ जाती हुई रानी, अगर तुम्हारी मॉ को पता चलता तो तुम्हारी मॉ के दिल के दो टुकड़े हो जाते।"

बतखों को मैदान में छोड़ कर राजकुमारी फिर अपने बालों में कंघी करने बैठ गयी। कौनरैड ने देखा कि राजकुमारी अपने बालों में कंघी कर रही थी तो उसको फिर से लालच हो आया कि वह उस के सुनहरी बालों में से कुछ बाल ले ले।

पर राजकुमारी ने यह फिर से भॉप लिया तो उसने फिर वही जादू के शब्द बोले — "बहो हवा बहो। मैं कहती हूॅ कि कौनरैड का टोप उड़ा कर ले जाओ ताकि वह उसका तब तक पीछा करता रहे जब तक मैं कंघी कर के अपने बाल बॉधती हूॅ।"

उसके यह कहते ही हवा का एक इतने ज़ोर का झोंका आया कि वह कौनरैड का टोप उड़ा कर ले गया और उसका टोप मैदान के उस पार उड़ता ही चला गया। कौनरैड को उसको लेने के लिये फिर से उसके पीछे भागना पड़ा।

जब तक वह अपना टोप ले कर वापस आया तब तक राजकुमारी अपने बालों में कंघी कर के अपने बाल बॉध चुकी थी। अब तो कौनरैड उसका एक बाल भी नहीं ले सकता था।

यह देख कर कौनरैड को फिर बहुत गुस्सा आया। वह उससे फिर नहीं बोला। वे शाम तक फिर पिछले दिन की तरह बिना बोले बतखों की देखभाल करते रहे और फिर घर चले गये।

उस शाम घर लौटने के बाद कौनरैड राजा के पास गया और उससे कहा — "मैं अब उस लड़की के साथ बतखें ले कर नहीं जाऊँगा।"

राजा ने पूछा — "क्यों?"

"क्योंकि वह मुझे सारे दिन गुस्सा दिलाती रहती है।"

राजा ने फिर पूछा — "पर यह तो बताओ कि हुआ क्या।"

कौनरैड बोला — "जब हम हम शहर के उस बड़े दरवाजे के नीचे से गुजरते हैं तो वहॉ एक घोड़े का सिर लगा हुआ है। वह रोज उससे कहती है - "फ़ालाडा तुम तो मर गये और मेरी ज़िन्दगी की सारी खुशियॉ चली गयीं।"

तो वह सिर बोलता है — "अफसोस ओ जाती हुई रानी, अगर तुम्हारी मॉ को पता चलता तो तुम्हारी मॉ के दिल के दो टुकड़े हो जाते।"

फिर कौनरैड ने राजा को मैदान का किस्सा भी बताया कि वहॉ क्या हुआ था। कैसे अचानक तेज़ हवा आयी और कैसे उसका टोप

उड़ा कर ले गयी और फिर कैसे उसे लेने के लिये उसको उसके पीछे भागना पड़ा।

यह सुन कर राजा ने कौनरैड को सलाह दी कि वह अगले दिन फिर से बतखों को ले कर मैदान जाये और वह इस मामले को खुद देखेगा।

अगले दिन सुबह होने से पहले ही राजा खुद उस बड़े दरवाजे के पीछे छिप कर बैठ गया और वहॉ उसने उस लड़की को फ़ालाडा के सिर से वही बात करते सुना जो कौनरैड ने उसे बतायी थी।

फिर उसने उस लड़की का मैदान तक पीछा किया और उसको देखने के लिये एक घनी झाड़ी के पीछे छिप कर बैठ गया। जल्दी ही वह लड़की और कौनरैड वहॉ अपनी बतखें लिये आ पहुॅचे।

बतखों को मैदान में छोड़ कर वह लड़की फिर से अपने बालों में कंघी करने बैठ गयी। राजा ने देखा कि उसके बाल सोने की तरह चमक रहे थे।

जल्दी ही उस लड़की ने गाना शुरू किया – "बहो हवा बहो। मैं कहती हूॅ कि कौनरैड का टोप उड़ा कर ले जाओ ताकि वह उसका तब तक पीछा करता रहे जब तक मैं कंघी कर के अपने बाल बॉधती हूॅ।"

उसके यह कहते ही हवा का एक इतने ज़ोर का झोंका आया कि वह कौनरैड का टोप उड़ा कर ले गया और उसका टोप मैदान

के उस पार उड़ता ही चला गया। कौनरैड को उसको लेने के लिये उसके पीछे भागना ही पड़ा।

जब तक वह अपना टोप ले कर वापस आया तब तक राजकुमारी अपने बालों में कंघी कर के अपने बाल बॉध चुकी थी।

इस तरह जो कुछ कौनरैड ने कहा था वह सब राजा ने अपनी ऑखों से देखा। यह सब देख कर राजा वहॉ से चुपचाप चला आया। किसी को पता नहीं चला कि राजा वहॉ आया था।

शाम को जब वह लड़की और कौनरैड घर वापस आ गये तो राजा ने उस लड़की को अपने पास बुलाया और उससे पूछा कि वह यह सब क्यों कर रही थी।

राजकुमारी बोली — "मैं यह आपको नहीं बता सकती और न ही मैं अपना दुख किसी दूसरे आदमी को बता सकती हूँ। क्योंकि मैंने खुले आसमान के नीचे इस बात की कसम खायी है कि मैं यह बात किसी को नहीं बताऊँगी। और अगर मैंने किसी को बताया तो मुझे मार दिया जायेगा।"

राजा उससे बार बार यह बताने की जिद करता रहा कि वह उसे यह बात बता दे पर वह उससे कुछ भी न कहलवा सका। आखिर वह बोला — "अगर तुम किसी आदमी को नहीं बता सकतीं तो यह लोहे की ऑगीठी रखी है तुम इसको बता दो।" यह कह कर राजा वहॉ से चला गया।

सो वह उस लोहे की अँगीठी के पास खिसक गयी और बड़े दुख से रोते हुए अपना दिल खोल कर बोली — "मैं यहाँ बैठी हुई हूँ, अकेली, मुझे दुनियाँ ने छोड़ दिया है।

हालाँकि मैं एक राजा की बेटी हूँ पर मेरी दासी ने मेरे शाही कपड़े ले लिये हैं और उसने मेरे दुलहे के साथ मेरी जगह भी ले ली है। अब मुझे एक बहुत ही मामूली बतख लड़की वाला काम करना पड़ता है। अगर मेरी माँ को यह पता चल जाये तो उसके दिल के तो दो टुकड़े हो जायेंगे।"

राजा बाहर अँगीठी के पाइप के पास खड़ा यह सब सुन रहा था। जब वह यह सब कह चुकी तो वह अन्दर आया और उसको अँगीठी के पास से आने के लिये कहा। उसने उसको शाही कपड़े पहनाये तो राजा ने देखा कि वह कितनी सुन्दर थी।

राजा ने अपने बेटे को बुलाया और उसको बताया कि उसके पास तो नकली राजकुमारी थी जो केवल एक दासी थी। असली राजकुमारी जो उसकी दुलहिन थी वह तो राजा के पास खड़ी थी जो उनकी बतख लड़की थी।

राजकुमार ने जब अपनी असली दुलहिन को देखा तो वह बहुत खुश हुआ। उसने तुरन्त ही एक बड़ी दावत का इन्तजाम किया जिसमें उसने अपने सारे रिश्तेदारों और दोस्तों को बुलाया।

खाने की मेज पर जहाँ राजकुमार बैठा वहाँ उसके एक तरफ राजकुमारी बैठी और दूसरी तरफ दासी बैठी।

उन लोगों ने दासी को धोखा दे कर राजकुमारी को इस तरह तैयार किया कि वह राजकुमारी को पहचान ही न सकी।

जब वे सब खा पी चुके और अच्छे मूड में थे तो राजा ने दासी से एक पहेली पूछी — "उसको क्या सजा मिलनी चाहिये जिसने अपने मालिक को इन हालात में धोखा दिया हो?"

और यह कह कर उसने सारा हाल बता दिया और फिर पूछा — "अब बताओ ऐसे आदमी को क्या सजा मिलनी चाहिये?"

नकली दुलहिन ने कहा — "उसकी तो यही सजा है कि उसको नंगा कर के एक ऐसे बैरल में रख देना चाहिये जिसमें चारों तरफ कीलें लगीं हों। उसमें दो सफेद घोड़े बॉध देने चाहिये जो उस बैरल को एक सड़क से दूसरी सड़क पर तब तक घसीटते रहें जब तक कि वह मर न जाये।"

राजा बोला — "तुम ही वह अपने मालिक को धोखा देने वाली हो। अच्छा हुआ तुमने अपनी सजा अपने आप ही सुना दी सो तुम्हारे साथ ऐसा ही बरताव किया जायेगा।"

सो उसके साथ ऐसा ही किया गया। इसके बाद राजकुमार की शादी राजकुमारी के साथ धूमधाम से कर दी गयी और दोनों ने बहुत सालों तक खुशी खुशी शान्ति से राज किया।

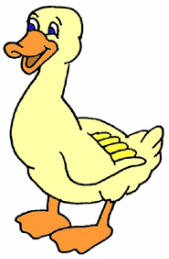

List of Tales of “Folktales of Germany”

1. The Aged Mother
2. Bearskin
3. Doctor Knowall
4. Death's Messengers
5. The Devil and His Grandmother
6. The Giant and the Tailor
7. The Old Sultan
8. The Peasant in Heaven
9. The Hut in the Forest
10. Repunzel
11. King's Son Who Feared Nothing
12. The Wise Servant
13. Lazy Harry
14. The Griffin
15. The Lazy Spinner
16. King Thrushbeard
17. The Golden Goose
18. The Peasant's Wise Daughter
19. The Devil With Three Golden Hairs
20. The Frog Prince
21. The Frog and the Princess
22. Why Beans Have a Split Side
23. The Porridge Pot
24. The Wishful Skin
25. The Goose Girl

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022